

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७४

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

महा-आख्यानक नैरेटोलॉजिकल समालोचना

LXXIV

विदेह • आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७४

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

महा-आख्यान, बहुकालिकता, कथावाचक आ बहुस्वरक
नैरेटोलॉजिकल साहित्यिक समालोचना

सम्पादकीय समीक्षा: आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड-७४

अध्ययनाधीन ग्रन्थ : कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]

मूल ग्रन्थक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

मूल ग्रन्थक प्रथम संस्करण : २०१९

सम्पादकीय आलोचना-संस्करण : विदेह, २०२६

सम्पादकीय समीक्षा: आशीष अनचिन्हार

विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड; अध्याय-साक्ष्य-आधारित अध्ययन

पाठाधार टिप्पणी : ई पोथी मूल उपन्यासक पुनर्मुद्रण नहि; स्वतंत्र सम्पादकीय समालोचना अछि। पाठाधारित दावे मूल उपन्यासक अध्याय-संख्या सँ मिलाओल जा सकैत अछि। बाह्य साहित्येतिहासक आकार-क्रमक दावा समस्त प्रकाशित मैथिली उपन्यासक स्वतन्त्र गणना नहि, उपलब्ध प्रकाशकीय सन्दर्भक आधार अछि।

विस्तृत अनुक्रम

प्रकाशकीय टिप्पणी : महा-उपन्यासक आकार आ साहित्यिक प्रश्न.....	5
अध्ययन-विधि : कथा, कथन, काल आ दृष्टि.....	6
एक : रूपनिर्माण — अठारह पर्व, सात काण्ड आ २१६ अध्याय.....	7
दू : प्रथम दृश्य — जीवित व्यक्तिक मृत्यु-सूचना.....	8
तीन : समापन — भातक दाना, अनुपस्थिति आ मुक्त भविष्य.....	9
चारि : कालक्रमक विस्फोट — प्राचीन समकाल आ भविष्यक विदेहपुर.....	10
पाँच : दृष्टिबिन्दु — देखब, जानब आ प्रमाणित करब.....	11
छह : अभिलेखक कथा आ कागदक भौतिकता.....	12
सात : स्त्रीवादी नैरेटोलॉजी — सरिता, नैरा, रुहानी, उर्मिला आ मैथिली.....	13
आठ : बहुभाषिक समाज आ '१५७'क आलोचनात्मक सीमा.....	14
नौ : प्रमाणमीमांसा — भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणि.....	15
दस : द्रौपदी, विकर्ण, कैकेयी, शबरी, हिडिम्बा — अन्तरपाठक प्रतिरोध.....	15
एगारह : जल, पोखरि, चूल्हा आ परिवेशकीय कथन.....	16
बारह : शोकक अविच्छिन्नता, नैराक मृत्यु आ अविश्वसनीय विजयोत्सव.....	17
तेरह : बालपाठ, पाठशाला आ अगिला कथावाचक.....	18
चौदह : उपन्यासक भाषा, दोहराईत भोर आ दृश्यात्मक गद्य.....	19
पन्द्रह : संस्थागत नैतिकता आ दायित्वक तर्क.....	20
सोरह : अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय.....	20
पर्ववार आलोचनात्मक पाठ : कथात्मक विस्तार आ रूपगत अन्तर.....	21
पर्व १ . आदि (अध्याय १-१२) : मृत्युपंजी सँ जल-नक्शा धरि.....	21
पर्व २ . सभा (अध्याय १३-२४) : प्रतिनिधित्वक अधिकार आ अपमान.....	22
पर्व ३ . वन (अध्याय २५-३६) : निर्वासनक नव अर्थ.....	23
पर्व ४ . विराट (अध्याय ३७-४८) : छद्मनाम नहि, श्रमक स्वनाम.....	24
पर्व ५ . उद्योग (अध्याय ४९-६०) : सन्धि जँ अनिश्चित हो.....	25
पर्व ६ . भीष्म (अध्याय ६१-७२) : प्रतिज्ञा, भंग सुरक्षा आ साक्षीक दूरी.....	26
पर्व ७ . द्रोण (अध्याय ७३-८४) : गुरुक सत्ता आ अनदेखल ज्ञान.....	27
पर्व ८ . कर्ण (अध्याय ८५-९६) : जनम, पालन आ नामक अधूर प्रमाण.....	28
पर्व ९ . शल्य (अध्याय ९७-१०८) : आपदासँ पहिने निष्ठाक पुनर्परीक्षा.....	28
पर्व १० . सौप्तिक (अध्याय १०९-१२०) : रात्रि, हिंसा आ उद्धारक सीमारेखा.....	29
पर्व ११ . स्त्री (अध्याय १२१-१३२) : शोकक देह आ बचल लोक.....	30

पर्व १२ · शान्ति (अध्याय १३३-१४४) : युद्धोत्तर प्रशासनक कथा बनेबाक जोखिम.....	31
पर्व १३ · अनुशासन (अध्याय १४५-१५६) : अधिकारक शर्त बनाम जीवित उपयोग.....	32
पर्व १४ · अश्वमेध (अध्याय १५७-१६८) : शासकक विजय सँ अभिलेखक यात्रा.....	33
पर्व १५ · आश्रमवासिक (अध्याय १६९-१८०) : वृद्धत्व, एकान्त आ अधिकार	33
पर्व १६ · मौसल (अध्याय १८१-१९२) : विजयक अवशेष आ नव मालिक.....	34
पर्व १७ · महाप्रस्थानिक (अध्याय १९३-२०४) : विरामक यात्रा आ घरवापसी	35
पर्व १८ · स्वर्गारोहण (अध्याय २०५-२१६) : मृत्यु-पार नहि, अगिला पीढ़ीक कक्षा.....	36
आठ समीपपाठ : शब्द, दृश्य आ कथनक निर्णय.....	37
पहिल समीपपाठ : 'मृतकक रसोइ' (१)क त्रिस्तरीय काल.....	37
दोसर समीपपाठ : 'अपन फोन अपन शर्त' (११)क डिजिटल दृष्टि.....	37
तेसर समीपपाठ : 'बाहरक पाठशाला' (३६)क ओसार.....	38
चारिम समीपपाठ : 'रान्हनिहारक नाम' (३७)क शब्द 'सेवा'.....	38
पाँचम समीपपाठ : महेशक मृत्यु (७०-७२) आ साक्षीक भरोसा.....	39
छठम समीपपाठ : 'सत्ताइसक मिलान' (९६)क रहस्य-विरोधी उद्घाटन.....	39
सातम समीपपाठ : दार्शनिक समापन (२१०-२१२).....	40
आठम समीपपाठ : 'नैराक खाली जगह' (२१४) सँ 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक' (२१६).....	40
सम्पादकीय परीक्षण-सूची : उपलब्धि आ सीमा.....	41
आधारग्रन्थ आ सैद्धान्तिक सन्दर्भ.....	42
परिशिष्ट : २१६ अध्यायक आरम्भ-अन्त साक्ष्य-पंजी.....	43

प्रकाशकीय टिप्पणी : महा-उपन्यासक आकार आ साहित्यिक प्रश्न

अपन प्रथम संस्करणक प्रकाशन-समय, २०१९ मे, गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लिखित 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक' [मैथिली कादम्बरी] केँ मैथिलीक सभसँ पैघ उपन्यास मानल जाइत छल। आब गजेन्द्र ठाकुरक 'गोहि सभक बीच जलसमाधि' केँ मैथिलीक सभसँ पैघ आ 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक' केँ दोसर सभसँ पैघ उपन्यासक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि। ई साहित्येतिहासक आकार-सम्बन्धी स्थिति लेखक-पक्षीय ग्रन्थसूची आ उपलब्ध सम्पादकीय विवरणपर आधारित अछि; समस्त मैथिली उपन्यासक स्वतन्त्र शब्द-संख्या-आधारित सर्वेक्षण एतय प्रस्तुत नहि अछि। मुदा एहि दावाक आलोचनात्मक अर्थ केवल कीर्तिमान नहि: प्रश्न ई अछि जे विशालता कथाकेँ कोन नव रूप, कोन नव अनुशासन आ कोन नव सीमा दैत अछि।

उपलब्ध मुद्रणयोग्य पाठ ६ × ९ इञ्च विन्यासमे लगभग १,९३२ पृष्ठक अछि। एकरा २१६ अध्यायमे बाँटल गेल अछि; अठारह महाभारत-पर्वमे प्रत्येक बारह अध्याय अछि, जखन रामायणक सात काण्डक यात्रा दोसरा स्तरपर एहि संरचनाक संग मिलैत अछि। कथा-पाठक पहिने महाकाव्य-दर्शनक सम्बन्ध-मानचित्र, पात्र-वंशक मानचित्र, मुख्य पात्र-निर्णय सूची आ १५७ व्यवसाय-समुदायक कथावृत्त भेटैत अछि। एहि परिपाठकेँ सजावट नहि बुझल जाए: ई पाठककेँ पहिनेहि कहैत अछि जे एहि उपन्यासमे नाम, श्रेणी, प्रमाण, समाज आ इतिहासक अन्तर स्पष्ट करब आवश्यक होयत।

बड़ आकार अपन आपमे साहित्यिक सिद्धि नहि। दू हजारक समीप पृष्ठक उपन्यासमे पुनरुक्ति, समान लय, दार्शनिक व्याख्याक अतिरेक, पात्रक अत्यधिक संख्या आ घटनाक प्रशासनिक विवरण कथात्मक तात्कालिकताकेँ दबा सकैत अछि। एहि कृति पर सार्थक समालोचनाक प्रथम कर्तव्य ओकर आकारक प्रशंसा नहि, बल्कि ई परीक्षण अछि जे किन अध्यायमे विस्तार अनुभव बनैत अछि, किन अध्यायमे विस्तार तर्कक प्रसार होइत अछि, आ कतय विस्तार सम्पादकीय संक्षेपणक माँग करैत अछि। एतय प्रशंसा आ आपत्ति दुनू उपन्यासक निर्दिष्ट अध्याय आ कथन-प्रक्रियासँ जोड़ि राखल गेल अछि।

अध्ययन-विधि : कथा, कथन, काल आ दृष्टि

नैरेटोलॉजी (Narratology) कथाक केवल घटनासूची तैयार करबाक पद्धति नहि। ई 'की घटल' आ 'कोना कहल गेल'क बीच अन्तर परखैत अछि। जे रार जनेतक *order, duration, frequency* कथाक समय-विन्यास बुझबाक औजार अछि: घटनाक वास्तविक वा कल्पित क्रम आ कहबाक क्रम एक अछि की नहि; एक दीर्घ समय किछु पाँतिमे समा जाइत अछि अथवा एक छोट क्षण अनेक पृष्ठ लैत अछि; एकटा घटना कतेक बेर, केकर दृष्टिसँ, केहन भिन्न शब्दमे कहल जाइत अछि। 'फोकलाइजेशन' (focalization)क प्रश्न पूछैत अछि—घटना पर दृष्टि केकर अछि, ओकरा की ज्ञान भेटल अछि, की नहि भेटल अछि, आ कथावाचक ओकर सीमाकें मानैत अछि की नहि।

मिखाइल बाख्तिनक बहुस्वरीता आ भाषिक बहुलता, सीमोर चैटमैनक कथा-विमर्श भेद, पॉल रिकरक स्मृति आ काल, तथा स्त्रीवादी नैरेटोलॉजीक प्रतिनिधित्वसम्बन्धी प्रश्न एहि पाठपर लागू भऽ सकैत अछि; मुदा सिद्धान्तकें कृतिपर थोपब उचित नहि। सभ अध्याय 'बहुस्वरी' कहला मात्र बहुस्वरी नहि बनि जाइत अछि। जँ निर्णायक व्याख्या अन्ततः सदिखन एके सर्वज्ञ कथावाचक दैत अछि तँ पात्रसभक उपस्थितिमात्र सँ स्वतंत्र स्वरलोक नहि बनैत। तँ एहिमे संवादक स्वतन्त्रता, गवाहीक शर्त, निजी विवरणक अनुमति, भाषिक भिन्नता आ निष्कर्ष देबाक अधिकारक जाँच आवश्यक अछि।

एहि सम्पादकीय अध्ययनक प्राथमिक स्रोत संलग्न 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक'क २१६ अध्यायक पूर्ण उपलब्ध पाठ अछि। जहाँ मूल कथा अपन प्राचीन कालधारा, आधुनिक विदेहपुरक भविष्यकाल, दार्शनिक पाठशाला वा लोक-आधारित उदाहरणक बीच जाएत अछि, ओतय समीक्षकक दायित्व काल-स्तरक भेद बचाएब अछि। रामायणक वा महाभारतक प्राचीन पात्रक कथन आधुनिक पात्रक जीवनक ऐतिहासिक प्रमाण नहि; कथात्मक पुनर्सर्जन अछि। तीन दार्शनिक ग्रन्थक तर्क उपन्यासमे कथा-सामग्री बनैत अछि, मूल शास्त्रीय पाठक अक्षरशः पुनर्मुद्रण नहि।

पठनक तकनीकी सीमासभो स्पष्ट रहबाक चाही। अध्यायानुसार घटनासूचक कागद, नकल, चित्र, छिन्न वीडियो, बयान आ निजी पत्र बहुत बेर आवैत अछि; जँ उपन्यास स्वयं 'अपर्याप्त प्रमाण' कहैत अछि तँ समीक्षा ओकरा 'अन्तिम सत्य' मे नहि बदलत। ककरो हत्या, झूठ पंजी, परिवारक सम्बन्ध अथवा निर्णयक चर्चा करैत मूल कथामे जतेक निश्चित अछि, ओतबे निश्चित मानल जाएत। ई कृतिक अपन प्रमाणनीतिक संग आलोचनाक नैतिक सामञ्जस्य अछि।

एक : रूपनिर्माण — अठारह पर्व, सात काण्ड आ २१६ अध्याय

अठारह पर्वमे बारह-बाहर अध्यायक बराबर समूह कथा-विन्यासकें विशिष्ट गणितीय शिल्प दैत अछि। *आदि*मे नाम, मरण-सूचना आ घरेलू कार्य; *सभा*मे प्रतिनिधित्वक संकट; *वन* आ *विराट*मे शिक्षा, घुमन्तु जीवन, अस्थायी पेशा; *उद्योग*मे सन्धि; *भीष्म*, *द्रोण*, *कर्ण*मे वचन, विद्या आ जन्मक बहस; *शल्य*, *सौप्तिक*, *स्त्री*मे विपत्ति, हिंसा आ शोक; *शान्ति* सँ *स्वर्गारोहण* धरि उत्तरदायित्व, नई संस्थागत व्यवस्था आ भविष्यक कथा। रामायणक सात काण्ड एहि अठारह खण्डपर एकदम यान्त्रिक एक-एक अनुपातमे नहि बैठैत: *सुन्दरकाण्ड* तीन पर्व धरि फैलैत अछि, *उत्तरकाण्ड* सात अन्तिम पर्वक व्यापक पृष्ठभूमि बनैत अछि। एहि असमान जोड़मे उपन्यासक प्राथमिकता देखाइत अछि—पारम्परिक नामक संख्या बनौने राखब, मुदा समकालीन संकटानुसार अवधि आ विस्तार बदलब।

साहित्यिक प्रश्न ई अछि जे महाकाव्यक नाम कथानकक पूर्वनिर्धारित फैसला बनैत अछि की आलोचनात्मक स्मृति। 'द्रोणक देय'क अध्यायमे गुरुक सत्ता, 'एकलव्यक बाद'मे ज्ञानपर प्रवेशक प्रश्न, 'गान्धारीक प्रश्न'मे युद्धोत्तर पीड़ा, 'शम्बूकक पाठ'मे पाठाधिकार, आ 'लव कुशक पाठ'मे अगिला पीढ़ीक पुनर्कथन; एहि सभ उदाहरणमे पुरान कथा एकटा जीवित विवादक रूप ग्रहण करैत अछि। तथापि पर्व-नामक महानता सभ अध्यायक समान कलात्मक सफलता सुनिश्चित नहि करैत। किछु प्रकरण एतेक प्रशासनिक निश्चयपत्रक भाषा ग्रहण करैत अछि जे उत्सव आ महाकाव्यक

आवेग पछुआइ जाइत अछि। एहि द्वन्द्वकें दोष मात्र नहि, उपन्यासक चुनेल जोखिम मानव अधिक न्यायोचित अछि।

दू : प्रथम दृश्य — जीवित व्यक्तिक मृत्यु-सूचना

अध्याय १ 'मृतकक रसोइ'क पहिल दृश्य समूच उपन्यासक मूल व्याकरण अछि। सरिता अपन मृत पतिक औषधिपचीं खोजैत छथि; पति सत्रह वर्ष पहिने मरि गेलाह, मुदा पचीं काल्हिक अछि; फोनपर सूचना आबैत अछि जे सरिता स्वयं मृत छथि। तीनटा काल-सम्बन्ध एकहि घरेलू क्षणमे फँसि जाइत अछि—पुरान वास्तविक मृत्यु, नव सरकारी कागद, आ उपस्थित जीवित देह। जनेतक 'क्रम'क भाषामे ई कथा पाठकक सम्मुख पहिने परिणामक असंगति रखैत अछि; कारणक खोज पछाडि-पछाडि खुलैत अछि। पाठक प्रश्नक कारणें पढ़ैत अछि, लेखकक उद्घोषणाक कारणें नहि।

रसोइक दृश्य उल्लेखनीय अछि कारण चूल्हा संकटकें टारैत नहि, तकर ठोस प्रतिपक्ष बनैत अछि। भात उफनैत अछि, सरिता आँच घटबैत छथि; सरकारी सन्देश अधूर रहैत अछि, घरेलू श्रम पूरा करब पड़ैत अछि। एहि छोट क्रियामे नायिकाक विश्वसनीयता जन्मैत अछि। अध्याय अन्तमे आवेदन प्राप्त भेलाक सूचना भेटैत अछि, जीवनक औपचारिक पुष्टि नहि। ई *narrative delay* पाठककें प्रतीक्षा करबैत अछि; मुदा प्रतीक्षा केवल रहस्यक नहि, नागरिक अधिकारक अछि। जीवित श्रमिककें 'मृत' कहनिहार पंजीक विरुद्ध रसोइए कथात्मक साक्षी बनैत अछि।

अध्याय २ 'सत्ताइस नाम' एहि संरचनाकें 'संख्या बनाम व्यक्ति'क संकटमे बदलैत अछि। सत्ताइस पाँति कहल जाइत अछि मुदा छब्बीस नाम स्पष्ट अछि: छूटल एक नामकें अपराधक प्रमाण मानि लेब असावधानी होएत। ई नकारात्मक ज्ञान—हमरा एखन नहि ज्ञात—उपन्यासक श्रेष्ठ नैतिक-आख्यानगत उपलब्धिमे अछि। तथापि आरम्भक प्रत्येक वस्तु (कागद, डिब्बा, पन्ना, लिफाफा)क क्रमिक अनुष्ठान अगिला बहुत अध्यायमे सेहो दोहरायल जाइत अछि; एहि पुनरावृत्तिक कारण आरम्भक ताजगी पछिला कालमे केही ठाम क्रमबद्ध कार्यविधि बनि जाएवाक जोखिम उठबैत अछि।

तीन : समापन — भातक दाना, अनुपस्थिति आ मुक्त भविष्य

अध्याय २१६ 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक' अध्याय १ केँ रेखीय प्रतिलिपि नहि, बदलल पुनरावृत्ति बनाबैत अछि। सरिता फेर चूल्हा सुलगबैत छथि, चाउरक दाना अलग करैत छथि, रसोइक कार्य समय माँगैत अछि। मुदा एखन नैराक अनुपस्थिति स्थायी अछि, अभिलेख अनेक संरक्षकमे बाँटल जा चुकल अछि, पाठशालाक बालिका अलमारीक चाभीक व्यवस्था बुझय चाहैत अछि। पहिल अध्यायमे 'हम जीवित छी'क प्रमाण माँग छल; अन्तिम अध्यायमे 'काल्हि दुआर खुलत की'क सामूहिक प्रश्न अछि। एहि बदलबकें वृत्ताकार कथानकक नैतिक प्रगति कहल जा सकैत अछि, पूर्ण सुखान्त नहि।

अध्याय २१४ 'नैराक खाली जगह' समापनक सरल विजयोत्सवकेँ रोकैत अछि। नैरा प्रति भिन्न लोकक स्मृतिमे भिन्न रूपें जीवित छथि; हुनकर निजी कापी, फोन, निजी पत्र पर सार्वजनिक स्वामित्व बनि नहि जाइत अछि। आयोजनक 'सम्मान' आ शोकक वास्तविक अपरिवर्तनीयता बीच दूरी अछि। अध्याय २१५ 'वितरित अभिलेख'मे कोनो एक हाथमे सब चाभी नहि दैत; मुदा बकाया मजदूरी, अपूर्ण जाँच आ निजी दस्तावेजक भविष्य प्रश्न रूपें बचि जाइत अछि। ई *anti-closure*—सम्पूर्ण समाप्तिक निषेध—उपन्यासक अन्तिम संरचनात्मक निर्णय अछि।

एकरा दार्शनिक रूपसँ 'न्याय बहाल भऽ गेल'क आख्यान नहि कहबाक चाही। न्याय एक सतत संस्थागत श्रम बनि टाढ़ अछि; मृतक फेर जीबि नहि उठत; मात्र नाम लिखलासँ देय नहि चुकत। अन्तिम भातमे बचल दाना आध्यात्मिक उद्धारक प्रतीक बनेबाक बदला जीवनक अवशिष्ट सम्बन्धक सूचक अछि। उपन्यासक सम्पूर्ण आकारकेँ अर्थवान करबाक ई एक सघन युक्ति अछि: महाकाव्यक स्वर्गारोहणक बादो बच्चाक पाठशाला आ रसोइक व्यवहार बन्द नहि होइत।

चारि : कालक्रमक विस्फोट — प्राचीन समकाल आ भविष्यक विदेहपुर

उपन्यासक कथा-समय एकहि घड़ीपर नहि चलैत। प्राचीन अयोध्या, मिथिला, हस्तिनापुर, लंका आ द्वारकाक रचनात्मक दृश्यक संग भविष्यक विदेहपुरमे सन २०४०, २०४१ आ २०४२क स्पष्ट चिन्ह भेटैत अछि। आरम्भमे ‘आषाढक भोर’ सन ऋतु-सूचक समय लेखकीय आधार बनैत अछि; पछिला पर्वमे दिनाङ्क अधिक निर्दिष्ट होइत अछि। पाठक कालक स्थिरता लगातार अनुमानसँ बनबैत छथि: एतय एक कालधारा बीचमे ‘फ्लैशबैक’ मात्र नहि, समानान्तर विमर्शक पृथक स्तर अछि। महाकाव्यक पुनर्कथन वर्तमानक सत्यापनपत्र नहि; ओ वर्तमानक प्रश्नक दार्शनिक प्रतिध्वनि अछि।

अध्याय १५-१८क द्रौपदी, विकर्ण, कैकेयी आ उर्मिलाक लगातार प्राचीन दृश्य आधुनिक सार्वजनिक बैठकक बीच पाठकक विस्थापित करैत अछि। ई संक्रमण *intercalation*—कथाधाराक बीच आरोपित स्वतन्त्र कथा—क उपयोगी उदाहरण अछि। मुदा प्रत्येक प्राचीन दृश्यक बाद आधुनिक प्रसंगमे ओकर नैतिक प्रतिध्वनि तुरन्त स्पष्ट होएत तँ अर्थ-निर्माणक पाठकीय स्वतन्त्रता घटि सकैत अछि। जखन परिवर्तित समय पाठकक स्वयं साम्य आ असाम्य खोजबाक अवसर दैत अछि, तखन ई विधि अधिक कलात्मक बनैत अछि।

कथावाचनक गति सेहो एकसमान नहि। अध्याय ७०-७२ महेशक परिवारक घातक जोखिम, मृत्यु आ बयानक सूक्ष्म संशोधनपर केन्द्रित भऽ कालक गति धीमा करैत अछि; अध्याय ९७-१२०मे आपदाक काल घटनासंघनता बढ़बैत अछि; १९३-२१६मे शेष समय संस्थागत निर्णय, स्मृति आ भविष्यपर बँटल अछि। घटना-सूची चाही तँ ई विस्तार ‘कम घटना, बेसी अभिलेख’ लागय; नैरेटोलॉजीक हिसाबसँ ई प्रश्नक परिणामक दीर्घ अवधि अछि। समस्या एहि बातक नहि जे प्रत्येक पृष्ठमे रोमांच किएक नहि; समस्या ई जे मौन, अंतराल आ प्रतिवेदनक क्रम पाठकक ध्यानक हर प्रकरणमे समान रूपसँ सम्हारि पवैत अछि की नहि।

पाँच : दृष्टिबिन्दु — देखब, जानब आ प्रमाणित करब

उपन्यास अपना भीतर दहकैत *epistemic narratology* रचैत अछि। के देखलक? के केवल सुनलक? कागद पर के लिखलक? फोटोमे कोन भाग नहि देखाइत अछि? अध्याय ११मे संकेत अपन फोनक मूल तस्वीर अपन पास रखबाक, जाँच लेल सीमित अंश देखएबाक आ अनुमतिबिना सार्वजनिक नहि करबाक निर्णय करैत अछि। एहि ठाम 'कथनक अधिकार' डिजिटल युगक व्यावहारिक अधिकार बनैत अछि। कैमरा सर्वज्ञ दृष्टि नहि: ओकर कोना, धुँधलापन, छूटल चेहरा आ काटल प्रसंग कथाक ज्ञान-सीमा निर्धारित करैत अछि।

अध्याय ७२ 'संजयक दूरी' विशेष ध्यान माँगैत अछि। कबीर दू आकृति देखबाक आ एक प्रहार देखबाक बीच अन्तर स्पष्ट करैत छथि। दस्तावेजमे 'दू आक्रमणकारी' लिखल कथनकें ओ सुधरबैत छथि; रंगक अविश्वसनीय स्मृतियो स्वीकृत करैत छथि। एहि दृश्यमे कथावाचकक समर्थित साक्षी अपन ज्ञान घटाबैत अछि, बढ़बैत नहि। एतय कमी बताबब विश्वसनीयताक शर्त बनैत अछि। आधुनिक कथा मे जहाँ सर्वज्ञ कथाकार अपराधक पूरा राज पाठककें एकाएक देबैत अछि, तकर विपरीत ई उपन्यास ज्ञानक वैध सीमा कें रोचक साहित्यिक क्रिया बनाबैत अछि।

किएक तथापि कथावाचकक बाहरी स्वरपर प्रश्न जरूरी अछि? अनेक अध्यायक समाप्तिमे कथावाचक नैतिक निर्णयक सार कहैत अछि—'अभी प्रश्न शेष', 'दोष अलग', 'अधिकार अलग'। ई स्थायी सावधानी मूल्यवान, मुदा पात्रसभक अस्पष्ट मनोभूमि कभी-कभी टिप्पणीक अधीन पडैत अछि। सशक्त दृश्यमे कियो अपन फाइल काटैत अछि आ पाठक स्वयं विश्वसनीयता बुझैत अछि; कमजोर क्षणमे दस्ता-विभाजनक अर्थ पाठकें सेहो समझा देल जाइत अछि। एहि पुस्तकक रूपगत तनाव ई स्पष्टता बनाम बहुअर्थिता अछि।

छह : अभिलेखक कथा आ कागदक भौतिकता

ई उपन्यासक असंख्य कागद केवल 'आधुनिक परिवेश'क वस्तु नहि। कागद गीला पड़ैत अछि, मोड़ल जाइत अछि, ओकर कोना मुड़ैत अछि, फोटोमे एक रेखा स्पष्ट, दोसर धुंधला होइत अछि। रसीद, नामपंजी, नकल, मृत्युपत्र, साक्षीबयान, विद्यालय-बही, ध्वनि-यन्त्र, फोन आ छापाखाना एतय कथाक अगिला दृश्य खोलबाक माध्यम होइत अछि। *Documentary fiction*क सार्थक रूप तखन बनैत अछि जखन दस्तावेजक निर्माण, संशोधन, वितरण आ उपयोग कथात्मक विवाद पैदा करैत अछि। अध्याय १३मे सरिताक नामक सार्वजनिक उच्चारण आ वास्तविक सरकारी सुधार अलग अछि; एहि अन्तरपर कथा चलैत अछि।

अध्याय १६मे 'सत्ताइस'क मिलान कोनो सर्वशक्तिमान रहस्योद्घाटन नहि बनैत। नामक सार जाँचल जाइत अछि मुदा हत्या-जाँच, बच्चाक खोज आ आर्थिक आरोप अलग रहैत अछि। अध्याय १९मे 'मृतकक फोन' आ २०० 'शब्दक अन्तिम जाँच'मे सन्देश, निजी स्मृति आ प्रमाणक वर्गीकरण फेर विषय बनैत अछि। अध्याय २१५मे अभिलेखक प्रतिलिपि अनेक हाथक पास राखल जाइत अछि। एहि क्रममे उपन्यास रहस्यक 'एक गुप्त फाइल भेटल, सब स्पष्ट भऽ गेल' वाला रोमांच अस्वीकार करैत अछि; ओ सार्वजनिक ज्ञानक शासन-व्यवस्था स्वयं कथा बनबैत अछि।

ई निर्विवाद कलात्मक उपलब्धि नहि कहब। जखन प्रत्येक विचारक उत्तर अतिरिक्त सूची, पृथक फाइल, दू प्रति, तीन खाना अथवा संशोधित आवेदन बनैत अछि, पाठकक अनुभूतिक बदला कार्यविधिक पुनरुक्ति भेटि सकैत अछि। पात्रक मनोवैज्ञानिक चुप्पी आ अघोषित इच्छा कतहु अधिक स्पन्दित होइत, जँ अभिलेखक भाषा सब सम्बन्धक अन्तिम भाषा नहि बनित। तथापि उपन्यासक प्रमुख मौलिकता एहि जोखिममे अछि: दफ्तरक नीरस प्रशासनिक वस्तुकें नैतिक दृष्टान्त नहि, वास्तविक कथानक-यन्त्र बनाब।

सात : स्त्रीवादी नैरेटोलॉजी — सरिता, नैरा, रुहानी, उर्मिला आ मैथिली

सामाजिक बहुलताक बीच स्त्री पात्रसभकेँ केवल पीड़ा-सूचीक रूपमे पढ़ब उपन्यासक निर्माणक विरुद्ध होएत। सरिता अपने 'मृत' कहल जएबाक विरोध करैत छथि; हुनकर रसोइ निजी कर्तव्यक साथ राजनीतिक उपस्थिति बनैत अछि। नैरा दस्तावेज प्रकाशित करबाक गति आ साक्षीक सुरक्षाक द्वन्द्वमे अपन भूल सुधारैत छथि। रुहानी आश्रय सुरक्षित रखबाक संग आश्रित लोकक स्वनिर्णयपर अपन नियन्त्रण घटएबाक कठिन प्रयास करैत छथि। उर्मिला धोएल कपड़ा, अस्पतालक पंजी आ मजदूरीक देयकेँ अदृश्य श्रमक मुद्दा बनबैत छथि। मैथिली विद्वत्ता आ सहलेखनक श्रेयहरणक आत्म-परीक्षण करैत छथि। ई पात्रसभ एक 'महिला प्रश्न'क अलग-अलग उत्तर नहि, विभिन्न संस्थागत अनुभवक कथावाहक छथि।

अध्याय ३७मे रखसानाक प्रश्न—अनाज हाथे-सँ-हाथे भात नहि बनैत — 'नारीक सेवा'क महिमामण्डनकेँ आर्थिक हिसाबमे बदलैत अछि। श्रमक समय, पारिश्रमिक, स्वास्थ्य आ चुनाव कथा-रूपक केन्द्र बनैत अछि। अध्याय १४८ 'पद्माक फीस'मे संकेत-सम्प्रेषण करनिहार स्त्रीक श्रम सार्वजनिक सुविधाक नामपर मुफ्त मानल नहि जाइत। अध्याय २१३ 'मैथिलीक अपना वाणी'मे प्रकाशनक पहिल पन्नापर श्रेयक संग दोषक स्वीकृति लिखल जाएत अछि। ई रूप पुरान महाकाव्यक मौन राखल स्त्री-साक्षीकेँ नव प्रकारक सार्वजनिक आवाज दैत अछि।

लेकिन एक कठोर प्रश्न शेष अछि। की सब स्त्री पात्र अपना भीतर विरोधाभासी, अविवेच्य इच्छा रखने स्वतन्त्र कथा-जीवन पबैत छथि, कि प्रत्येककेँ एक सामाजिक सुधारक परियोजनाक प्रतिनिधि बना देल जाइत अछि? उपन्यासक गहिर क्षण ओ छथि जखन नैरा निर्णायक रूपेँ 'सही' नहि ठहरैत, सरिता शोककेँ लेखनक सामग्री बनएबासँ मना करैत, आ रुहानी अपन पूर्व नियंत्रणक दोष परत-दर-परत बुझैत छथि। पात्रक असफलता स्वीकारब एकर स्वतंत्रताको सिद्ध करैत अछि।

आठ : बहुभाषिक समाज आ '१५७'क आलोचनात्मक सीमा

१५७ व्यवसाय-समुदायक पंजी उपन्यासक महत्वाकांक्षाक स्पष्ट घोषणा अछि। बरही, डोम, कुम्हार, मलाह, ताँती, जोलहा, धोबि, रंगरेज, धुनिया, कसेरा, सोनार, लोहार, घुमन्तु परिवार, कामगार, बुनकर, गीत गाबनिहार आ प्रशासनिक पेशासँ जुड़ल पात्रक माध्यमसँ मिथिलाक विस्तृत श्रम-समाज उपस्थित कएल गेल अछि। कथा अपने आगू स्पष्टीकरण दैत अछि जे समुदाय वा व्यवसायसँ पात्रक स्वभाव निश्चित नहि होइत आ सामाजिक वृत्त रक्तसम्बन्धक प्रमाण नहि। ई निर्देश समाजशास्त्रीय रूढ़िक विरुद्ध एक जरूरी सावधानी अछि।

बास्तिनक *heteroglossia* मे बहु नामक अर्थ केवल विविध समुदाय उपस्थित करब नहि; अलग सामाजिक बोलनिहारकें अपन लक्ष्य, तर्क, विनोद, चुप्पी, हित आ शब्दक स्वायत्त शैली देब अछि। अध्याय ३७मे रुखसानाक कामक समय, अध्याय ४१मे ललितक हस्ताक्षर, ४४मे लोहारक औजार, ४५मे यूसुफक खेप, ४७मे नाविकक नाप—ई उदाहरण पेशाकें दृश्य-ज्ञान आ निर्णयक आधार बनबैत अछि। मुदा हरेक पेशाक विशिष्ट शब्दसंसार समान विस्तार पबैत अछि की नहि, ई प्रश्न बचैत अछि। विस्तृत पंजी एक महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व-प्रयास अछि, पूर्ण सामाजिक समावेशनक स्वतः प्रमाण नहि।

उपन्यासक एक व्यावहारिक उपलब्धि ई जे श्रमकें मंचक पीछे नहि राखि निर्णयक गवाही बनबैत अछि। नावक सुरक्षित क्षमता जे केवट बुझैत छथि, ओकरा केवल कार्यालयी प्रतिवेदनसँ नकारल नहि जा सकैत। रुखसानाक रसोइक हिसाब अनाज-दानक नामसँ समाप्त नहि होइत। परंतु यदि समुदायसँ जुड़ल पात्र केवल 'अपन पेशाक समस्याक' एक अध्यायमे आबि लुप्त होइत, तँ ओ पूर्ण चरित्रक बदला प्रतिकात्मक प्रतिनिधि रहि जाएत। एहिलेल पंजीक विस्तार आ वास्तविक कथा-समयक वितरणक अन्तर जाँचब आवश्यक अछि।

नौ : प्रमाणमीमांसा — भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि आ तत्त्वचिन्तामणि

भामतीक अध्यास, चतुःसूत्री आ श्रमक सहलेखन; उदयनक *न्यायकुसुमाञ्जलि*क पाँच स्तबक आ पूर्वपक्षक सम्मान; गङ्गेशक *तत्त्वचिन्तामणि*क प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्दक प्रमाण-भेद—ई तीनों परम्परा कथाक तर्कशैली बनेबाक प्रयोग अछि। अध्याय ३२ 'अथातो ककर'मे जतन अपन नाम लिखैत सीखैत अछि आ मृणाल दार्शनिक दृष्टान्तक सीमापर प्रश्न करैत छथि; ई दृश्य 'ककरा जिज्ञासाक अधिकार?'क आधुनिक सामाजिक प्रश्न आ ब्रह्मजिज्ञासाक प्राचीन आधारक बीच संवाद बनबैत अछि। वस्तुक नमीसँ अक्षर बिगड़ब आ रस्सीकेँ सर्प बुझब एके प्रकारक गलती नहि, ई प्रश्न मूल उपमानक सूक्ष्म भेद रखैत अछि।

अध्याय २१० 'भामतीक चारिम सूत्र'मे 'तत्तु समन्वयात्'क सहारे सहमति आ असहमतिमे भेद परखल जाइत अछि। पंजीमे मृत श्रमिकक नाम स्मारकपर लिखब ओकर बकाया दाम चुकाएब नहि। अध्याय २११मे उदयनक पक्षक संग प्रतिपक्षक पन्ना बचब, प्रतिकूल पक्षक नकल करनिहारक श्रमक पारिश्रमिक गनब, विचारक ईमानदारीक शर्त अछि। अध्याय २१२मे गङ्गेशक कक्षा पूछैत अछि—उदाहरण ककर जीवनसँ चुनल जाए? एतय दर्शन शब्द-ज्ञानसँ हटि ज्ञान-निर्माणक सामाजिक श्रमपर लौटैत अछि।

कठिन आपत्ति सेहो अछि: तीन शास्त्रीय परम्पराक अपने दर्शनगत विवाद अत्यन्त गहिर अछि; आधुनिक न्यायिक प्रमाणक उदाहरणक संग ओकर सरलीकृत अनुरूपता बनब सहज अछि। उपन्यास जखन मूल तर्क आ आधुनिक अन्वयक अन्तर राखैत अछि, तखन दार्शनिक पुनर्सर्जन सफल अछि। जखन प्रत्येक शास्त्रीय विवादक निष्कर्ष 'दोष निःशर्त सिद्ध नहि' सन परिचित पद्धतिपर लौटैत अछि, तखन विविध दर्शनक भिन्न तकनीकी शर्त धुँधला सकैत अछि। एहि सम्भावनापर समीक्षा सजग रहबाक चाही।

दस : द्रौपदी, विकर्ण, कैकेयी, शबरी, हिडिम्बा — अन्तरपाठक प्रतिरोध

अध्याय १५ 'द्रौपदीक प्रश्न'मे पासाक छोट आवाजक बीच सार्वजनिक सभा, अधिकार आ मौनक बड़ी संरचना उभरैत अछि। महाकाव्यक दृश्य

प्राचीन रूपमे रहि सामाजिक संस्थाक आधुनिक आलोचना करत अछि: जकर अपन स्वतन्त्रतापर संकट अछि, ओ दोसराक स्वतंत्रता कोना दाँव पर राखि सकैत अछि? अध्याय १६ 'विकर्णक बादक मौन' मौनकैँ निष्पक्षता नहि मानैत। अध्याय १७मे कैकेयी आ १८मे उर्मिलाक घरक श्रम आ वचनक कीमतक पुनर्स्मरण सब पात्रकैँ एकही नैतिक कालरेखापर नहि रखैत।

वनक अध्याय २७मे शबरी, २८मे हिडिम्बा, ३०मे अहल्या आ ३१मे एकलव्यक शिक्षाक कथागत पुनर्रचना सेहो बहुमुखी अछि। पुरान कथा 'नैतिक उदाहरण' बनबासँ अधिक रचनात्मक तखन बनैत अछि जखन एतय सम्मति, निवास, जातीय प्रवेश, गवाही अथवा श्रमक भिन्न ऐतिहासिक परिस्थिति खुलैत अछि। उदाहरणार्थ शबरीक घर एतय केवल भक्तिक पुरस्कार नहि, आश्रयक नियमक भौतिक स्थल बनैत अछि। मुदा आधुनिक अधिकार-भाषा प्राचीन कथा-अन्तरालमे पूरी सहजतासँ बैठैत अछि की आधुनिक पाठकक व्याख्यात्मक आरोपण भऽ जाइत अछि—ई सन्देह साहित्यिक रूपक हिस्सा अछि।

अन्तिम पर्वमे २०९ 'लव कुशक पाठ' आरम्भिक महाकाव्यक कथावाचन-अधिकार अगिला पीढ़ीकैँ देइत अछि। अठारह पर्वक योजनामे ई एक बड़ निर्णय अछि: कथा स्वयं ककर आवाजमे बाँचत? पूर्वजक कथामात्र नहि, सुनिहार बच्चाक संशयक अधिकार सेहो अछी। एहि ठाम 'अन्तरपाठ' पाठककैँ उद्घरण पहिचानबाक खेल नहि, पुरान पाठक सामाजिक पुनर्विचारक अभ्यास बनबैत अछि।

एगारह : जल, पोखरि, चूल्हा आ परिवेशकीय कथन

नदी, पोखरि, फाटक, बाँध, निकासी, नाव आ माटि एहि उपन्यासमे निष्क्रिय पृष्ठभूमि नहि। जलस्तर गवाहीक विश्वसनीयता बदलबैत अछि: काल्हि सुरक्षित कहल बाट आइ असुरक्षित भऽ सकैत अछि। अध्याय ४७ 'फाटकक माप', ५८ 'कारणक जाल', ६० 'पहिल सन्धि टूटल', १०८ 'जलस्तरक बाहर', १५३ 'नदीक माप' आ २१५ 'वितरित अभिलेख' पर्यावरणक भौतिक परिवर्तनकैँ कथाक निर्णयक संग जोड़ैत अछि। ई *ecocritical narratology*क उपयोगी उदाहरण अछि, कारण नदी केवल

‘माँ’क रूपक बनि नहि रहैत; ओकर धार, माप, मौसम आ अस्थायी निर्माण वास्तविक कारण-श्रृंखला बनैत अछि।

जल-सम्बन्धी कथा परस्पर विरोधी हितसभकेँ सम्मान दैत अछि। एक टोला सुरक्षित करबाक उपाय दोसर टोलाक घर डुबा सकैत अछि; गोठक पशु हटाएब सम्भव, मुदा पशुपालकक निवास-अधिकार हटाओल नहि जा सकैत; नावक क्षमता घोषित करबाक पहिने वास्तविक नाप चाही। जलक अध्ययनमे उपन्यासक कारण-सम्बन्ध आ दायित्व-विभाजन विशेष सघन अछि। ताहि कारण आपदाक पूर्वाध मे ‘थ्रिलर’क जल्दबाजी नाकाम होइत अछि: खतरा उपस्थित अछि, मुदा लेखक अपूर्ण आँकड़ा देखाकऽ बनावटी निश्चितता पर रोक लगबैत अछि।

तथापि बारम्बार नाप, बाँस, खूँटा, लाल रेखा, रस्सी, रसीदक उल्लेख भौतिकता दैत-दैत एकरूप शैली सेहो बना सकैत अछि। जलक ध्वनि, गन्ध, मानवीय भय, मौसमक अनपेक्षित अस्थिरता जब मात्र तकनीकी सूचीसँ अधिक स्थान पवैत अछि, तखन वर्णन जीवन्त बनैत अछि। लेखकक पर्यावरणीय दृष्टिक सर्वोत्तम क्षण ओ छथि जतय एक छोटी कृति—मापवला बाँस फेर गाड़ब—पूरा समुदायक निर्णय बदलि दैत अछि।

बारह : शोकक अविच्छिन्नता, नैराक मृत्यु आ अविश्वसनीय विजयोत्सव

महा-उपन्यासक केन्द्रक एक महत्वपूर्ण प्रश्न ई अछि जे साँच आ न्यायक खोज मरण-हानिक बराबरी कऽ सकैत अछि की नहि। महेशक मृत्यु (७१), स्त्री-पर्वक शोक (१२१-१३२), नैराक पछिला खाली जगह (२१४) आ मृतकक निजी वस्तुसभक भविष्य एक समान विषय नहि: महेशक हत्याक तथ्यनिष्ठ जाँच, नैराक अपरिवर्तनीय अनुपस्थिति आ अन्य लोकक सामुदायिक क्षतिक अनुभवक भिन्न कथात्मक तर्क अछि। पात्रक जीवनकेँ ‘उद्देश्यपूर्ण बलिदान’क झटपट अर्थ देब कृतिक मुख्य नैतिक सावधानीकेँ कमजोर करत।

अध्याय २१४ खास एहिलेल उल्लेखनीय अछि जे स्मारक-भाषा पर प्रश्न उठैत अछि। जीवित लोक मृत व्यक्तिक दोष, विरोध, असहमति आ निजी

सम्बन्धक अलग स्मृति राखि सकैत छथि। सम्मानक नामपर सभकेँ एक आदर्श चरित्र बनाय देब शोकक सत्तात्मक नियन्त्रण होयत। एहि अध्यायमे शोकक काल ऐतिहासिक सफलता सँ अलग रहैत अछि। छपल पुस्तक, श्रमक प्राप्ति, सफल पाठशाला—ककरो उपलब्धि नैराकेँ वापस नहि आनैत।

*Trauma narratology*क सन्दर्भमे ई ‘गवाहीक बादो बाँकी’ रहबक रूप अछि। मुदा पाठक पछिला भागमे कतेक बेर ‘खाली जगह’क सूत्र सुनैत छथि—एहिपर प्रश्न उठि सकैत अछि। बारम्बार व्याख्यात्मक वाक्य नहि, पात्रक साधारण क्रिया—थारी धोएब, पत्र अपने पास रखब, चाभी न बाँटब—हानिक अनुभवकेँ अधिक गहिर बनबैत अछि। अध्याय २१६क सादगी एहि दृष्टिसँ दीर्घ उपन्यासक संगत उपलब्धि अछि।

तेरह : बालपाठ, पाठशाला आ अगिला कथावाचक

शिक्षाक कथा उपन्यासमे अलग परिशिष्ट नहि। अध्याय ३२-३६मे जतन, मीरा, रेवा, बिरसी आ पद्माक अनुभव स्कूलक भौतिकता, घुमन्तु परिवारक आवागमन, नामांकनक प्रशासनिक शर्त आ पाठक वास्तविक पहुँचकेँ अलग-अलग देखबैत अछि। ‘बाहरक पाठशाला’क अध्यायमे कापी माटिपर खसब शिक्षा-व्यवस्थाक प्रतीक अवश्य अछि, मुदा ओकर प्रभाव एहि लेल अछि जे बच्चाक पढ़बाक वास्तविक स्थान अस्थायी अछि। एतय स्थूल रूपकक बदला घटना स्वयं संस्था-रूपक बनैत अछि।

अध्याय १४७ ‘संकेतक कक्षा’, १४८ ‘पद्माक फीस’ आ १५१ ‘शम्बूकक पाठ’मे ज्ञानक बाँटवारा पुनर्विचारित अछि। संकेतक तकनीक संचारक अनुमति सँ जुड़ैत अछि; पद्मा अपन श्रमक समयक मूल्य माँगैत छथि; बच्चा प्रश्न करैत अछि जे पढ़बाक अधिकारक अन्तिम सीमा के निर्धारित करैत अछि। एहि दृष्टिसँ उपन्यास ‘महाभारत समान’ होयबाक अर्थ विशाल युद्ध नहि, ज्ञानक लोकतान्त्रिक उत्तराधिकार मानैत अछि।

अन्तिम अध्यायमे बालिका चाभीक व्यवस्था बुझए चाहैत अछि। पाठशाला काल्हि खुलत की नहि, ई व्यावहारिक प्रश्न कथाक खुलल भविष्य बनेबाक सबसँ प्रभावी युक्ति अछि। सत्ता एक नायक सँ दोसर नायकक

हाथमे हस्तान्तरित नहि, विधि सीखैत समुदायमे वितरित होइत अछि। तइयो लोकतान्त्रिक भविष्यक वादा वास्तविक वर्गीय, जातीय आ प्रशासनिक बाधा मिटा देबाक प्रमाण नहि; उपन्यासक अपन अपूर्ण अन्त एहि आलोचनाकें स्थान दैत अछि।

चौदह : उपन्यासक भाषा, दोहराइत भोर आ दृश्यात्मक गद्य

बहुत अध्याय 'भोरमे', 'पहिल उजासमे', 'रातिक पानि', 'कागदक कोना', 'दरबज्जा', 'थारी', 'बाँस' अथवा 'पुरान फाइल'क ठोस दृश्यसँ शुरू होइत अछि। ई स्थिर वस्तु-गतिशील प्रश्नक कथन-लय बनबैत अछि। वाक्य मे कियो पहिले वस्तु छुबैत अछि, तखन संस्था, समाज वा स्मृतिक प्रश्न खुलैत अछि। एहि प्रविधिसँ लम्बा रचनामे शिल्पगत एकरूपता, परिचित दुनियाक विश्वास आ श्रमिक-जीवनक बोध बनैत अछि। सरिताक चूल्हा, तारा मल्लिकक माप, पद्माक पन्ना अथवा हीराक खूँटा पाठककें लोकक देह आ बुद्धि दुनू बुझबैत अछि।

ईहो स्वीकार आवश्यक जे २१६ अध्यायक समान आरम्भ-रीति कखनो एकरसता उत्पन्न करैत अछि। ठोस वस्तु → छोट संवाद → अधिकारक नियम → अपूर्ण उत्तरक क्रम वारंवार लौटैत अछि। भिन्न पात्रक अद्वितीय भाषिक लय, हास्य, अनपेक्षित रूपक, मौन दृश्य, नाटकीय कटान आ कथावाचकक स्वर-परिवर्तन अगर बेसी विविध होइत तँ पाठकीय अनुभवमे आरो असमान, यादगार ऊर्जाक प्रवाह बनित। ई आपत्ति कृतिक महान उद्देश्यकें घटबैत नहि; विशाल आकारक कलात्मक मूल्यांकनमे आवश्यक अछि।

कथानकक भाषा प्रायः स्पष्ट, संवादक तर्कबद्ध आ पात्रक नैतिक कार्य पारदर्शी राखल गेल अछि। ई शैली सामाजिक उपन्यास आ आधुनिक प्रक्रियात्मक कथा (procedural narrative) बीच पुल बनबैत अछि। मुदा साहित्यिक सघनताक एक प्रकार अघोषित, अबूझ, अनुपलब्ध जीवनसँ जन्मैत अछि; उपन्यास जखन सभ द्वन्द्वक लिये स्पष्टीकरण-सार उपलब्ध करबैत अछि, ओ भाग पाठकक कल्पनात्मक श्रम कम करैत अछि। वैचारिक

विशालता आ कलात्मक अस्पष्टताक हकक बीच संतुलन एहि कृतिक भविष्यक प्रमुख आलोचनात्मक प्रश्न रहत।

पन्द्रह : संस्थागत नैतिकता आ दायित्वक तर्क

नैतिक जीवनक अति निजीकरण एहि कथाक स्थायी विरोधी अछि। एकटा सज्जन प्रधान, त्यागी नायक वा साहसी पत्रकार सब विवाद सुलझा नहि सकैत। अध्याय १३मे सार्वजनिक मंचपर नाम बाजलासँ सरकारी गलती सुधरैत नहि; ७०मे गश्त मंजूर भेलासँ व्यक्तिगत सुरक्षा सुनिश्चित नहि; १०८मे समझौता भेलासँ बदलल जलस्तर सुरक्षित नहि; १५४मे सहमतिक लिखित पत्र निजी स्वत्वक हर प्रश्न समाप्त नहि करैत। पात्रसभक चेष्टा प्रणालीक अन्धे छेद देखाबैत अछि।

ई प्रक्रिया उपन्यासक जीवन-दृष्टिक ताकत अछि। घाटक जोखिमक निर्णय स्थानीय शिल्पी आ नाविकक ज्ञान बिना बेमानी अछि; अस्पतालक दवा-वितरणमे चिकित्सकीय निर्णय आ आपूर्तिक आर्थिक लाभ अलग होयबाक चाही; मृतकक नाम स्मारकमे जोड़ब परिवारक बकाया वेतनक विकल्प नहि। व्यक्तिगत नैतिकताक सीमाकँ व्यवस्था-विवेक मे बदलबाक एहि साहसक कारण उपन्यास समकालीन राजनीति आ समाजक गम्भीर आलोचनात्मक आख्यान बनैत अछि।

तथापि अदालत, समिति, पंचायत, विद्यालय आ अभिलेखघरक निरन्तर विवरण किछु समय कथाकँ नियम-पुस्तिका बना देबाक खतरा पैदा करैत अछि। एक उपन्यासक कसौटी 'समस्त प्रक्रिया सही कहल गेल की' नहि, 'एहि प्रक्रियामे मनुष्यक अनुभव कोना बदलल' सेहो अछि। जब गलत नियमक असली दंश महेशक बेटीक नदीक चित्र अथवा रुखसानाक बिहानक थकानमे देखाइत अछि, तखन रूप आ विचारक संगति सार्थक होइत अछि।

सोरह : अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक'क महत्व केवल सभसँ लम्बा अथवा दोसर सभसँ लम्बा उपन्यासक पदवीमे नहि, २१६ अध्यायमे कथनक अधिकारक एक कठोर

पुनर्विचारमे अछि। जीवित लोककें मृत कहल जा सकैत अछि, गवाहकें सर्वज्ञ बना देल जा सकैत अछि, श्रमिकक नाम श्रेयसँ हटाओल जा सकैत अछि, दार्शनिकक प्रसिद्धि पीछे सहलेखकक श्रम लुका सकैत अछि, आ स्मारकक नाम मृतकक निजी जीवनपर कब्जा करि सकैत अछि। एहि संकटसभक विरुद्ध उपन्यास 'एक अन्तिम महान पात्र' नहि, गलती सुधार सकनिहार बहु-व्यक्ति, बहु-पंजी आ बहु-समयक व्यवस्था प्रस्तावित करैत अछि।

एकर प्रमुख उपलब्धि कथा-समाज-दर्शनक परस्पर सम्बन्ध, स्त्रीक सार्वजनिक स्वत्व, श्रमक ज्ञान, प्रमाणक अनिश्चितता, जल-परिवेशक जीवित कारणता, प्राचीन महाकाव्यक प्रतिपाठ, नैराक अटल अनुपस्थिति आ अन्तिम रसोदक धरातल अछि। एकर सीमामे प्रायः समान लय, नैतिक स्पष्टीकरणक पुनरागमन, १५७ समुदाय सभकें समान कलात्मक गहराइ देबाक कठिनता, दार्शनिक संवादक कखनो अनुप्रयोग-प्रधान होयब आ प्रक्रियात्मक अभिलेखक विस्तार शामिल अछि। एहि सीमाकें चिन्हित करब कृतिक गरिमा घटाएब नहि, ओकरा साहित्यिक रूपमे गम्भीरतासँ लेब अछि।

आदि पर्वक पहिल दृश्य पूछैत अछि: 'जीवित व्यक्तिक नामक स्वामी के?' स्वर्गारोहण पर्वक अन्तिम दृश्य पूछैत अछि: 'आगामी दिन दुआर कोना खुलत?' एहि दू प्रश्नक बीच २१६ अध्यायक सामूहिक प्रयत्न 'कुरुक्षेत्र'कें केवल मनक युद्ध नहि, कहानी कहबाक अधिकारक राजनीतिक-नैतिक क्षेत्र बना दैत अछि। तइयो उपन्यास अपन श्रेष्ठता तखन प्रमाणित करैत अछि, जखन एतेक विराट योजना अन्तिम भातक दानासँ पैघ होएबाक आग्रह नहि करैत।

पर्ववार आलोचनात्मक पाठ : कथात्मक विस्तार आ रूपगत अन्तर

पर्व १ • आदि (अध्याय १-१२) : मृत्युपंजी सँ जल-नकशा धरि

पहिल पर्व आरम्भे पाठककें अपन विषयक परम्परागत अपेक्षा उलटि दैत अछि। 'आदि' नाम सुनिते कुल, पूर्वज, वंश आ आरम्भक आशा जन्मैत

अच्छि; मुदा अध्याय १ 'मृतकक रसोइ'मे नायिकाक प्रशासनिक मृत्यु अच्छि। ई उपन्यास जन्म-वंशक बदला व्यक्ति आ पंजीक असमान सम्बन्धसँ आरम्भ करैत अच्छि। 'सत्ताइस नाम'मे एक रिक्त नाम, 'चौकक समय'मे स्टेशनक अपन दिनचर्या, 'नदीक पहिल घर'मे सत्यवतीक पुरान घाट, 'जनकक माप'मे मिथिलाक पुरातन निर्माण आ 'घरक पहाड़ा'मे पारिवारिक हिसाब एके स्थिर केन्द्रक चारू ओर घूमैत अच्छि—कोन नाम, वस्तु, स्थान वा श्रमकेँ इतिहासमे स्थान भेटत?

अध्याय ७ 'पाँच पीढ़ीक चौकी' पीढ़ीगत स्मृतिक प्रश्न खोलैत अच्छि, मुदा एकरे संग कथाक पात्र-सम्बन्ध तालिकाक सावधानी याद राखब जरूरी: पीढ़ीगत संग रहब रक्तसम्बन्धक स्वीकृति नहि। अध्याय ८ 'सीमातीर्थक चिट्ठी' कागदक भौतिक नमी सँ सीमाक राजनीति आरम्भ करैत अच्छि। ९ 'बन्द बाहा'मे पोखरिक पाछाँक घास, १० 'नामक छाँह'मे गोदामक बाट, ११ 'अपन फोन अपन शर्त'मे तस्वीरक अनुमति, १२ 'घाटक पाछाँ शहर'मे माछ पकड़बाक जलमार्ग—ई सभ स्थान उपन्यासक भविष्यक प्रमाण-संकट तैयार करैत अच्छि। पाठक घटनामे 'भूल' नहि, संस्थागत ज्ञानक अपूर्णता खोजबाक अभ्यास प्राप्त करैत अच्छि।

एहि पर्वक शिल्पगत श्रेष्ठता क्रमिक *motif introduction* अच्छि। भात, मृत्युसूचना, पन्ना, तस्वीर, जल, घाट, चौक अलग दृश्य लगैत अच्छि; थोड़े अध्यायमे सामाजिक सन्दर्भक जाल बनि जाइत अच्छि। कमजोर सम्भावना सेहो प्रारम्भमे उपस्थित अच्छि: पहिल बारह अध्यायमे प्रमाणक नैतिक नियम एतेक स्पष्ट कहल गेल अच्छि जे पाठक कखनो पात्रक स्वतन्त्र भूल देखबाक बदला सही पद्धतिक शिक्षण सुनैत अच्छि। मुदा नायिका जीवित रहितो मृत घोषित भेलाक दृश्य एहि जोखिमकेँ सहि जाइत अच्छि, कारण ओकर विडम्बना उपदेशसँ पहिने घटित भऽ चुकल अच्छि।

पर्व २ • सभा (अध्याय १३-२४) : प्रतिनिधित्वक अधिकार आ अपमान

*सभा*क आरम्भ 'बजाओल गेल मृतका'सँ होइत अच्छि: सरिताक नाम मञ्चपर बोलाएल जाइत अच्छि, मुदा ताहिसँ लिखित जीवनक स्थिति ठीक नहि होइत। 'प्रतिनिधिक कुर्सी'मे बैठबाक व्यवस्था आ वास्तविक

मताधिकारक अन्तर, 'द्रौपदीक प्रश्न'मे दाँव लगाएबाक नैतिक सीमा, 'विकर्णक बादक मौन'मे असहमतिक सार्वजनिक कीमत, 'कैकेयीक देय'मे वचनक सामाजिक प्रभाव आ 'उर्मिलाक राति'मे घरक अवैतनिक श्रम—ई सभ पाठककेँ सभाक संस्था अनेक समयमे भिन्न रूपसँ देखबैत अछि। अधिकारक 'नाम' आ अधिकारक 'उपयोग' अलग बनल रहैत अछि।

१९ 'चम्पाक सन्देश', २० 'जल्दी प्रकाशन', २१ 'कर आवाज'मे आधुनिक मीडिया आ साक्षी-व्यवस्थाक भय अधिक स्पष्ट होइत अछि। प्रकाशनक तत्परता केवल साहस नहि: अपर्याप्त जाँच सार्वजनिक करब साक्षीकेँ जोखिममे दऽ सकैत अछि। २२ 'घरक आदेश' आ २४ 'बाहरक ओसार'मे निजी घर आ सार्वजनिक मञ्चक सीमा बदलैत अछि। 'भरतक अस्वीकार'क प्राचीन दृश्य एहि प्रसंगक संग एक जरूरी अन्तरपाठ निर्मित करैत अछि—वैधानिक अधिकार भेटब आ ओकरा नैतिक रूपसँ स्वीकार करब एके प्रक्रिया नहि।

नैरेटोलॉजिकल दृष्टिसँ ई पर्व *public speech as action*क अध्ययन अछि। पात्र बोलि कऽ केवल भाव व्यक्त नहि करैत; कुसी, माइक, स्वीकृति-पत्र, प्रतिनिधिक सूची कथाक अगिला परिणाम तय करैत अछि। पर शिल्पगत असंतुलन एतय स्पष्ट हो सकैत अछि: जखन रामायण आ महाभारतक संवाद आधुनिक अधिकारशास्त्रक शब्दावलीक बहुत समीप आबि जाइत अछि, पुरान कालक सांस्कृतिक अपरिचितता अल्प होइत अछि। लेखक इतिहासक पुनर्रचना नहि, नव प्रतिपाठ लिखैत छथि; आलोचनाकेँ एहि दोसर उद्देश्यक कसौटी लगाएबाक चाही।

पर्व ३ • वन (अध्याय २५-३६) : निर्वासनक नव अर्थ

'रेलमे खाली जगह' आधुनिक निर्वासनक उपयुक्त उद्घाटन अछि। वन एतय वृक्षक समुच्चय मात्र नहि; शहरक बीच ओ समस्त स्थल अछि जतय कियो अधिकृत सूचीमे नहि अटैत—स्टेशन, अस्थायी डेरा, ओसार, नामांकनसँ बाहरक बच्चा, सुरक्षित संपर्कसँ वंचित घुमन्तु परिवार। २६ 'गुहक तट' नाविकक मार्गक ज्ञान लऽ अबैत अछि; २७ 'शबरीक भोर', २८ 'हिडिम्बाक सन्धि' प्राचीन कथाकेँ भूमि, आश्रय, विवाह आ विश्वासक प्रश्न

पर लौटबैत अछि। २९ 'बच्चा चोर'मे अफवाह आ मिथुनक वास्तविक खोजकें अलग राखब उपन्यासक विशेष उत्तरदायित्व अछि। आरोपक झूठ आ बच्चाक गुमशुदगी एक-दोसराक स्वयंसिद्ध व्याख्या नहि।

३० 'अहल्याक आवाज' आ ३१ 'एकलव्यक सीख'मे अपमानित आवाजकें पुनः कथनक अवसर भेटैत अछि। ३२ 'अथातो ककर', ३३ 'दीपक आ कागद', ३४ 'अनदेखल कारण', ३५ 'गवयक पहिचान' आ ३६ 'बाहरक पाठशाला' ज्ञानक सामाजिक प्रवेशक पाँच अनुक्रमिक रूप अछि। ई पाठशालाक जन्मक कथा बनैत अछि: नाम लिखबाक अधिकार, पाठक सामग्रीक निर्माण, प्रमाणक वर्गीकरण, उपमानक सीमा आ बच्चाक आवागमनक व्यावहारिक सुरक्षा एक संग उपस्थित होइत अछि।

एहि पर्वक औपचारिक उपलब्धि 'वन'क स्थानिक पुनर्परिभाषा अछि—जिस समाजक कागद नहि, ओ सामाजिक वनमे धकेलल जाइत अछि। मुदा किछु ठाम अर्थक निश्चितता बहुत जल्दी स्थापित होइत अछि; प्रत्येक प्राचीन उपाख्यानक आधुनिक समतुल्यता जतेक स्पष्ट कहि देल जाएत अछि, पाठकक ऐतिहासिक बहसक अवसर ओतेक घटि सकैत अछि। उत्कृष्ट दृश्य ओतय अछि जतय जतनक कापी भीजैत अछि आ पाठक बिना अलग घोषणाक पढ़बाक असमानता बुझि जाइत अछि।

पर्व ४ • विराट (अध्याय ३७-४८) : छद्मनाम नहि, श्रमक स्वनाम

चौथ पर्वक कलेवर ३७ 'रान्हनिहारक नाम'सँ बदलैत अछि। रुखसानाक श्रम 'घरक स्वाभाविक सेवा'क बदला गननायोग्य सार्वजनिक काज बनैत अछि। ३८ 'बृहन्नलाक कक्षा'मे शिक्षण आ भूमिकाक पहचानक प्रश्न, ३९ 'ताँतीक देय'मे पार्वतीक करघाक श्रेय, ४० 'कपड़ा पंजी'मे उर्मिलाक हाजिरी, ४१ 'बरहीक हस्ताक्षर'मे ललितक तकनीकी उत्तरदायित्व, ४२ 'माटिक भविष्य'मे शकुन्तलाक कौशल आ अगिला पीढ़ीक इच्छा, ४३-४४मे धातुशिल्प, ४५मे जोलहाक खेप, ४६मे धोबि-रंगरेज-धुनिया आ ४७मे फाटकक मापक कथा विकसित होइत अछि।

महाभारतक *विराट पर्व* प्रायः पहचान छिपएबाक स्मृति जगबैत अछि। एतय उलटा घटना अछि: हुनकर श्रम आ निर्णयक वास्तविक नाम, जे

सामाजिक व्यवहारमे छिपाओल जाइत रहल, पाठकक आगाँ अबैत अछि। ४८ 'छद्मक तीन कारण' परिचय-गोपनक सर्वग्राही नैतिक निर्णय नहि दैत; सुरक्षा, असुरक्षा, कामक अवसर आ शोषण अलग कारण बनि सकैत अछि। एहि विवेकसँ गुप्त नाम स्वतः अपराधक चिह्न नहि रहैत।

ई पर्व सामूहिक उपन्यास लिखबाक प्रयोगमे विशेष सफल अछि। पेशावला पात्र केवल विवरणक पंक्ति नहि—पात्रक तकनीकी ज्ञान कथा-निर्णयक शर्त बनैत अछि। तथापि सभ अध्यायकें लगभग समान कथात्मक आवृत्ति देबाक कारण जकड़न सेहो अनुभव भऽ सकैत अछि। १५७ समुदायकें प्रत्येक एक स्मरणीय जीवन-गाथा देब असम्भव अछि; लेखक हुनका सामाजिक काजक दृश्य देइत छथि। ई कृति *collective protagonist*क महत्वाकांक्षाक निकट पहुँचैत अछि, किन्तु प्रत्येक व्यक्तिक आन्तरिक भाषा समृद्ध करबाक समस्या शेष रहैत अछि।

पर्व ५ • उद्योग (अध्याय ४९-६०) : सन्धि जँ अनिश्चित हो

सन्धिक कथा प्रायः दू शिविरक राजनैतिक निर्णयमे संक्षिप्त होइत अछि; एहि पर्वमे सन्धि अनेक अर्थनीतिक उपशर्त, जलमार्गक माप, आश्रय, औषधि आ सार्वजनिक सहभागी काजसँ निर्मित अछि। ४९ 'सहयोगक दाम'मे निष्काम सहयोगक भाषा श्रमिकक मेहनताना नहि मेटाबय; ५० 'सुग्रीवक भय' गठबन्धनक भीतर असमानता दर्शबैत अछि; ५१ 'ताराक गणना' माप आ दूरदृष्टिक विशिष्ट श्रम अछि; ५२ 'अङ्गदक कल्ह' पीढ़ीगत असहमतिक भाव खींचैत अछि। ५३ 'रुहानीक चाभी' आश्रयमे सुरक्षा आ नियंत्रणक सूक्ष्म अन्तर देखबैत अछि।

५४ 'अनुष्ठान बिना प्रधान' सामुदायिक कामक केन्द्रक विषयमे दार्शनिक प्रश्न राखैत अछि: एक सर्वोच्च कर्ताक विना सहयोग सम्भव अछि की? ५५ 'हराएल बच्चाक माए' अफवाहक विपरीत वास्तविक खोजक भाव जगबैत अछि; ५६ 'दानक दवाई' मदतक नैतिकता आ औषधि-प्रणालीक जटिलता देखबैत अछि; ५७ 'जनक आ जनपद' व्यक्तिगत शासकसँ सामूहिक भूमि-अधिकार पर दृष्टि घुमबैत अछि; ५८-६०मे कारण, दूत आ सन्धिक भंग क्रमशः बनैत अछि।

अध्याय ६०क भीजल बाँसक फलकपर धुलैत कोइला-रेखा एक उत्कृष्ट कथासंकेत अछि। काल्हिक माप आइक जलमे अविश्वसनीय भऽ सकैत अछि; लिखित सहमति अनन्त भविष्यक चिरस्थायी अनुमति नहि। एहि अतिक्रमित अनिश्चितताक कारण उपन्यासक सन्धि 'बुद्धिमान नायकक विजय' नहि बनैत। आलोचनात्मक आपत्ति एतय इएह जे एक दोसर 'शर्त'क क्रम कभी-कभी कथात्मक आकस्मिकताकें दाबि दैत अछि। तथापि ई शर्तसभ वास्तविक सम्बन्धक असमानता दृश्य बनबैत अछि; बेकार व्यूरोक्रेसी कहि हटाओल नहि जा सकैत।

पर्व ६ • भीष्म (अध्याय ६१-७२) : प्रतिज्ञा, भंग सुरक्षा आ साक्षीक दूरी

६१ 'गङ्गाक शर्त', ६२ 'भीष्मक प्रतिज्ञा', ६३ 'अम्बाक समय' आ ६४ 'शिखण्डीक निर्णय' प्राचीन कथाक सामाजिक-नैतिक विवाद खोलैत अछि। प्रतिज्ञा जतए एक पुरुषक महानता जकाँ दिखैत अछि, ओतए ओकर जीवनपर आन लोकक कतेक कीमत पडैत अछि? अम्बाक समय ओकर निर्णयक स्वतन्त्रताक वैधता प्रश्न करैत अछि। ६५ 'अस्पतालक पुरान पाँख' एहि वचनक स्मृतिसँ आधुनिक संस्थागत सुरक्षा-दायित्वक धरातलपर कथा अनैत अछि; ६६ 'कृष्ण अर्जुनक विराम' युद्धक तर्ककें तात्कालिक प्राण-रक्षा आ औषधिसँ भिड़बैत अछि।

६७ 'दूरक देखाइ', ६८ 'चेतावनीक प्रति', ६९ 'अनुपस्थितिक अर्थ'कें क्रममे देखिते प्रत्यक्ष आ अभिलेखक भिन्न विश्वसनीयता खुलैत अछि। ७० 'महेशक राति'मे अखबारमे नाम नहि छपितो परिवारक पहिचान खुलि सकैत अछि— गोपनीयताक प्रश्न पाठकक सांकेतिक अनुमानकें प्रभावित करैत अछि। ७१ 'मृत्यु आ दस्तावेज'मे महेशक असुरक्षा अन्ततः अपूरणीय मृत्यु बनैत अछि। ७२ 'संजयक दूरी'मे कबीर अपन देखल सीमित तथ्यक सचेत संशोधन करैत छथि।

ई पर्व उपन्यासक सबसँ तीव्र आलोचनात्मक उपलब्धिसँ एक अछि। पूर्वक 'संजय' महाभारतक दृश्य बतबैत अछि; नव युगक साक्षी कहैत अछि जे दू आकृति देखलहुँ, मुदा कियो दोसर व्यक्ति प्रहार कएलक की नहि, से नहि जानैत छी। साक्षीक महत्ता पूर्णदृष्टि नहि, स्वीकारल अपूर्णतासँ उभरैत अछि। महेशक बेटी द्वारा अपन नदीक चित्र किताबमे रखबाक निर्णय

राजनीतिक घटनाकें निजी शोकक स्वतन्त्र निरन्तरतासँ जोड़ैत अछि। एहि ठाम कथा नैतिक नियमसँ बेसी जीवित अनुभव बनैत अछि।

पर्व ७ • द्रोण (अध्याय ७३-८४) : गुरुक सत्ता आ अनदेखल ज्ञान

सीमातीर्थक नावसँ आरम्भ होइत द्रोण पर्व ज्ञान-प्राप्तिक समाजशास्त्र खोलैत अछि। ७३ 'सीमातीर्थक उतराइ'मे नदी पार करबाक विशेषज्ञता, ७४ 'द्रोणक देय'मे गुरुक अधिकारक मूल्य, ७५ 'एक्के आखिरी अंक'मे एक अंकसँ सम्पूर्ण व्यक्तिक मूल्यांकन करबाक संकट, ७६ 'एकलव्यक बाद'मे ज्ञान दऽ कऽ तकर स्वत्वक विडम्बना उपस्थित अछि। शिक्षाक अधिकार केवल विद्यालयमे नामांकन नहि, शिक्षकक वैधता आ शिष्यक स्वतन्त्र प्रतिभाक प्रश्न अछि।

७७ 'त्रिजटाक सन्देश' आ ७८ 'मन्दोदरीक घर' पुरान लंकाक दृष्टिसँ प्रतिपक्षीक भीतरक जीवन खोलैत अछि। ७९ 'चेहराक समानता' एकर आधुनिक ज्ञानमीमांसीय प्रतिरूप अछि—चेहरा मिलब पहिचानक अन्तिम प्रमाण नहि। ८० 'बुनकरक दोसर खाता' उद्योगक दोहरी लिखावट देखबैत अछि; ८१ 'बच्चाक दोसर ठाम' खोजनिहारक अनुमानकें नया दिशा दैत अछि; ८२ 'मैथिलीक पन्ना' आ ८३ 'सरिताक मेहनत' ज्ञाननिर्माणक अदृश्य श्रम उघारैत अछि; ८४ 'गुरुक स्वीकार' आत्मालोचनाक शर्तपर एक पर्व बन्द करैत अछि।

एहि पर्वक मुख्य नैरेटोलॉजिकल शक्ति *epistemic hierarchy*क आलोचना अछि: जकरा 'विद्वान' कहल जाइत अछि, ओकर शब्द स्वतः सर्वाधिक प्रमाण नहि; जकरा नाविक, बुनकर अथवा रसोइक श्रमिक कहल जाइत अछि, ओकर ज्ञान नगण्य नहि। लेकिन द्रोणक प्रतीकक खिंचाव अतिशय होएत तँ भिन्न प्रकारक संस्थागत दोषसभ एके 'गुरु-शिष्य शोषण'क रूप धरि सकैत अछि। उपन्यास जतए शिक्षकक चूक, राज्यक नियम, बजारक गुप्त लाभ आ शिष्यक इच्छा अलग-अलग राखैत अछि, ओतए एकर आलोचना अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

पर्व ८ • कर्ण (अध्याय ८५-९६) : जनम, पालन आ नामक अधूर प्रमाण

‘राधाक श्रम’सँ आरम्भ भेल कर्ण पर्व जन्मकेँ प्रकृत सत्यक अन्तिम निर्णायक मानबाक प्रलोभन रोकैत अछि। ८६ ‘मूल पन्ना’, ८७ ‘पाँच बदलल परिचय’, ८८ ‘चौदह विसंगति’ आ ८९ ‘चारि जीवित चारि मृत’ दस्तावेजक रहस्यकेँ संख्यात्मक अनुशासनसँ निर्मित करैत अछि। मुदा संख्या अपने आप व्यक्तिक जीवनक अर्थ नहि। ‘सुभद्राक शर्त’मे जन्मदात्री, पालनकर्ता आ संततिक अलग अधिकार, ‘सुविधाजनक त्रुटि’मे प्रशासनिक भंगक सम्भावित हित, ‘आरोपक भङ्ग’मे गलत निर्णयनक संशोधन, ‘खेपक सम्बन्ध’मे व्यापारक साक्ष्य, ‘पालकक अधिकार’मे पारिवारिक सम्बन्धक वैधता, ‘हत्याक आदेश’मे निजी अपराधक प्रमाण आवश्यक अछि।

अध्याय ९६ ‘सत्ताइसक मिलान’ पठनीय रहस्यक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। मूल पन्ना आ विभिन्न प्रतिक मिलान एक बड़ बौद्धिक श्रम अछि, मुदा कियो लुका नाम अनिवार्यतः सार्वजनिक नहि कएल जाएत। न्यायिक जाँच, गायब बच्चाक खोज आ निजी परिवारक प्रश्न अलग रहैत अछि। ई *ethics of revelation* अछि—सत्य भेटबाक अर्थ सब सत्य सार्वजनिक करबाक आज्ञा नहि। महाभारतक कर्णक जन्म-रहस्यक प्रतिध्वनि एहि नव रूपमे अधिक सामयिक बनैत अछि।

आलोचनात्मक कठिनाई एहि पर्वमे भी अछि: लगातार नकल, सूची, विसंगति, प्रमाण, सुधारक प्रसंग रहस्यकेँ जटिल आ पठनीय दुनू बनबैत अछि, लेकिन अनेक पृष्ठक पुनरावृत्तिमे पात्रक अनकहल मानस गुम भऽ सकैत अछि। कथावाचकक दीर्घ नैतिक सूत्र जतेक घटैत अछि, सुभद्राक इच्छा, कबीरक निजी दुविधा आ राधाक श्रमक ठोस दृश्य ओतेक प्रभावी उभरैत अछि। एहिलेल एहि पर्वकेँ दस्तावेजी थ्रिलर आ पारिवारिक उपन्यासक सफल, किन्तु असमान मिश्रण मानब उचित अछि।

पर्व ९ • शल्य (अध्याय ९७-१०८) : आपदासँ पहिने निष्ठाक पुनर्परीक्षा

९७ ‘शल्यक निष्ठा’, ९८ ‘विभीषणक बाट’ आ ९९ ‘कुम्भकर्णक जागब’ अलग प्रकारक निष्ठा, विरोध आ विलम्ब पर विचार करैत अछि। युद्धक

पारम्परिक चरित्र आ आजुक सार्वजनिक सुरक्षा एहि कारण एकरेखा पर नहि अटैत। १०० 'दूसर समझौता' प्रथमतः ठहराएल सन्धिक संशोधन अछि; १०१ 'रोगीक समय' व्यक्तिगत उपचारक तात्कालिकता, १०२ 'मरम्मतिक तह' पुरान ढाँचाक अनदेखल त्रुटि, १०३ 'सकारात्मक युक्ति' तार्किक अन्वय, १०४ 'शक्तिक प्रश्न' जिम्मेवारी, १०५ 'बिनौटक पुल' निर्माण, १०६ 'उपचारक स्वीकार' पेशागत जवाबदेही, १०७ 'पाँच हस्ताक्षर' सामूहिक मंजूरी आ १०८ 'जलस्तरक बाहर' प्रकृतिक परिवर्तनीय जोखिमक कथा बनैत अछि।

शल्य नाम एतय लाभ-हानि सँ अधिक 'ककरा संग रहब'क अनिश्चय खोलैत अछि। पाँच हस्ताक्षर आदर्श सामूहिकता नहि, उसरायल रहबाक सम्भावना सहित समझौता अछि। अध्याय १०८क दोसर बाँस गाड़ि नव समय लिखबाक दृश्य रूपक नहि, विज्ञानगत अनिवार्यता अछि। काल्हि सही माप आइ गलत होएत; ज्ञानक सत्यापन निश्चित विधिक प्रक्रिया बनैत अछि, अंतिम महापुरुषक दिव्य घोषणा नहि।

कथात्मक कमजोरी एतय रोमांचक संकट आ तकनीकी शर्तसभक बदलैत अनुपातमे अछि। छरकी, नाव, औषधि, अस्पताल, मरम्मत आ अनिश्चित मौसमक कथासूत्र पाठकक आकर्षित करैत अछि, मुदा एक-एक समस्या सुलझाबय लेल लिखित निर्णयक विस्तार अगिला दृश्यक आवेग घटा सकैत अछि। तइयो आपदाक विवेचनमे बिना नाप अनुमान नहि गढ़ब उपन्यासक मूल साक्ष्यनीतिक पुष्टि करैत अछि।

पर्व १० • सौप्तिक (अध्याय १०९-१२०) : रात्रि, हिंसा आ उद्धारक सीमारेखा

१०९ 'रातिक सन्धि'सँ १२० 'भोरक पहिने' धरि समयक शीर्षक स्वयं एक नाटकीय कमान बनबैत अछि। ११० 'गोदाम खुलल', १११ 'नावक क्षमता', ११२ 'ईशानक हाथ', ११३ 'अश्वत्थामाक राति', ११४ 'दवाइ आ बचल श्वास', ११५ 'तस्वीरक अनुमति', ११६ 'पुरान पाँख', ११७ 'नैराक चुनाव', ११८ 'उर्मिलाक थाकल हाथ' आ ११९ 'देरिक दूरी'—ई सभमे उद्धारक कार्य केवल साहसक घोषणासँ सम्भव नहि। नांवक वास्तविक भार, औषधिक उपलब्धता, सुरक्षा, कार्यकर्ता-विश्राम आ एक विलम्बक अपूरणीय लागत घटना बनैत अछि।

अश्वत्थामाक प्राचीन रात्रि आ आधुनिक आपदाक राति बीच समानता एकरीति हिंसाक नैतिक अनिश्चितता सँ बनैत अछि, नहि कि दुनू घटनाकें एक अक्षम्य अपराध घोषित करबासँ। एहि पर्वमे नायकक निर्णयक गति बढैत अछि; जखन समय कम होइत अछि तँ सब सूचना उपलब्ध नहि भऽ सकैत अछि। एतय उपन्यासक पिछला प्रमाण-सावधानी एक तीक्ष्ण परीक्षा सँ गुजरैत अछि: प्रतिक्षा हर बार नीति नहि, समयपर काज नहि करब सेहो दोष।

कथाक निर्णायक क्षणसभमे नीतिक विश्लेषण पछुए चलय तँ पठन-संवेग बढैत अछि; जहाँ संकटमे भी प्रत्येक निश्चयक टिप्पणी थमि-थमि आवैत अछि, ओतय गति घटैत अछि। एहि पर्वक महत्त्व रात्रि-हिंसा आ आपदा-उद्धारक अलग नैतिक व्याकरण बचबामे अछि। जानबूझि हत्या, लापरवाह ढाँचा आ समयक वास्तविक असमर्थता सब एक प्रकारक दोष नहि।

पर्व ११ • स्त्री (अध्याय १२१-१३२) : शोकक देह आ बचल लोक

१२१ 'नामक पुष्टि' आ १२२ 'अन्तिम देह' प्रमाणक निश्चितताकें दुखक अनिश्चित अनुभवसँ भिड़बैत अछि। १२३ 'गान्धारीक प्रश्न', १२४ 'मन्दोदरीक भीतर', १२५ 'कुन्तीक स्वीकृति' युद्ध-परिणामक स्त्री-दृष्टिक पृथक स्वर छथि। १२६ 'भातक मात्रा' कोनो छोटी घटनाक शीर्षक नहि: आपदाक बाद भोजनक माप नैतिक अधिकारक प्रश्न बनैत अछि। १२७ 'बचलक दोष' उत्तरजीवितक आत्मप्रश्न; १२८ 'चम्पाक उपचार', १२९ 'रुहानीक सूची' सामूहिक देखभालक काम; १३० 'द्रौपदीक बचल दिन', १३१ 'सीताक अग्नि' सार्वजनिक चरित्र-परीक्षाक सीमा; १३२ 'नम्बरक बाद' मनुष्यकें गणनाक पिछला जीवन दैत अछि।

ई पर्व पीडाकें केवल विलापमे बन्द नहि करैत। शोक, देह, भोजन, औषधि आ सामाजिक पुनर्वासक सम्बन्ध बनैत अछि। हर एहन दृश्य, जतय जीवित स्त्री अपना देहक काम स्वयं चुनैत छथि अथवा शोकक सार्वजनिक उपयोगक विरोध करैत छथि, 'स्त्री पर्व'क परम्परागत रोदनकें क्रियात्मक अधिकारमे बदलैत अछि। गान्धारी आ मन्दोदरीक शोक आधुनिक परिजनक अनुभवक

साधारण प्रतिरूप नहि; अनन्तर युद्ध-उत्तरदायित्वक जटिल प्रश्नक साहित्यिक प्रतिध्वनि अछि।

आलोचनाक सावधानी एहि बातमे होयबाक चाही जे एतय स्त्रीक अनुभवक सर्वग्राही प्रतिनिधित्वक दावा नहि कएल जाए। दर्जनौं स्त्री पात्र रहितो सामाजिक जोखिम, शारीरिक श्रम, आयु, अस्थायी निवास आ निजता अलग अछि। उपन्यासकी सार्थकता दुखक एक-स्वर नबनाएबमे अछि; जहाँ किएक मरल, के कतेक बचल आ के खाइत अछि एक साथ खुलैत अछि, ओतय नैरेटोलॉजिकल घनत्व विशेष बढ़ैत अछि।

पर्व १२ • शान्ति (अध्याय १३३-१४४) : युद्धोत्तर प्रशासनकें कथा बनेबाक जोखिम

१३३ 'शासन के लेत' आ १३४ 'युधिष्ठिरक अरुचि' विजयी पक्षक राज्यग्रहण पर नैतिक सन्देह अछि। १३५ 'भीष्मक शय्या' लंबित ज्ञान आ अन्तिम उत्तरक प्रतीक्षा, १३६ 'पहिल बयान' घटना-उत्तर न्यायिक प्रक्रिया, १३७ 'पुरान प्रतिवेदन' संस्थागत स्मृतिभ्रंश, १३८ 'दोषक अलग खाना' कारणक विभाजन, १३९ 'तर्कक पुनरागमन' दार्शनिक पुनर्मूल्यांकन, १४० 'कर्म आ कारण' कामक वास्तविक सम्बन्ध, १४१ 'मदद आ मुकदमा', १४२ 'दवाइक स्रोत', १४३ 'आश्रयक नियम' आ १४४ 'कामक जिज्ञासा' न्यायकें अगिला दिनक जीवनमे खोजैत अछि।

एहि पर्वक विलक्षणता युद्धोत्तर कथा के अंतिम भाषण मे समाप्त नहि करब अछि। उद्धारक समय जिनका काम चाही, हुनका मजदूरी, आश्रय, औषधि आ उत्तरदायी शासन चाही। असाधारण हिंसाक बाद साधारण संस्था बनब नैरेटिवक 'धीमी अवधि' बनैत अछि। शान्तिक काल अवधि-विस्तार सँ देखाओल गेल अछि; एकटा राजाभिषेक-समाप्ति नहि।

किन्तु साहित्यिक पठनमे एतय सबैसँ प्रखर आपत्ति उठि सकैत अछि। सूचना-जाँचक बारम्बार दृश्य, दोषक वर्गीकरण, आवेदनक प्रति आ अलग हिसाबक घनत्व पाठकीय धैर्यक परीक्षा लैत अछि। जखन पात्र विचार-प्रक्रियाक केवल मुख बनैत छथि, कथा कखनो विस्तृत नीति-निबन्ध लगैत अछि। ठोस दैनिक अपूर्णता—टूटल दुआर, औषधि लेल प्रतीक्षा, श्रमिकक

समय—पुनः दृश्य बनबैत अछि। ई पर्व पूर्ण सुसंगत नहि, मुदा उपन्यासक घोषित नैतिक परियोजनाक अनिवार्य हृदय अछि।

पर्व १३ • अनुशासन (अध्याय १४५-१५६) : अधिकारक शर्त बनाम जीवित उपयोग

१४५ 'राशनक पाँति'क खाद्यवितरणक दृश्य उत्तरजीविताक सुलभ अधिकारक प्रश्न बनैत अछि। १४६ 'फकीराक पास' आवागमन, १४७ 'संकेतक कक्षा' माध्यमक स्वामित्व, १४८ 'पन्नाक फीस' संकेत-अनुवादक श्रम, १४९ 'जानकीक खण्डन' अफवाहक प्रतिवाद, १५० 'चेहरा आ प्रमाण' वायरल दृश्यक सीमा, १५१ 'शम्बूकक पाठ' अध्ययनपर अधिकार, १५२ 'माटिक बकाया' श्रमदेय, १५३ 'नदीक माप' पर्यावरणीय सुरक्षा, १५४ 'सहमतिक दस्तावेज' व्यक्तिक निर्णय, १५५ 'हिंसाक गवाही' उत्पीडक घटनाक विश्वसनीयता आ १५६ 'नियमक अपवाद' अधिकारक सामान्य नियमक सीमांकन करैत अछि।

ई पर्व विधि आ जीवनक बीच एक मूल भेद बनबैत अछि: नामक हाजिरी भरबासँ व्यक्ति सुरक्षित नहि भऽ जाइत; तकरा वास्तवमे भोजन, शिक्षाक बाट, श्रमक दाम आ हिंसासँ रक्षा चाही। १५१मे 'के पढ़ि सकैत अछि?'क प्रश्न पुरान शम्बूकक प्रसंगकेँ नव सामाजिक संस्थाक विमर्श बनबैत अछि। १५४मे लिखित सहमति केवल कागदक आकार नहि; के, कोन सूचना लेल, कतेक अवधि लेल स्वीकृति देत, ई प्रश्न नारी, बालक आ असुरक्षित श्रमिकक स्वत्वसँ जुड़ैत अछि।

ई सुधारक आख्यानक केन्द्र अछि, लेकिन चूँकि अनेक अध्याय स्वत्व आ अनुमति पर अलग-अलग फेर लौटैत अछि, कथाक लय चक्रवत् होएबाक जोखिम उठबैत अछि। पाठककेँ कखन पहिने लेल निर्णय विफल भेल, कखन सामाजिक शक्तिक नया रूप बनल—एहि अन्तरक स्पष्ट दृश्य बेसी आवश्यक। नियमक एकरीति प्रस्तावनासँ अधिक ओकर टूटब आ सुधारक अनुभव कथा बनैत अछि।

पर्व १४ • अश्वमेध (अध्याय १५७-१६८) : शासकक विजय सँ अभिलेखक यात्रा

१५७ 'छूटल घोडाक बाट' आ १५८ 'अर्जुनक पहिचान' पुरान अश्वमेधक राजनैतिक अधिकार पुनर्स्मरण करैत अछि। १५९ 'चलैत अभिलेख'मे सरिता अपन कागदक सन्दूकसँ संग यात्रा करैत छथि; १६० 'सरिताक योगदान', १६१ 'मैथिलीक अपना नाम', १६२ 'प्रमाताक दावा', १६३ 'पुरान पुस्तक नव भूमिका', १६४ 'उर्मिलाक देय', १६५ 'वाक्यक तात्पर्य', १६६ 'बुनकरक बाजार', १६७ 'बिना सम्राटक नाप' आ १६८ 'फेर लौटत प्रति' स्वामित्वक नव गणित रचैत अछि। विजय एक साम्राज्यक सीमा बढ़ाएब नहि, ज्ञान, श्रम आ मापक साझा पुनर्पुष्टि अछि।

१६१क छापाखाना, १६३क प्रूफ, १६४क श्रमक बकाया आ १६५क वाक्यक आशय अत्यन्त रुचिकर संयोजन अछि। पाठक बुझैत अछि जे छपल पुस्तक आखिरी सत्य नहि; लेखक, नकलकार, श्रमिक, पाठक आ पीडित व्यक्तिक बीच लगातार प्रतिवाद सम्भव रहबाक चाही। कथावाचक अपना क्रियाक पाछाँ प्रकाशनक नीति अपन कथानकमे प्रवेश करबैत अछि। एहि अर्थमे ई पर्व *metanarrative* अछि—कथा अपन कहबाक साधन पर विमर्श करैत अछि।

मुदा 'प्रत्येक प्रतिक संशोधन' अनन्त कथात्मक विस्तार बनि सकैत अछि। उपन्यास मानैत अछि जे साक्ष्य-व्यवस्था पूर्ण नहि; एहि विचारकें प्रत्येक घटनापर पूर्ण प्रक्रियामे फेर देखेबा सँ पठनक आगू बढ़बाक अनुभूति मंद होएत। पर अश्वमेधक सम्पूर्ण पुनर्कल्पना अद्भुत प्रश्न खड़ा करैत अछि: शासकक घोड़ा घूमि स्वामित्व जतबैत छल, आब दस्तावेज घूमि पुरान स्वामित्वपर प्रश्न उठबैत अछि।

पर्व १५ • आश्रमवासिक (अध्याय १६९-१८०) : वृद्धत्व, एकान्त आ अधिकार

१६९ 'धृतराष्ट्रक हाथ', १७० 'गान्धारीक प्रस्थान' आ १७१ 'कुन्तीक शेष वचन' महाभारत उत्तरकालक वृद्ध जीवनक दुःख खोलैत अछि। १७२ 'ईशानक कमरा', १७३ 'मैथिलीक दूरी', १७४ 'माइक औषधि', १७५ 'कबीरक चिट्ठी', १७६ 'सरिताक भोर', १७७ 'वृद्धक सहमति', १७८ 'विदुरक मार्ग', १७९

‘निजी क्षमा’ आ १८० ‘आश्रयक बाहर’ आधुनिक समाजमे निर्भरता आ निजताक जटिल सम्बन्धक कथा अछि।

विशेष रूपसँ १७७मे वृद्ध व्यक्तिक सहमति सोचबाक आवश्यकता एहि परियोजनाक पूर्वक बाल-स्त्री-श्रमिक अधिकारक विमर्श विस्तारित करैत अछि। सुरक्षा-उपाय आवश्यक, मुदा देखभालक नामपर सम्पूर्ण निर्णय लऽ लेब बुजुर्गकेँ विषयसँ वस्तु बना देत। १७९मे निजी क्षमा सार्वजनिक न्यायिक उत्तरदायित्वक विकल्प नहि; ई जीवनक अन्तिम सम्बन्धक भिन्न समय अछि।

नैरेटोलॉजीक एहि पर्वमे घटनाक ‘गति’ जानि-बूझि धीमा अछि। वृद्धक हाथ, दवा-पची, छोट चिट्ठी आ कोठरीक ताला समयक दीर्घ अनुभव बनबैत अछि। लेकिन कखनो एह छोट वस्तु पुनरावृत्त होइत गंभीर शोकक अतिव्याख्या बनि सकैत अछि। सर्वोत्तम स्थान ओ अछि जतए पात्र अपने कमजोरीक सहारे अपन अन्तिम मत बनबैत अछि, आ कथावाचक हुनका लेल समयसँ पहिने नैतिक फैसला नहि लिखैत।

पर्व १६ • मौसल (अध्याय १८१-१९२) : विजयक अवशेष आ नव मालिक

मौसल पर्व कथाक उत्सवविरोधी चेतना अछि। १८१ ‘यादवक उत्सव’ आ १८२ ‘मादक दिन’ सामाजिक विजयक अपव्यय एवं असुरक्षा देखबैत अछि; १८३ ‘स्मारकक ठेका’मे मृतकक नामसँ नई आर्थिक लाभक सम्भावना उघड़ैत अछि; १८४ ‘रुहानीक चुनाव’ सामूहिक सत्ता-पद्धति, १८५ ‘दानक शर्त’ दाताक नियन्त्रण, १८६ ‘ताराक भूल’ विशेषज्ञक आत्मसुधार, १८७ ‘रसोइक घाटा’ घरेलू अर्थनीति, १८८ ‘औजारक बाजार’ श्रमिकक अनिश्चित जीविका बनैत अछि।

१८९ ‘बलरामक दूराइ’ आ १९० ‘कृष्णक अन्त’ पुरान द्वारकाक अन्तसँ आधुनिक संस्थाक पुनर्भगक बृहत्तर तुलना खोलैत अछि। १९१ ‘सबटा टूटल नहि’ युद्धोत्तर पुनर्निर्माणक शेष सम्भावना, १९२ ‘नव मालिकक डर’ सुधारक बाद नव अधिकार-सम्बन्ध जन्मबाक आशंका। ई शिल्पगत रूपसँ अत्यन्त आवश्यक प्रतिरोध अछि: पिछला एक सय अस्सी अध्यायक नैतिक श्रमक बाद लेखक कहैत नहि जे सर्वदा सुधार टिकत।

पुनरावृत्तिक खतराक बावजूद मौसल पर्व कथा मे नई सामाजिक ऊर्जा अनैत अछि। विजयकें स्थायी निष्कर्ष नहि, नव लाभ-लोलुपता आ शक्ति-संघर्षक क्षण कहब राजनीतिक दृष्टिसँ तीक्ष्ण अछि। यदि नव ठेकेदारक मानस, बाजारक अलग आवाज आ उत्सवक सांस्कृतिक आनंदक जटिलता अधिक स्वतंत्र समय पावैत, एहि पर्वक कला आरो बहुविध होइत। तथापि 'स्मारक'क आर्थिक राजनीतिक आलोचना उपन्यासक सर्वाधिक आधुनिक संकेतसभमे एक अछि।

पर्व १७ • महाप्रस्थानिक (अध्याय १९३-२०४) : विरामक यात्रा आ घरवापसी

१९३ 'यात्राक घोषणा', १९४ 'द्रौपदीक बाट', १९५ 'भाइसभक दूरी' पुरान महाप्रस्थानक नैतिक प्रश्नकें स्वतन्त्र कथा-समय देइत अछि। १९६ 'फकीराक स्टेशन'मे भविष्यक शहरक यात्रा, १९७ 'पहिल कोठरी'मे आश्रयक वस्तु, १९८ 'मृतकक फोन'मे निजी अभिलेख, १९९ 'बिना नामक कथा'मे गोपनीयता, २०० 'शब्दक अन्तिम जाँच'मे कथनक प्रमाण, २०१ 'सीमातीर्थक विदाइ', २०२ 'कबीरक वापसी', २०३ 'साथक जीव' आ २०४ 'पर्वत नहि दरबज्जा' अन्ततः एक नव महाप्रस्थानक अर्थ दैत अछि: असाधारण पर्वतारोहणक बदला रोज खोलल जा सकनिहार समुदायिक दुआर।

२०० 'शब्दक अन्तिम जाँच'मा प्रत्यक्ष, अनुमान, अन्य कथनक श्रेणीकरण पुरान न्यायदर्शन आ आधुनिक पत्रकारिताक भेटक रूप अछि। २०३मे साथ चलैत जीवक महाकाव्यात्मक प्रसंग व्यक्ति-सहचर संबंधकें अन्तिम कसौटी बनबैत अछि। २०४क शीर्षक कहानी स्वयं पुरान महाकाव्यक नियत केन्द्र बदलि दैत अछि: मृत्यु-पार स्वर्गक बदला जीवितक घरक खुला प्रवेश।

अध्यायक संख्या १९३ सँ २०४ धरि कथाक *deceleration* स्पष्ट अछि। अनेक प्राथमिक रहस्य पहिलेहि बदलि चुकल अछि; आब कथाक कथनभङ्गी स्मृति, निर्णय आ सार्वजनिक जीवनक धीम परिवर्तनपर चलैत अछि। जँ पाठक केवल अपराधक समाधान खोजैत छथि, ई पर्व अत्यन्त दीर्घ लगत; जँ उपन्यासक मूल विषय 'कथनक अधिकार' बुझैत छथि, तखन यएह दीर्घता कथाक आवश्यक परीक्षण अछि।

पर्व १८ • स्वर्गारोहण (अध्याय २०५-२१६) : मृत्यु-पार नहि, अगिला पीढीक कक्षा

अन्तिम पर्वक २०५ 'स्वर्गक सूची'माह स्मारक-पट्टी आ सामाजिक बहिष्कारक प्रश्न अछि; २०६ 'उत्तरा आ परीक्षित' अगिला पीढीक अधिकार; २०७ 'जनमेजयक प्रश्न' कथा फेर किएक कहल जाए; २०८ 'उग्रश्रवाक श्रोता' कथक-श्रोताक सम्बन्ध; २०९ 'लव कुशक पाठ' रामायणक नव संवहन; २१० 'भामतीक चारिम सूत्र' विरोधी मत बचबाक आग्रह; २११ 'उदयनक शेष तर्क' पूर्वपक्षक स्वतन्त्रता; २१२ 'गङ्गेशक कक्षा' अनुभवसँ उदाहरण चुनबाक विधि; २१३ 'मैथिलीक अपना वाणी' श्रेय-वितरण; २१४ 'नैराक खाली जगह' शोकक अपूर्णता; २१५ 'वितरित अभिलेख' ज्ञानक सामुदायिक नियन्त्रण; २१६ 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक' जीवनक पुनरारम्भ अछि।

ई क्रम अनुष्ठानिक अन्तक स्थाने एक विस्तृत *afterlife of narration* बनबैत अछि। महाकाव्यक जनमेजय आ उग्रश्रवा कथा कहबाक/सुनबाक शक्ति पर प्रश्न उठबैत छथि; लव-कुश गायनसँ पूर्वजक पाठ नव श्रोताकें भेटैत अछि; दार्शनिक कक्षामे पूर्वपक्ष दबाओल नहि जाइत; आधुनिक पुस्तकमे सहलेखक आ कामगारक श्रेय फेर लिखल जाइत अछि। एहि अर्थमे समूच उपन्यासक 'समाप्ति' एतय पाठक-नागरिकक जन्म अछि, कोनो महान पौराणिक विजय नहि।

अध्याय २१४ एक बुनियादी सावधानी रखैत अछि: पुस्तकक लेखन आ समाजक सुधारक बावजूद नैराक मृत्यु नाबदलत। २१५ बँटल अभिलेख एकाधिकार रोकेत अछि, मुदा बचल मजदूरी नहि चुकबैत। २१६मे चूल्हा ओहि जीवनकें फेर आरम्भ करैत अछि जकरा अध्याय १मे कागद मारि देने छल। एतय *closure*क बदला *ethical continuation* उपलब्ध अछि। यएह महा-आख्यानक आवश्यक आत्मनियन्त्रण थिक।

आठ समीपपाठ : शब्द, दृश्य आ कथनक निर्णय

पहिल समीपपाठ : 'मृतकक रसोइ' (१)क त्रिस्तरीय काल

सत्रह वर्ष पुरान वास्तविक मृत्यु, एक दिन पुरान औषधिपर्ची आ आइक मृत्यु-सूचना—ई तीन समयक अन्तर आरम्भिक अनुच्छेदमे एक साथ जुड़ल अछि। सरिताक भात पकाएब 'जीवनक प्रमाण' बनेबाक भावुक संकेत भरि नहि, ओहि सरकारी व्यवस्थाक विरुद्ध एक शारीरिक प्रत्युत्तर अछि जे फोनक स्क्रीनपर हुनका अस्तित्वसँ हटा देने अछि। कथन-समय शरीरक समयसँ लड़ैत अछि। चूल्हाक आँच तुरन्त घटाएब पड़त; डिजिटल पंजीक सुधार लेल ककरो कार्यालयक निर्णयक प्रतीक्षा अछि। एहि तात्कालिकता-प्रतीक्षाक विषमता उपन्यासक पहला पाठकीय तनाव बनैत अछि।

कथावाचक सरिताक सम्पूर्ण भितरी मनोवृत्ति बतएबाक बदला क्रियाक ठोस क्रम दैत छथि; छोट बच्चा 'मृत्यु-सूचना'क संयुक्त अक्षर पढ़बामे अटकैत अछि। बच्चाक भाषिक कठिनता जीवनक संकटकें आश्चर्यजनक सामाजिक पठनक अवस्था बनबैत अछि। पाठक जँ एहि दृश्यकें केवल 'सिस्टमक भ्रष्टाचार'क उदाहरण मानि आगाँ बढ़ि जाएत, तँ ई कोमल शिल्पगत निर्णय छूटि जाएत: जकरा सिखायल जाइत अछि जे 'मृत्यु' कोना पढ़ब, ओकर आगाँ 'जीवित' स्त्री भोजन पकबैत छथि।

दोसर समीपपाठ : 'अपन फोन अपन शर्त' (११)क डिजिटल दृष्टि

संकेत फोटोमे लाल निशान, अस्पष्ट रसीद आ पहिचान-असमर्थ पीठ देखैत अछि। फोटो देखैत जे बात पूर्ण विश्वसनीय लागैत अछि, ओकरा पैघ करिते नब धुँधलापन जन्मैत अछि: एक वस्तु स्पष्ट होइत अछि, दोसर अस्पष्ट। एतय 'क्यामेरा झूठ बजैत अछि' सन सरल निर्णय नहि; दृश्य खुद्दे सीमित साक्ष्य अछि। संकेतक निर्णय—मूल चित्र अपन पास, जाँच लेल आवश्यक अंश, सार्वजनिक अपलोड नहि—कथाक नियन्त्रण-सूत्र बदलैत अछि। पाठककें सस्पेन्स भेटैत अछि, मुदा समाधानक नैतिक मूल्य चुकबए बिना नहि।

समकालीन नैरेटोलॉजीमे डिजिटल कथा-सामग्री पर विचार करिते ई दृश्य महत्वपूर्ण अछि। फोन एक कैमरा नहि, *gatekeeper of circulation* अछि। पाठक फोनपर देखल बातक ज्ञान पबैत छथि, मुदा फोटोमे रहनिहार दोसर व्यक्तिक पहचान पर पूर्ण अधिकार नहि। आधुनिक सामाजिक उपन्यास जखन एहन नियंत्रण-सम्बन्धक पात्रक आन्तरिक विकास बनबैत अछि, तखन तकनीक केवल नवीनता देखएबाक वस्तु नहि रहैत।

तेसर समीपपाठ : ‘बाहरक पाठशाला’ (३६)क ओसार

जतन तीन ईटक चबूतरा बनबैत अछि; एक ईट धँसैत अछि; कापी भीजल माटिमे खसैत अछि। ई छोट असफलता शिक्षा-नीतिक अमूर्त कथनसँ अधिक कहैत अछि। कक्षा-स्थानक भौतिक अधूरापन बच्चाक अक्षरमय भविष्यपर सीधा आघात करैत अछि। पाठकक दृष्टि कापीक भीजल कोनापर ठहरैत अछि, तखन सरकारी विद्यालयक प्रावधानक प्रश्न स्वतः उपस्थित होइत अछि। ई दृश्य सामाजिक आलोचनाक *defamiliarization* अछि: ‘विद्यालय’ कहल जगह वास्तविक विद्यालयक न्यूनतम भौतिक संरचनासँ वंचित अछि।

पन्ना द्वारा बच्चाक संकेत फेर बच्ची सँ पुष्टि करब, अपंगता वा भाषा-सहायताकँ परोपकार नहि बनएबाक पद्धति अछि। जतनकँ सुरक्षित तीन बाट बनबएबाक शिक्षा वास्तविक चलबाक क्षमता आ बच्चाक असहमतिक संग जुड़ैत अछि। एहि ठाम ‘शिक्षा समान’क वैचारिक वक्तव्य पात्रक क्रिया सँ साबित होइत अछि। कखनो नैतिक सार-वाक्य कम होइत तँ एहि दृश्यक शक्ति आरो खुलि सकैत छल; तथापि ठोस दृश्य अपन साहित्यिक प्रभाव बनेने रखैत अछि।

चारिम समीपपाठ : ‘रान्हनिहारक नाम’ (३७)क शब्द ‘सेवा’

रखसानाक प्रतिप्रश्न अछि—जँ कर्मचारीक प्रत्येक घड़ीक दाम अछि तँ साझा रसोइमे महिला श्रमिकक घड़ी बिना हिसाबक किएक? ई संवादक विशिष्टता विचारमे मात्र नहि, वक्ताक परिस्थिति मे अछि। चूल्हाक भीजल राख, ईटक असुरक्षित पंक्ति, बच्चाक कापीक धुँआक सम्भावना, अनाजक

अनिश्चित आपूर्ति—ई सभ पारिश्रमिकक प्रश्नकें देह आ समयक गम्भीरता दैत अछि। श्रमिक अपन अधिकारक पूर्वबोधक संग तर्क करैत अछि; ओ लेखकक 'सही' समाजशास्त्रीय घोषणाक प्रतिरूप मात्र नहि।

फरीदाक सामानक निष्पक्ष निरीक्षणक माँग धर्म-समुदाय आधारित पूर्वाग्रहसँ अलग अछि। पात्र कहैत छथि जे सामानक माप, सफाई आ दाम जाँचू; नाम देखिकऽ बहिष्कारक कारण लिखू। कथा एतय निषेधक आलोचना करैत अछि, मुदा स्वतः सर्व वस्तु मान्य घोषित करि नई जाँचसँ बचैत नहि। एहि *qualified claim*सँ पात्रक बुद्धि विश्वसनीय बनैत अछि।

पाँचम समीपपाठ : महेशक मृत्यु (७०-७२) आ साक्षीक भरोसा

अध्याय ७०क अखबार महेशक नाम नहि छापैत, मुदा पुरान गोदाम, पद आ पारिवारिक संकेत एकठाम राखि देइत अछि। प्रगट नामक अभाव गोपनीयताक प्रमाण नहि—ई सूचना-विन्यासक एक आधुनिक सत्य। ७१मे महेशक मृत्यु भऽ जाइत अछि; पाठक अपराधक तात्कालिक आ अपूरणीय परिणाम देखैत अछि। लेकिन लेखक बेटीक नदीक चित्रकें अभियोगक दस्तावेजक बराबरीमे 'सबूत' बनाबैत नहि। मृत्युक प्रमाण आ निजी प्रेमक अवशेष अलग जीवन-रेखा छथि।

७२मे कबीर बयानक दू महत्त्वपूर्ण वाक्य सुधरबैत छथि: दू आकृति देखलाक अर्थ दू प्रहार करनिहार नहि, आ अन्हारमे लाल-जकाँ देखल कपड़ा निश्चित लाल नहि। ई कथात्मक विधि रहस्य-उपन्यासक सामान्य सर्वज्ञ प्रकाशन-विवेक उलटैत अछि। देखनिहार अपन बयान घटाकऽ मजबूत करैत अछि। साक्षीक भरोसा अधिक दावा करबासँ नहि, अनुमानक सीमा स्वीकार करबासँ प्राप्त होइत अछि। यएह उपन्यासक प्रमाणदर्शनक जीवित रूप अछि।

छठम समीपपाठ : 'सत्ताइसक मिलान' (९६)क रहस्य-विरोधी उद्घाटन

सत्ताइस पाँति मिलब पाठकक प्रतीक्षित उपलब्धि अछि। पारम्परिक रहस्य-कथा एतय एक अपराधी, एक सारा-समाधान, एक अन्तिम रहस्योद्घाटन दऽ सकैत छल। मुदा उपन्यास नामक पंजीक मिलानकें हत्या-

जाँच, गायब बच्चाक खोज आ देवव्रतक निर्देश सम्बन्धी आरोपसँ अलग राखैत अछि। ई *multiple unresolved plotlines*क सजग प्रयोग अछि।

अध्यायक मध्य सुमित्राक तकनीकी खाका आ सार्वजनिक समकोणक अन्तर बनैत अछि: सर्वसाधारण निर्माण-पद्धति एक वस्तु, विशेष परीक्षण आ प्रोटोटाइप पर श्रमिकक श्रेय दोसर। ‘साझा’ कहि कऽ मालिकीक अधिकार मेटा देब आ ‘निजी’ कहि सामूहिक सुरक्षा रोकि देब—दुनू गलत। एहि ठाम दस्तावेजी कथाक जटिलता व्यक्तिक श्रमक इतिहास उद्घाटित करैत अछि।

सातम समीपपाठ : दार्शनिक समापन (२१०-२१२)

२१०मे ‘तत्तु समन्वयात्’क प्रसंगमे मृत श्रमिकक नाम स्मारकपर लिखबाक प्रश्न आउ भुगतानक बकाया अलग राखल जाएत अछि। ई एक प्रकारक *category mistake*क प्रतिरोध अछि: प्रतीकात्मक सम्मान आर्थिक न्यायक समतुल्य नहि। शास्त्रीय समन्वयक अर्थ भिन्न तर्कक विलयन नहि। २११मे उदयनक विद्यार्थी पूर्वपक्षक आपत्तिक नकल करैत अछि; तकर श्रमक हिसाब गुरुक उत्तरक श्रमसँ अलग दर्ज करबाक आग्रह, दार्शनिक बहसकें सामाजिक श्रमक रूपमे दृश्य बनबैत अछि।

२१२ ‘गङ्गेशक कक्षा’क प्रश्न—उदाहरण ककर जीवनसँ लेब—दार्शनिक कक्षाक नैरेटोलॉजिकल कसौटी अछि। सिद्धान्तक उदाहरण केवल तर्कसम्बन्धी उपयोगिता नहि, समाजमे ककरा देखल जाइत अछि तकर चयन सेहो करैत अछि। जे विद्वत्ता स्त्रीक धुलाई, मजदूरक नाम आ बच्चाक सीमित दृश्य-स्मृति पर विचार करैत अछि, ओ अपन शास्त्रार्थक सीमा पहचानैत अछि। किन्तु शास्त्रीय मूल आशय आ आधुनिक उदाहरणक अलग संसारकें समाहित करैत समय साधारण सामाजिक उपदेशक जालसँ बचब जरूरी अछि।

आठम समीपपाठ : ‘नैराक खाली जगह’ (२१४) सँ ‘कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक’ (२१६)

२१४मे चारि लोक नैराकें चारि तरहसँ स्मरण करैत छथि; स्मारकक एकही अभिव्यक्ति सब स्मृतिक वैध प्रतिनिधि नहि। कथा निजी अभिलेखक अघोषित प्रकाशन रोक्कैत अछि, मुदा निजी शोककें कर्तव्य बनबैत नहि।

नैराक अनुपस्थिति उपन्यासक अन्तिम असहज सत्य अछि; सरिताक श्रम प्रकाशित भऽ जाएत, तइयो बेटी नहि लौटतीह।

२१५मे पोखरिक सामूहिक उराहि पुनः आरम्भ होइत अछि; बालकक असुरक्षित श्रमक नाम लिखि देब ओकर सुरक्षा-भंगक उपचार नहि। तखन २१६मे बच्चा चाभीक व्यवस्था पुछैत अछि; अन्तिम उत्तर कोनो दैवी अभिषेक नहि, 'दुआर खोलबाक जिम्मेदारी कोना बाँटल जाय' अछि। सरिता चाउरक एक दाना फेंकबाक बदला अलग रखैत छथि। कथा भातक साधारण कृतिमे आन्तरिक युद्धक शेष अर्थ समेटैत अछि, मुदा हानि मेटा देबाक चेष्टा नहि करैत। ई समापनक परिपक्व शिल्प अछि—अपूर्ण न्याय, अप्रतिस्थाप्य मृतक आ चलैत जीवन एक संग रहैत अछि।

सम्पादकीय परीक्षण-सूची : उपलब्धि आ सीमा

कथानकक स्तर पर आरम्भक रहस्य आ अन्तक भोजन एक सुसंगत वृत्त बनैत अछि; बीचक अनेक उपकथामे समान शक्ति नहि। काल-विन्यासक स्तर पर १८ पर्व आ सात काण्डक दोहरी व्यवस्था आधुनिक भविष्यकालक संग मौलिक आलोचनात्मक प्रयोग अछि; प्रत्येक संक्रमणक समकालीन औचित्य समान तीक्ष्ण नहि। दृष्टिबिन्दुक स्तर पर साक्षीक ज्ञानसीमा आदरित अछि; कथावाचकक स्पष्ट नैतिक सार कभी पात्रक अम्बिगुइटी घटबैत अछि। चरित्र-निर्माणक स्तर पर स्त्री, शिल्पी, घुमन्तु आ असुरक्षित परिवार अपन निर्णयक अधिकारी छथि; १५७ समाजवृत्तकें समान कथा-गहनता देब असम्भव बनैत अछि। भाषा स्तर पर वस्तुगत बिम्ब, रसोइ, कागद आ जलक बनावट बलवान अछि; निरन्तर 'भोर-कागद-निर्णय-अपूर्णता'क रीति आवृत्तिक प्रश्न खड़ा करैत अछि।

पाठक-समाजक स्तर पर ई उपन्यास प्रशासनिक कागद पढ़बाक साहित्यिक अभ्यासनायोग्य बनबैत अछि। एहि साधनसँ ओ साक्षीक नैतिकता, प्रकाशित सहमति, मृतकक गोपनीयता, श्रमक आर्थिक मान्यता, सार्वजनिक ज्ञानक वितरण आ संस्थागत संशोधनक प्रश्नकें कथा बनबैत अछि। ई सम्भवतः ओकर सर्वाधिक विशिष्ट योगदान अछि। लेकिन एहि योगदानकें पात्रक

असहायता, प्रेम, भय, आन्तरिक द्वन्द्व आ हँसीक कीमत पर पूरा नहि करबाक साहित्यिक दायित्व सेहो रहैत अछि। एक महा-उपन्यासक विचारक विजयोत्सव अन्तिम कसौटी नहि; ओकर मानव-अनुभवक जटिलता महत्वपूर्ण अछि।

आधारग्रन्थ आ सैद्धान्तिक सन्दर्भ

प्राथमिक पाठ: गजेन्द्र ठाकुर, 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]', प्रथम संस्करण २०१९; प्रस्तुत ६ × ९ इञ्च मुद्रण-विन्यासक २१६ अध्यायवला पूर्ण पाण्डुलिपि। पाण्डुलिपिक अध्याय-संख्या आ शीर्षक मूल अनुक्रम अनुसार राखल गेल अछि।

जेरार जनेत, *Narrative Discourse: An Essay in Method* (अंग्रेजी अनुवाद, १९८०); सीमोर चैटमैन, *Story and Discourse* (१९७८); मिखाइल बाख्तिन, *The Dialogic Imagination* (अंग्रेजी अनुवाद, १९८१); मिएके बाल, *Narratology: Introduction to the Theory of Narrative*; पॉल रिकर, *Time and Narrative*; सूज़न एस. लैन्सर, *The Narrative Act* (१९८१); रोबिन वॉरहोल, *Gendered Interventions* (१९८९)। एहि ग्रन्थसभक शब्दावली विश्लेषणक औजार रूपेँ प्रयुक्त अछि; मूल मैथिली उपन्यासक निर्णायक अर्थ ओहिसँ स्वतः प्राप्त नहि मानल गेल अछि।

साहित्येतिहासक आकार-सम्बन्धी वर्तमान उल्लेख लेल 'विदेह'क उपलब्ध ग्रन्थसूची आ 'गोहि सभक बीच जलसमाधि'क ३०१ अध्याय सम्बन्धी २०२६क प्रकाशित आलोचनात्मक विवरण देखल गेल अछि। ई समीक्षा समस्त मैथिली उपन्यासक तुलना करैत स्वतन्त्र आकार-सर्वेक्षण प्रस्तुत नहि करैत अछि। एहि कारण प्रारम्भक ऐतिहासिक क्रमकेँ लेखक-प्रकाशकीय सन्दर्भक घोषित दावाक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि, सांख्यिकीय प्रमाणित सार्वदेशिक अनुक्रमक रूपमे नहि।

परिशिष्ट : २१६ अध्यायक आरम्भ-अन्त साक्ष्य-पंजी

एहि अध्यायवार अभिलेखमे प्रत्येक अध्यायक आरम्भिक आ अन्तिम वाक्यक संक्षिप्त पाठ-संकेत देल गेल अछि। ई संकेत कथासारक विकल्प नहि, कथनक आरम्भ-समापनक तुलना लेल पाठ-उपकरण अछि। उद्धृत अंश अनुक्रमानुसार मूल पाण्डुलिपिसँ लेल गेल अछि। अध्यायमे कथित घटना आ कथावाचकक सर्वज्ञ दावा अलग रह्य, ताहि सावधानीसँ उद्धरण पढ़ल जाउ।

पर्व 1 • आदि | बालकाण्ड | अध्याय 1-12

001 • मृतकक रसोइ [पाठ-विस्तार : 2,061 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुरमे आषाढक ओहि भोर सरिताक मृत्यु-सूचना तखन पहुँचल जखन ओ चाउरक डिब्बामे अपन मृत पतिक औषधिपर्ची... | अन्तिम संकेत : घरमे तथापि चूल्हाक आगि छल, पानिक लोटा छल आ साँझ फेर रान्हवाक काज छल। सरिता...

002 • सत्ताइस नाम [पाठ-विस्तार : 2,172 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : आषाढक दोसर भोरमे नैरा उठलीह तँ रसोइक दरबज्जा आधा खुजल छल। भीतर सरिता चाउर नहि, कागद... | अन्तिम संकेत : बाहर रेल गेल। पानि दीबालक लग एखनहुँ ठाढ़ छल। घरमे साँझक चूल्हा जरल, आ नैरा...

003 • चौकक समय [पाठ-विस्तार : 2,387 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रेल-चौकक चायवला तेसर बेर केतली उतारि रहल छल, मुदा फकीरा अपन गिलास एखन धरि नहि उठौने... | अन्तिम संकेत : गिलासक गरमी हुनकर अँगुरीमे उतरल। चौकपर लोक अपन-अपन बाट पकड़ि रहल छल। नदीक ओहिपार हीराक...

004 • नदीक पहिल घर [पाठ-विस्तार : 2,340 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हस्तिनापुरक पुरान समयमे यमुनाक घाटपर भोरक नाव छोड़बाक पहिने सत्यवती अपन पिताक माछक टोकरिसभ खोलि देखैत...

| अन्तिम संकेत : बाहर तिलवाहक दिशा सँ साँझक हवा आयल। नदीक पानि एखनहुँ अपन पुरान बाट नहि खोलने...

005 • जनकक माप [पाठ-विस्तार : 2,203 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : मिथिलाक जनककाल। राजगृहक पछिला अँगनामे नव प्रकोष्ठक नौव खुनल जा रहल छल। रातिक पानि गड़हीमे जमा... | अन्तिम संकेत : बाहर पोखरिक दिससँ टेलाक चक्काक आवाज आयल। सुधरल चूनक रेखा रातिक भीजमे मेटा सकैत छल,...

006 • घरक पहाड़ा [पाठ-विस्तार : 2,182 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक भात चढ़ेनाइ सँ पहिने सरिता चौकीक नीचाँ राखल पुरान बस्ता बाहर निकाललनि। बस्ताक पट्टीमे गँठरी... | अन्तिम संकेत : नैरा पुछलनि नहि जे के। ओ चाउरक मुट्ठी हाँडीमे छोड़ि देलनि। पुरान चौकीक अंकोंक कथा...

007 • पाँच पीढ़ीक चौकी [पाठ-विस्तार : 2,300 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सरिता जे एक मुट्ठी चाउर बेसी हाँडीमे छोड़ने छलीह, ओकर भात साँझ धरि ठंढा नहि भेल।... | अन्तिम संकेत : भातक हाँडीमे कने बचल छल। संकेत पूछलक जे काल्हि नतिनी आएत तँ ओकरा लेल भुजल...

008 • सीमातीर्थक चिट्ठी [पाठ-विस्तार : 2,444 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे सरिता सन्दूकक उपर राखल लिफाफा उठौलनि तँ ओकर एक कोना नमीसँ नरम पड़ि गेल छल।... | अन्तिम संकेत : घर लौटैत सरिताक झोरामे पहिनुका लिफाफा नहि छल। ओ खाली जगहमे नतिनीक लेल मखानक छोट...

009 • बन्द बाहा [पाठ-विस्तार : 2,221 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बरकी पोखरिक पछिला कात घास एतेक ऊँच भऽ गेल छल जे ओहिसँ ऊपर उठल तिनका देखिकऽ... | अन्तिम संकेत : घर घुरैत नैराक जूतामे बाहाक कादो लगल छल। सरिता दरवज्जापर पानीक लोटा रखलनि। “आइ की...

010 • नामक छाँह [पाठ-विस्तार : 2,306 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रातिक वर्षा थमलापर बरकी पोखरि सँ गोदाम धरि जाएवला पगडंडी पर पानिक महीन परत चमकि रहल... | अन्तिम संकेत : रातिमे नैरा सरकारी निरीक्षणक प्रति फेर देखलनि। ओहिमे पुरनाधारक कागद-स्रोत, उपलब्ध नाप आ बाँकी अनुमति...

011 • अपन फोन अपन शर्त [पाठ-विस्तार : 2,096 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे संकेत अपन फोनक पर्दा सरिताक पुरान सूती आँचलसँ पोछलक। पर्दापर गोदामक दीवाल छल, दीवालपर लाल... | अन्तिम संकेत : राति परलापर संकेत फोनमे मूल तस्वीर फेर देखलक। लाल रेखा एखनहुँ ओतबे लाल छल। ओ...

012 • घाटक पाछाँ शहर [पाठ-विस्तार : 2,239 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बरकी पोखरिक पछिला घाटपर भोरक पहिल धूप पड़िते रमणी बिन्द अपन जाल उल्टा कऽ पसारि देलनि।... | अन्तिम संकेत : घाटक छोट नावसभ धीरे-धीरे भीजैत काठ जकाँ पानिमे भारी होमए लागल छल। बच्चासभ एक-एक कऽ...

पर्व 2 • सभा | अयोध्याकाण्ड | अध्याय 13-24

013 • बजाओल गेल मृतका [पाठ-विस्तार : 2,262 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सहायता-वितरण सभाक मञ्चपर सरिताक नामवला पट्टी उल्टा राखल छल। लाल कपड़ाक ऊपर ओकर सेतो कात उघरल... | अन्तिम संकेत : पाछू मुहल्लामे रुहानीक आश्रयक स्त्रीसभ अगिला दिनक सभाक सूचना पढ़ि रहल छलीह। ओहि सभामे रुहानीकें...

014 • प्रतिनिधिक कुर्सी [पाठ-विस्तार : 2,356 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अगिला भोर विदेहपुरक सामुदायिक भवनमे कुर्सी सभकें झाड़ि-पोछि सीधमे राखल जा रहल छल। सभसँ आगाँ पाँच... | अन्तिम संकेत : घरक कात पहुँचिते चम्पा अपन घड़ी देखलीह। काल्ह कामपर जेबाक छल, उपचारक भाड़ा सेहो निकालबाक...

015 • द्रौपदीक प्रश्न [पाठ-विस्तार : 2,425 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हस्तिनापुरक सभागृहमे ओहि दिन पासाक आवाज बहुत छोट छल। चमकैत फर्श, उच्च आसन, सुवासित धूप आ... | अन्तिम संकेत : दूर बरकी पोखरिक अघटपर पानिक सतहमे शहरक दू बत्ती लहरि रहल छल। लहरिसँ बत्ती टूटैत...

016 • विकर्णक बादक मौन [पाठ-विस्तार : 2,465 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हस्तिनापुरक सभागृहमे विकर्ण अपन आसनक काठपर राखल हथेली धीरे सँ उठा लेलक। काठ गरम छल; ओ... | अन्तिम संकेत : विदेहपुरमे ओहि राति समितिक मुहरवला पन्ना तीन अलग घरमे पहुँचबाक तैयारीमे छल। एक प्रति रुहानीक...

017 • कैकेयीक देय [पाठ-विस्तार : 2,295 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अयोध्याक राजमहलमे पहर बदलबाक घण्टी बजल तँ मन्थरा तेलक छोट दीपक नीचाँ कऽ देलीह। रात्रिक पहरदार... | अन्तिम संकेत : विदेहपुरमे नैरा रातिक कापी बन्द करबाक पहिने दू पाँति लिखलीह —‘वचन देनिहार’ आ ‘वचनक भार उठौनिहार’।...

018 • उर्मिलाक राति [पाठ-विस्तार : 2,264 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अयोध्याक राजमहलमे भोरक पानि भरबाक घड़ाक आवाज पहिने उठल, लोकक स्वर बादमे। चबूतरापर राखल पीतलक कलशमे... | अन्तिम संकेत : नैरा चुपचाप खिड़कीक परदा खींचि देलीह। ओ सरिताक मृत्यु-प्रविष्टि आ सत्ताइस नामक पन्ना वाला कापी...

019 • चम्पाक सन्देश [पाठ-विस्तार : 2,362 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक उजासमे चम्पा अपन फोनक पर्दापर पड़ल एकटा अँगुरीक निशान पोंछि रहल छलीह। राति अस्पतालसँ घुरलाक... | अन्तिम संकेत : दूर भवनक भीतर सचिव बन्द लिफाफा अलमारीक अलग खानामे रखि रहल छल। लिफाफापर ओकरा जे...

020 • जल्दी प्रकाशन [पाठ-विस्तार : 2,497 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बरखाक रिमझिम पानि थमि गेल छल, मुदा नगरक सामुदायिक भवनक बाहरी सीढ़ी एखनहुँ पिच्छर छल। भोरमे... |

अन्तिम संकेत : रातिक अन्तिम पहरमे चन्द्रा अपन वाद्यक पेटी खोलि एकटा ढीला तार कसलीह। गीतक अभ्यासमे आधा...

021 • ककर आवाज [पाठ-विस्तार : 2,365 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सामुदायिक भवनक पश्चिमी कोठरीमे पङ्खा चलैत छल, मुदा ओकर घरघराहटसँ मेजपर राखल ध्वनि-यन्त्रक छोट लाल बत्ती... | अन्तिम संकेत : दोसरा दिन समिति-कार्यालयक सूचना-पट्टपर जाँच-पर्चाक सार्वजनिक अंश चढल। पर्चाक नीचे लिखल छल जे रुहानीक विरुद्ध...

022 • घरक आदेश [पाठ-विस्तार : 2,464 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सूचना-पट्टक कागद भोरक सीलनमे कोनासँ मुड़ि गेल छल। नैरा ओकरा सोझ करए लेल हाथ बढौलीह, फेर... | अन्तिम संकेत : सहरक दोसर कात कार्यालयक बाबू रजिस्टरमे प्राप्तपत्र सभक क्रम लिखि रहल छल। नैराक ठेकाक अर्जीक...

023 • भरतक अस्वीकार [पाठ-विस्तार : 2,239 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अयोध्याक राजभवनमे बरामदाक दीया दिन चढलाक बादो जैरैत छल। तेलक गन्धमे भीजल बत्ती किछु कालसँ काटल... | अन्तिम संकेत : नैरा रातिमे कापी खोललीह। महेशक अनुमति तोड़बाक अपन भूलक बाद ओ छोट-छोट वचनक सीमा अलग...

024 • बाहरक ओसार [पाठ-विस्तार : 2,442 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे सरिताक घरक ओसारक बाल्टी भरि गेल छल। रातिभरि छप्परसँ टपकल पानिमे आकाशक कोनो छवि नहि... | अन्तिम संकेत : बाहरसँ रेलक छोट सीटी सुनाइ देलक। संकेत खिड़की खोललक तँ पानि-भीजल हवा भीतर आयल। सरिता...

पर्व 3 • वन | अरण्यकाण्ड | अध्याय 25-36

025 • रेलमे खाली जगह [पाठ-विस्तार : 2,295 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रेलचौकक किरायाक कोठरीमे भोरक पहिल आवाज रेलक नहि, पानिक खाली बाल्टीक छल। सरिता नल खोलने छलीह;...

अन्तिम संकेत : संकेत कापीक बीच एकटा खाली घर बनौलक—‘दुपहरक गाड़ी’। नैरा हँसलीह, “ई घर किएक?” संकेत कहलक,...

026 • गुहक तट [पाठ-विस्तार : 2,321 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक ट्रेनसँ उतरनिहार लोकक भीड़ घटलाक बाद फकीरा अपन छड़ीक नोकसँ रेलचौकक पाथर ठोकलनि। नैरा हुनकर... | अन्तिम संकेत : संकेत चित्रक नावमे एकटा खाली ठाम बनौलक। “ई ककरा लेल?” सरिता पुछलनि। ओ उत्तर देलक,...

027 • शबरीक भोर [पाठ-विस्तार : 2,490 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : दण्डकारण्यक एक भोरमे शबरी भिजल लकड़ीक दू टा ढेरी अलग कऽ रहल छलीह। जे काठ भितरासँ... | अन्तिम संकेत : दण्डकारण्यक दूरस्थ आश्रममे सेहो दिन ढलैत शबरी चूल्हा साफ कऽ रहल छलीह। मृगा अपना लेल...

028 • हिडिम्बाक सन्धि [पाठ-विस्तार : 2,474 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : दण्डकारण्यसँ दूर, पाण्डवसभक वनयात्राक एक पड़ावमे, हिडिम्बा भोरसँ पहिने टूटल बाँसक तीनटा टुकड़ा एकठाम जमा करैत... | अन्तिम संकेत : रातिमे देवकीक छोट बकरी नवा दोरी चबैत रहल। देवकी ओकरा सरपट छड़ा कऽ कहलीह, “एहि...”

029 • बच्चा चोर [पाठ-विस्तार : 2,411 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : राति धरि भीजल रहल वनफाटकक फोटू भोरमे रेलचौकक चाय-दोकान पर सूखल कागद जकाँ फैलि गेल। दुकानदारक... | अन्तिम संकेत : नैरा छोट टेबुलपर दू लिफाफा रखलीह। पहिलमे वायरल दृश्यक सन्दर्भ-सुधारक आवेदन, दोसरमे मिथुनक खोजक लिखित...

030 • अहल्याक आवाज [पाठ-विस्तार : 2,296 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक धूप लताक आँगनमे एकटा खाली थारीपर पड़ि रहल छल। राति ओ मिथुन लेल भात ढाकि... | अन्तिम संकेत : राति लताक घरमे ओहि खाली थारीपर फेर भात राखल गेल। एहि बेर लता ओकरा ढाकि...

031 • एकलव्यक सीख [पाठ-विस्तार : 2,352 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हाटक भित्तिपर लाल घेरावला गलत तस्वीर उतरलाक दोसर भोर साजिद अपन कैमरा नहि, एकटा खाली काठक... | अन्तिम संकेत : ओसार बन्द करबाक समय जतन अपन छोट कापी माइक झोरामे रखलक। ओकर उल्टा 'ज' एखनहुँ...

032 • अथातो ककर [पाठ-विस्तार : 2,537 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे ओसारक भीजल माटिपर जतन अपन नाम लिखबाक अभ्यास करैत छल। ओकर कापीक पहिल पन्नापर उलटल... | अन्तिम संकेत : राति विदेहपुरक अस्थायी ओसारमे मीरा कक्षा-बही बन्द करैत छलीह। रेवाक बच्चासभक नामक आगाँ 'अस्थायी उपस्थिति',...

033 • दीपक आ कागद [पाठ-विस्तार : 2,312 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अगिला भोर मृणाल जखन कागद सुखएबाक ओसारमे पहुँचलि, लोहना पहिनहि सँ माटिक दू थारीमे पानि नापि... | अन्तिम संकेत : सरिता घर घुरैत समय दीपक ढाकि देलीह। जतन अपन अभ्यासपत्रक गाँठ कसि रहल छल; बिरसी...

034 • अनदेखल कारण [पाठ-विस्तार : 2,540 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : पाठशालाक भिजल ओसारमे हेमा देव पहिने कागद नहि, काठक तख्ती नापलीह। तख्तीक दहिना किनारसँ पुरान कील... | अन्तिम संकेत : नैरा लौटैत समय ओसारक बाहरी देवालपर पडल दू छाँह देखलीह—एक तख्तीक, एक बाँसक टेकक। दुनू...

035 • गवयक पहिचान [पाठ-विस्तार : 2,279 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विद्यालयक ओसारमे रातिभरि लटकल तख्ती उतारल जा रहल छल। नसीमाक बान्हल सूतक गाँठ ठीक छल, मुदा... | अन्तिम संकेत : ओहि राति नैरा अपन कापीमे तीन पाँति लिखलीह—'सादृश्यः देखल'; 'पहिचानः अप्रमाणित'; 'अपराधः असिद्ध'। ओकर नीचाँ...

036 • बाहरक पाठशाला [पाठ-विस्तार : 2,414 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विद्यालयक ओसारमे जतन तीनटा ईट जोड़ि अपन कापी रखबाक चबूतरा बनौने छल। बिहानक पानि उतरि गेल... | अन्तिम संकेत : राजइनारक कात अस्थायी बाँसक अवरोध रातिक अन्हारमे स्थिर छल। जंगला ढील छल, पानि परीक्षण शेष...

पर्व 4 • विराट | अरण्यकाण्ड | अध्याय 37-48

037 • रान्हनिहारक नाम [पाठ-विस्तार : 2,175 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बरखा थमल छल, मुदा रुखसानाक चूल्हिक नीचाँ राख एखनहुँ भीजल छल। ओ विद्यालयक ओसारपर तीनटा ईट... | अन्तिम संकेत : ओ विद्यालयसँ बाहर निकललीह तँ राजइनारक कात अस्थायी बाँसक अवरोध ओही ठाम छल। पानिक जाँच...

038 • बृहन्नलाक कक्षा [पाठ-विस्तार : 2,332 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रुखसाना दोसर दिन भोरमे भानसघर नहि गेलीह। ओ अपना घरक दुआरपर छोट पीढ़ी राखि काल्हक रसीद... | अन्तिम संकेत : विद्यालयक ओसार खाली भेलापर फट्टाक नया शीर्षक बाँससँ उतारि कऽ भीतर राखल गेल। मंचक अनुमति,...

039 • ताँतीक देय [पाठ-विस्तार : 2,414 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सबेरे करघाक पहिल चोट परेलाक चिरबिराहटसँ अलग पहिचानल जाइत छल। पार्वती ताँतीक आँगनमे रातिसँ तानल सूतक... | अन्तिम संकेत : विद्यालयक फट्टा पर 'पूर्ण पैकेज' वाली पाँति काटि देल गेल। नव पन्नामे नमूना बनएबाक पाँच...

040 • कपड़ा पंजी [पाठ-विस्तार : 2,368 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : घाटपर कपड़ा पसारबाक पहिने उर्मिला पाटपर हाथ फेरलीह। रातिक पानि खसि गेल छल, मुदा पत्थरक बीचक... | अन्तिम संकेत : घर घुरबाक बाटमे उर्मिला अपन झोरामे पंजीक पन्ना फेर सही कएलीह। काल्हि हुनकर मजदूरीक दू...

041 • बरहीक हस्ताक्षर [पाठ-विस्तार : 2,258 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : ललित विश्वकर्मा भोरमे अपन कार्यशालाक फाटक खोललनि तँ दरबाजाक नीचाँ दबाएल कागद भीजि कऽ गोल भऽ... | अन्तिम संकेत : ललित नमूना हाथमे लेने शकुन्तलाक कुम्हरौटि दिस तकलनि। ओहि दिससँ भट्टीक धुआँ उठि रहल छल,...

042 • माटिक भविष्य [पाठ-विस्तार : 2,206 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक घाम एखन कुम्हरौटिक आबाक भीजल छप्पर धरि नहि पहुँचल छल। शकुन्तला पंडित चाकक कात दू... | अन्तिम संकेत : रातिक भोजनमे भात, साग आ अमीनाक दोकानसँ किनल थोड़े अचार छल। शकुन्तला नतिनीक कुर्तीक ढील...

043 • कसेरा आ सोनार [पाठ-विस्तार : 2,263 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक उजासमे मीना साह पीतलक एकटा बासन उलटि कऽ हथौड़ीक छोट चोट देलनि। धातुसँ निकसल स्वरमे... | अन्तिम संकेत : राति पडैत बाजारक गल्लीमे धातुक छोट चोटक स्वर फेर उठल। मीना पहिल बासनक जोड़ पूरा...

044 • लोहारक औजार [पाठ-विस्तार : 2,479 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे हरिनारायण शर्माक भट्टीक आगि एखन लाल नहि, हलुक पीयर छल। ओ लोहेक पातर पटरी चिमटासँ... | अन्तिम संकेत : अजित निहाइक ऊपर छोट झुनझुना लटकौलक। हवा लागल तँ तीन पातर टुकड़ामे सँ दू बजल,...

045 • जोलहाक खेप [पाठ-विस्तार : 2,271 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक अधबुझल उजासमे सुकठीक खटालक छप्पर सँ पहिल बूँद टपकल तँ विनोद केवर्त बाँसक ढकनी उलटि... | अन्तिम संकेत : घर घुरि यूसुफ रातिक बहीमे दू नवा पन्ना खोललनि। पहिलमे असली थानक मजदूरी, सूत आ...

046 • धोबि रंगरेज धुनिया [पाठ-विस्तार : 2,425 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : उर्मिला रजक घाटक पाटपर धोएल उज्जर चादर पसारि ओकर चारू कोना पत्थरसँ दबा रहल छलीह। भोरक... | अन्तिम संकेत :

रातिक अन्तिम पहरमे रहीमक घरमे छोट गद्दाक खोल फेर फुलि उठल। बेटी हाथसँ कपासक गठरी...

047 • फाटकक माप [पाठ-विस्तार : 2,248 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हीरा सहनी भोरमे फाटक लग नावक पुरान बाँसक लग्गी जमाकऽ ओकरा हिलौने छलाह। लग्गीक नोक ऊपरसँ... | अन्तिम संकेत : राति नैरा चारि पुरान अलग-अलग साक्ष्यरेखाक बगलमे नव पन्ना राखलीह —‘फाटकक पहुँच आ मापक प्रमाण’। एहि...

048 • छद्मक तीन कारण [पाठ-विस्तार : 2,376 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरे श्याम मल्लिक पुरान मजदूरी-सूचीक मुड़ल कोना सीधा करबाक लेल ओकर ऊपर अपन हथेली राखने रहथि।... | अन्तिम संकेत : नैरा रातिक कापीमे तेसर बेर एहि सप्ताह ‘मूल देखबाक माँग’ लिखलीह, मुदा एहि बेर संग...

पर्व 5 • उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड | अध्याय 49-60

049 • सहयोगक दाम [पाठ-विस्तार : 2,268 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : फाटकक लग सबेरक पहिल आवाज हथौड़ीक नहि, बाँसक पातर छाल उतारबाक छल। श्याम मल्लिक घुटना लग... | अन्तिम संकेत : रातिमे सिंचाइ-पट्टाक प्रतिनिधि नगर कार्यालयक बाहर सार्वजनिक आदेश पढैत रहल। तारा आ श्यामक नाम लग...

050 • सुग्रीवक भय [पाठ-विस्तार : 2,410 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : फाटकक पीयर पट्टी पर सबेरक ओस एखन धरि अटकल छल। उमा राजधोब तीनटा भीजल चादर नीकसँ... | अन्तिम संकेत : तारा नाप-बहीमे तीन खण्ड बनौलीह। पहिल—आजु देखल जोखिम, जेकरा लेल अस्थायी सुरक्षा रहत। दोसर—जाहि घरक...

051 • ताराक गणना [पाठ-विस्तार : 2,419 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : फाटकक दहिन कात सबेरक पहिल छाँह पहुँचए धरि तारा बिनौट तीन बेर डोरी खोलि चुकल छलीह।... | अन्तिम संकेत : राति

तारा अपन नाप-बही फेर खोललीह। तीन खण्डक नीचाँ ओ एकटा नव पाँति लिखलीह—‘जेकर हितक...

052 • अङ्गदक कल्ह [पाठ-विस्तार : 2,376 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : फाटकक पाछाँक पथारमे भोरसँ पहिने नन्दू नट बाँसक दू खम्भा जमीनसँ निकालि रहल छलाह। रातिक भीजल... | अन्तिम संकेत : नैरा घर घुरैत तीन कागद अलग-अलग लिफाफामे रखलीह—मंचक समय आ मजदूरीक सहमति, वीडियोक अधिकारक अपूर्ण...

053 • रुहानीक चाभी [पाठ-विस्तार : 2,310 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पहिल उजासमे रुहानी आश्रयक मुख्य फाटकक जंग लागल ताला हाथमे लऽ ठाढ़ छलीह। बरखाक पिछिला... | अन्तिम संकेत : बाहरक बेंचपर एकटा खाली कप रहि गेल छल। रुहानी ओकरा धोएबाक लेल उठबैत छलीह, तखने...

054 • अनुष्ठान बिना प्रधान [पाठ-विस्तार : 2,280 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : आश्रयक भण्डारघरक बाहर भोरमे एकटा काँटेदार तारक टुकड़ा रखसानाक साडीमे अँटकि गेल। ओ बोरा उतारि रहल... | अन्तिम संकेत : नैरा निकलैत काल भण्डारघरक नव तख्ती पढलीह। तख्तीक निचला पाँतिमे छोट अक्षर छल—‘जे काज करैत...

055 • हराएल बच्चाक माए [पाठ-विस्तार : 2,359 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : लता भोरमे पुरान कपड़ाक झोरासँ तीनटा टिकट निकालि चूल्हक कात पसारलीह। एक टिकट पर स्टेशनक मुहर... | अन्तिम संकेत : लता ओहि राति मिथुनक थारी धोने बिना ओकरा भातसँ फेर भरलीह, मुदा दरबज्जापर नहि रखलीह।...

056 • दानक दवाइ [पाठ-विस्तार : 2,424 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अस्पतालक दवाइ-कक्षमे भोरक पहिल खिडकी खुलिते शीशाक सिसीसभ पर पड़ल ओस उज्जर भऽ उठल। जमुना देवी... | अन्तिम संकेत : नगरक दोसर छोरपर तारा सार्वजनिक नापक फाइलमे बेलाक वैकल्पिक बजार-ठामक नक्शा रखैत छलीह। ओतय एक...

057 • जनक आ जनपद [पाठ-विस्तार : 2,329 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे खेतक मेड़पर रखल बाँसक डण्डा एकाएक एक हाथ नीचाँ धँसि गेल। रमेश ओकरा खींचिकऽ बाहर... | अन्तिम संकेत : रातिमे तारा नाप-पंजी बन्द करबाक पहिने एक नव पन्ना जोड़लीह—पानि रोकबासँ ककर लाभ, पानि छोड़बासँ...

058 • कारणक जाल [पाठ-विस्तार : 2,513 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : मखानिया डबराक कातमे रमणी बिन्द बाँसक पातर छड़ पानिमे उतारलीह तँ ओकर मुहाँ कादोमे अटक गेल।... | अन्तिम संकेत : रातिमे नगरक दफ्तरसँ एक लिफाफा आयल। ओकर भीतर दोसर पारक जल-समितिक पत्र छल; ओ सभ...

059 • दूतक शर्त [पाठ-विस्तार : 2,302 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बरखाक पानि लिफाफाक दहिना कोनाकँ नरम कऽ देने छल। तारा ओकरा धूपमे पसारबाक बदला सूखल कपड़ाक... | अन्तिम संकेत : रातिमे फूलमतीक गीतक एक पाँति मालतीक कानमे रहि गेल। ओ घर पहुँचि बाल्टी धोलीह, बच्चीक...

060 • पहिल सन्धि टूटल [पाठ-विस्तार : 2,432 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नम भेल बाँसक फलकपर कोइलासँ खींचल रेखा भोरक पानिमे पसरि गेल छल। हीरा सहनी अपन हथेलीसँ... | अन्तिम संकेत : घर घुरैत रमेशक पत्नी बेटी लेल ओही दिनक बचल भिण्डी चुनलीह। रमेश पुछलनि, “एक सप्ताहक...

पर्व 6 • भीष्म | सुन्दरकाण्ड | अध्याय 61–72

061 • गङ्गाक शर्त [पाठ-विस्तार : 2,415 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हस्तिनापुरसँ दूर नदीक मोड़पर भीजल बालुकामे एकटा पदचिह्न छल, जाहिमे पानिक पतली धार आवि फेर घुरि... | अन्तिम संकेत : विदेहपुरमे रातिक बेला नैरा अपन पन्नाक कात एकटा छोट टिप्पणी लिखलीह—‘शर्त स्वीकार करब, शर्त बुझब...

062 • भीष्मक प्रतिज्ञा [पाठ-विस्तार : 2,537 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : राजमहलक भीतरी आँगनमे देवव्रत धनुक डोरी खोलि रहल छलाह। नदीक वेग धामबाक अभ्यासमे जे अँगुरी छिलि... | अन्तिम संकेत : विदेहपुरमे दिन चढ़लापर तारा नैरासँ कहलीह, “सन्धि टूटल अछि, तखनहुँ काज रुकल नहि। मुदा हम...”

063 • अम्बाक समय [पाठ-विस्तार : 2,559 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : काशीक राजमहलक भीतर तीनटा पीतल थारीमे हल्दी राखल छल। परिचारिका ओहि थारीसभक कात अलग-अलग फूल सजा... | अन्तिम संकेत : अन्तिम साँझ ओ तीन गाँठवला पट्टा आश्रमक वृद्ध तपस्विनीकेँ देलीह। “पहिल गाँठ हमर इच्छा छल,”...

064 • शिखण्डीक निर्णय [पाठ-विस्तार : 2,546 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : पाञ्चालक शस्त्रागारमे भोरक पहिल आवाज लोहारक हथौड़ासँ उठल। छोट शिखण्डी टूटल बाणक अग्रभाग हाथमे लेने ठाढ़... | अन्तिम संकेत : राति राघव घर लौटला तँ भतीजा गोदामक पुरान किताब खोलि बैसल छल। “काका, हम जे...”

065 • अस्पतालक पुरान पाँख [पाठ-विस्तार : 2,484 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अस्पतालक पुरान पाँखमे छतक एकटा जोड़सँ पानि टपकि रहल छल। पहिने ओ बूँद छोट छल—इतबाक छोट... | अन्तिम संकेत : पुरान पाँखक ओही कटोरी राति फेर खाली कएल गेल। पहिने कोन पाइप चुइत छल तकर...

066 • कृष्ण अर्जुनक विराम [पाठ-विस्तार : 2,461 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक साढ़े पाँच बजलापर अस्पतालक पुरान पाँखक बरामदामे लटकैत पीयर चेतावनी-पट्टी हवा सँ फड़फड़ा उठल। पट्टीक... | अन्तिम संकेत : दूर घाट दिस सँ अन्तर दऽ लोहेक दू चोट सुनाइत छल। महेश कहलक जे कदाचित्...

067 • दूरक देखाइ [पाठ-विस्तार : 2,508 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रेलचौकक चायदोकानमे भोरक पहिल केतली चढल छल, मुदा फकीरा अपन गिलास एखन नहि उठौने छलाह। रातिक... | अन्तिम संकेत : ओहि राति फकीरा रेलचौकसँ घुरैत फेर अस्पतालक दिसक दूर आवाज सुनलनि। ई बेर एक नहि,...

068 • चेतावनीक प्रति [पाठ-विस्तार : 2,707 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अदितिक मेजपर पुरान फाइलक बन्धन खोलिते लाल सूतक एक छोट गाँठ टूटि गेल। ओ कागदक ऊपर... | अन्तिम संकेत : नैरा अस्पतालक दिशासँ घुरैत गोदामक दीवालपर आँखि देलीह। पुरनाधार लिखल पुरान काठक पटरी आब सुरक्षित...

069 • अनुपस्थितिक अर्थ [पाठ-विस्तार : 2,481 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : पुरनाधारक गोदाममे भोरहि सँ बोरा सरकए लगल छल, मुदा कार्यालयक ओहि छोट कोठरीमे एकटा खाली घर... | अन्तिम संकेत : ओहि राति महेश अपन मेजक दीपक जरा कऽ सम्पादकक उत्तरक प्रतीक्षा करैत रहलाह। एक पन्नापर...

070 • महेशक राति [पाठ-विस्तार : 2,608 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पहिल अखबार महेशक दुआरपर उलटि कऽ खसल तँ ओकर कोना ओससँ भीजि गेल छल। बेटी... | अन्तिम संकेत : आधी राति पार होइत अधिकारीक सन्देश आयल जे तत्काल गश्तक निवेदन स्वीकार भेल अछि; नियमित...

071 • मृत्यु आ दस्तावेज [पाठ-विस्तार : 2,463 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक उजास अस्पतालक बरामदामे पहुँचबाक पहिने महेशक पत्नी बाँहक पट्टीपर लिखल तिथि पढ़ि रहल छलीह। कागदमे... | अन्तिम संकेत : महेशक मृत्यु भेल दिनक दस्तावेजक ढेरीमे एकटा चीज एहन छल जकरा पर कोनो सरकारी मुहर...

072 • संजयक दूरी [पाठ-विस्तार : 2,599 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : कबीरक हाथमे तीनटा पन्ना छल। पहिल पन्नापर महेशक मृत्यु-परीक्षण लेल बनल प्रारम्भिक सूची, दोसरपर घटनास्थलक नक्शा,.... |

अन्तिम संकेत : महेशक बेटी नवा कोठरीमे सुतबासँ पहिने अपन नदीक चित्र मायकै नहि, अपन किताबक बीच रखलक।...

पर्व 7 • द्रोण | सुन्दरकाण्ड | अध्याय 73-84

073 • सीमातीर्थक उतराइ [पाठ-विस्तार : 2,519 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे नावक तख्तापर मधु केवट अपन अँगुरीक पोरसँ गीला जोड़ टटोलि रहलीह। रातिक पानि उतरि गेल... | अन्तिम संकेत : लता अपन कापीक नव पृष्ठ खोललीह। ओतय तीन पाँति छल—नामक नकल, देखल पर्चीक बयान, आ...

074 • द्रोणक देय [पाठ-विस्तार : 2,517 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सीमातीर्थक भोरमे शान्ति बोटे अपन नावक भीजल डोरी बाँसक खूटासँ खोलैत फेर रोकि देलीह। पाछिल दिनक... | अन्तिम संकेत : लता साँझक ओहि भीड़मे एक बेर अभिलेखघरक बन्द दरबज्जा दिस देखलीह। आइ मिथुनक कोनो नव...

075 • एक्के आखिरी अंक [पाठ-विस्तार : 2,710 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रेलचौकक पुरान गोदाममे खिड़कीक पल्ला अड़निहार लोहेक कील ढीला भऽ गेल छल। नैरा ओकरा हथेली सँ... | अन्तिम संकेत : कबीर खिड़कीक कील कसैत पुछलनि, “काल्हि फेर एतहि मिलब?” नैरा बत्ती निभेबासँ पहिने कहलनि, “जखन...

076 • एकलव्यक बाद [पाठ-विस्तार : 2,679 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विद्यालयक पाछाँक देवाल लग प्रतिमा राजवंशी भोरमे एकटा पुरान बाँस धरि ठाढ़ छलीह। देवालसँ तीन हाथ... | अन्तिम संकेत : रातिक अन्तिम बसक आगाँ रामवती अपन दू परिचय-पत्र एक्के थैलीमे राखलीह, मुदा दूनूक अलग आवरण...

077 • त्रिजटाक सन्देश [पाठ-विस्तार : 2,529 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन लंकाक अशोकवाटिकामे सीता पातक नस परखि रहल छलीह। रातिक ओससँ भीजल एकटा पीयर पात हुनकर... |

अन्तिम संकेत : पुरान अशोकवाटिकामे रातिक पहरा फेर बदलल। त्रिजटा दूर राजभवनक दिस चलि रहल छलीह; सीताकेँ ओ...

078 • मन्दोदरीक घर [पाठ-विस्तार : 2,520 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : लंकाक राजगृहमे मन्दोदरी भोरसँ पहिने भोजनक कोठरीक दुआर पर ठाढ़ छलीह। चाउरक माप राखबाक काँसक पात्रक... | अन्तिम संकेत : राति पड़ला पर विद्यालयक सूचना-पट्टमे नव बयान लगल, आ पुरान पन्नाकेँ फाड़बाक बदला विद्यालयक अभिलेख-फाइलमे...

079 • चेहराक समानता [पाठ-विस्तार : 2,614 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुरक रेलपुलक नीचाँ भोरमे सरयू भीजल दरी झारि रहल छलीह। रातिक पानि दरीक तहमे एतेक समा... | अन्तिम संकेत : जानकी रातिक भोजन बाँटैत नतिनीकेँ अपन लग बैसबौलीह। बच्ची पुछलक, “दादीक मुँह आब दादीक भेल?”...

080 • बुनकरक दोसर खाता [पाठ-विस्तार : 2,769 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : यूसुफ अंसारी भोरमे करघाक पाछाँ झुकि तानीक टूटल सूत जोड़ि रहल छलाह। नन्हका गाँठकेँ नखसँ दबबैत... | अन्तिम संकेत : दूर खटालक दीया एक-एक कऽ निभि रहल छल। माछविक्रेता अपन टोकरि उठौने घर जा रहल...

081 • बच्चाक दोसर ठाम [पाठ-विस्तार : 2,583 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : चायवला ओहि दिन भोरमे अपन ढिबरीक काँच नहि, टेबुलक एकटा पाया साफ करैत छल। पायाक नीचाँ... | अन्तिम संकेत : दूर अड्डापर रुखसानाक टोलीक खाली पात्र धुलि रहल छल। दुर्गाक पहिल खेपक आधा हिस्सा बिकि...

082 • मैथिलीक पन्ना [पाठ-विस्तार : 2,706 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : मेजक दराज खोलिते मैथिलीक नखमे पुरान कागदक एक पातर रेशा अटक गेल। ओ दराजमे राखल लकड़ीक... | अन्तिम संकेत : रातिक मेजपर मैथिली दू प्रतिक बीच एकटा कोरा कागद रखलीह, जाहिपर हरिमोहन आगिला निरीक्षणक दिन...

083 • सरिताक मेहनत [पाठ-विस्तार : 2,526 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे सरिता चूल्हक फूँकनी हटौलनि तँ राखक भीतर सँ एकटा अधजरल कोयला लुढ़कि फर्शपर आबि गेल।... | अन्तिम संकेत : सभ गेला पर सरिता नीला कापी फेर बक्सामे राखलीह। आज ओ ककरो नामक स्थानपर अपन...

084 • गुरुक स्वीकार [पाठ-विस्तार : 2,583 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : पुरान पुस्तकक जिल्दसँ धूरि झाड़ैत ईशानक अँगुरीपर नीला रंग लागि गेल। ओ कागदकें सफेद कपड़ासँ पोंछलनि,... | अन्तिम संकेत : राति गहराएलापर ईशान थैलीमे अपन मूल बही रखलनि। ओहि बहीक पहिल पन्नापर हुनकर तर्क एखनहुँ...

पर्व 8 • कर्ण | सुन्दरकाण्ड | अध्याय 85-96

085 • राधाक श्रम [पाठ-विस्तार : 2,506 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हस्तिनापुरक बाहरी बस्तीमे भोरक पहिल उजास ओहि ओसारपर पड़ल जतय राधा रथक पहियाक पट्टीपर लपेटबाक लेल... | अन्तिम संकेत : कबीर घर घुरि कऽ पुरान अलमारीक नीचला तहसँ एकटा सूत उधरल थैली निकाललनि। एहिमे हुनकर...

086 • मूल पन्ना [पाठ-विस्तार : 2,637 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : पीतरक डिब्बाक ढक्कन उठबैत सरिताक नखक कात अटकल पुरान सूत टूटि गेल। ओ सूत हटाकऽ फेंकलनि... | अन्तिम संकेत : नैरा बाहर निकललीह तँ पोखरिक दिशासँ आर्द्र हवाक संग जाल सुखेबाक माछक गन्ध आबि रहल...

087 • पाँच बदलल परिचय [पाठ-विस्तार : 2,680 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नसीम इदरीसी सूईमे दोसर बेर धागा पिरोबैत चश्मा माथपर चढ़ा लेलनि। उज्जर कपड़ाक पाँचटा छोट थैली... | अन्तिम संकेत : राति नसीम दुकान बन्द करैत देखलनि जे बिहानक युवकक सुधरल सन्देश ओहि सूचना-समूहमे पहुँचल अछि,...

088 • चौदह विसंगति [पाठ-विस्तार : 2,627 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नगर कार्यालयक ओसारपर रखल भीजल जूतासँ उज्जर फर्शपर माटिक छोट-छोट चिह्न बनि रहल छल। नैरा एक-एक... | अन्तिम संकेत : भोरसँ पहिने रमणी अपन जालक गाँठ ठीक करैत रहलीह। बेटी आधा नींदमे पुछलक, “माए, हमर...

089 • चारि जीवित चारि मृत [पाठ-विस्तार : 2,492 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नगर कार्यालयक खिड़की खुललासँ पहिने रमा कर्ण मेजपर दू थालीनुमा ढक्कन रखलीह। एकमे नील पर्ची, दोसरमे... | अन्तिम संकेत : रमा आखिरी बत्ती बुझबैत खिड़की बाहर देखलीह। बरकी पोखरिक दिशा सँ नम हवा आबि रहल...

090 • सुभद्राक शर्त [पाठ-विस्तार : 2,487 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सुभद्रा पुरान पीतरक सन्दूकक कुण्डीमे पतला तेल देलनि, तखन चाबी घुमौलीह। ढक्कन भीतरसँ अटकल रहए। ओ... | अन्तिम संकेत : घर पहुँचलाक बाद कबीर पुरान पुस्तक खोलि ताखक मोटाइ नापबाक पर्ची भीतर राखलनि। नैरा खिड़कीमे...

091 • सुविधाजनक त्रुटि [पाठ-विस्तार : 2,533 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सरिता भोरमे टाटपर पसारल पुरान रसीदसभक चारू कोनपर छोट-छोट लोटा रखि रहल छलीह। राति खिड़कीसँ पानि... | अन्तिम संकेत : दूर रमाक कार्यालयमे पंखा बन्द होएबाक बाद धूलिक महीन गन्ध रहि गेल। तेसर किशतक सत्यापन-निवेदन...

092 • आरोपक भङ्ग [पाठ-विस्तार : 2,724 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : जानकी भोरमे अपन बाँसक चटार्क टूटल किनार फेर बुनि रहल छलीह। बाँसक महीन पट्टी आँगुरमे चुभल... | अन्तिम संकेत : राति नैरा बाल-सुरक्षा अधिकारीक प्राप्ति-सूची पढ़लीह। गुंजाक मध्यस्थ-मार्गक दू चरण प्रमाणसहित जुड़ि चुकल छल, मुदा...

093 • खेपक सम्बन्ध [पाठ-विस्तार : 2,572 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अस्पतालक पिछला बरामदामे माधव रोनियार गाड़ीपर राखल पेटीक गाँठ छुअबासँ पहिने अपना अंगोछासँ हाथ पोछलनि।

रातिक... | अन्तिम संकेत : घरक बाटपर नैराकै कबीर भेटलाह। हुनका सुभद्रासँ अगिला भेटक तिथि निश्चित करबाक छल, आ ओ...

094 • पालकक अधिकार [पाठ-विस्तार : 2,667 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : कबीर पुरान घरक आँगनमे पसरल पीयर माटिक ढेरीक कात बैसि पतली बाँसक पट्टी सँ दीप राखबाक... | अन्तिम संकेत : कबीरक मनमे प्रश्न एखन कम नहि भेल छल। सुभद्राक गवाहीक अगिला पृष्ठ, पुरान पत्रक लिखावट,...

095 • हत्याक आदेश [पाठ-विस्तार : 2,431 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : शशि माहुरी भोरमे गोदामक ताला खोलबासँ पहिने चाभीक गुच्छामे लागल दू टेढ़ पीतलक छल्ला अलग कएलनि।... | अन्तिम संकेत : अन्तिम काजमे रमा एकटा सीलबन्द पन्ना नैराकै देखौलीह। ई सरिताक सत्ताइस नामक मूल सूची नहि...

096 • सत्ताइसक मिलान [पाठ-विस्तार : 2,680 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सरिता पीतरक डिब्बा खोलबाक पहिने ओकर तलहटिमे जमल धूरि पोंछि रहल छलीह। दुआरक बाहर बरखा थमि... | अन्तिम संकेत : राति समाचारक अन्तिम पंक्ति लिखैत नैरा हत्या-जाँचक कार्यालयक लम्बित पत्रसँ सत्ताइसक निजी सार अलग रखलीह।...

पर्व 9 • शल्य | युद्धकाण्ड | अध्याय 97-108

097 • शल्यक निष्ठा [पाठ-विस्तार : 2,407 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन मद्रदेशसँ कुरुक्षेत्र दिस चलल रथक पहियापर चिपकल धूरि शल्य अपने हाथसँ झाड़ि रहल छलाह। रातिक... | अन्तिम संकेत : नैरा अपन समाचारक पहिल शीर्षक काटलीह। लिखने छलीह—‘पाँच शर्तपर रास्ता खुलल’। फेर ओ लिखलीह—‘एक रोगीक...

098 • विभीषणक बाट [पाठ-विस्तार : 2,591 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन लंकाक राजगृहमे विभीषण अपन घरक देहरीपर राखल पानिक घैलक ढकना फेर कसि रहल छलाह। रातिक... | अन्तिम

संकेत : अगिला भोरक सूची फाटकपर टाँगल गेल—दू परीक्षणयोग्य गाड़ी, निर्धारित चालक, रोगी-सेवाक समय-सीमा, भुगतानक लिखित दायित्व...

099 • कुम्भकर्णक जागव [पाठ-विस्तार : 2,730 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : लंकाक पश्चिमी प्राचीरक भीतर जे विशाल कक्ष कुम्भकर्णक निद्राक लेल राखल गेल छल, ओकर दुआरपर भोरसँ... | अन्तिम संकेत : कमलेश घर घुरलाह तँ मरम्मतिक घैलक जोड़ सूखि गेल छल। ओ आहिस्ता सँ ओहिमे पानि...

100 • दूसर समझौता [पाठ-विस्तार : 2,699 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नगर कार्यालयक बरामदामे भोरक पानि सँ भीजल पाँच कागद उर्मिला उलटा कऽ सुखा रहल छलीह। छपराक... | अन्तिम संकेत : राति नगर कार्यालय बन्द होइत पाँच कागदक दू प्रति अलग पेटीमे राखल गेल। सार्वजनिक प्रति...

101 • रोगीक समय [पाठ-विस्तार : 2,548 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पाँच बजि बयालीस मिनटपर अस्पतालक धुलाईघरमे रखल पीतलक कटोरीमे छतसँ तेसर बूँद खसल। उर्मिला पहिल... | अन्तिम संकेत : अस्पतालक पाछाँक नालीपर हीरा आ तारा फेर नाप करैत छलीह। अस्थायी पाट पानि के कने...

102 • मरम्मतिक तह [पाठ-विस्तार : 2,472 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : गोमती बेलदार अपन फावडाक धारसँ नालीक कातक पातर सीमेण्ट खुरचलीह तँ भीतक नीचाँ पीयर माटिक एक... | अन्तिम संकेत : अदिति कार्यालयमे घुरि पहिल प्रतिवेदनक ऊपर नव संशोधन-पत्र राखलीह, नीचाँ दबौलीह नहि। अस्पतालक रोगीक बाट...

103 • सकारात्मक युक्ति [पाठ-विस्तार : 2,558 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रानी हलालखोर झाड़ूक डाँटासँ काँचक एक नोक किनार कएलीह तँ ओ नालीक सूखल पाटपर खनखनाइत अटकि... | अन्तिम संकेत : अदिति कार्यालयमे दिनक अन्तिम कागद पढ़लीह। सफाईक बाहरी कामक प्राप्ति छल, बन्द निकासक परीक्षण एखन...

104 • शक्तिक प्रश्न [पाठ-विस्तार : 2,766 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नूरजहाँ ईटफरोशक गदहाक अगिला खुरमे ओहि बिहान गील माटिक एकटा भारी गोला चिपकि गेल छल। ओ... | अन्तिम संकेत : उर्मिला रोगी-गाडीक अन्तिम समय लिखि कऽ बाहर अएलीह। ओ सुगनीसँ पुछलीह, “भोरसँ पानि कतबा उतरलक?”...

105 • बिनौटक पुल [पाठ-विस्तार : 2,597 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : तारा बिनौट भोरक उजासमे बाँसक गाँठपर नखसँ खरोच देलीह। छालक नीचाँक रङ्ग एक ठाम पीयर छल,... | अन्तिम संकेत : भोजनक डिब्बा समेटैत ललित देखलनि जे एक मजदूरक नाप-पर्वीमे आधा दिनक दाम छुटल अछि। ओ...

106 • उपचारक स्वीकार [पाठ-विस्तार : 2,687 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुर, २०३९क वर्षाक भोर। अस्पतालमे लोहेक पेटीक ढक्कन खोलिते भीतर सँ शीशाक हलुक खनखनाहट भेल। पेटीक... | अन्तिम संकेत : अन्तिम रोगी-गाडीक आवाज दूर भेलापर अस्पतालक बरामदामे कने शान्ति अएल। अनिरुद्ध मेजपर पडल पुरान सार-पन्ना...

107 • पाँच हस्ताक्षर [पाठ-विस्तार : 2,413 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : गोदामक पुरान फाटकक तल्ला भोरक भीजाइल हवा सँ फूल गेल छल। देवव्रत अपन चाबी घुमौलनि तँ... | अन्तिम संकेत : राति ढलिते आश्रयक बरामदामे कोनो पहिलुका तमाशा नहि बचल। कक्ष खुलल छल, दरवज्जा पर रातिक...

108 • जलस्तरक बाहर [पाठ-विस्तार : 2,635 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पहिल उजासमे हीरा सहनीक माप-डण्डाक लाल रेखा पानिक भीतर लुकायल छल। काल्हि साँझ धरि जे... | अन्तिम संकेत : रातिक पहिल पहरामे आश्रयक चूल्हिसँ धुँआ उठि रहल छल, अस्पतालक गलियारा में जमुनाक दवा समयपर...

पर्व 10 • सौप्तिक | युद्धकाण्ड | अध्याय 109-120

109 • रातिक सन्धि [पाठ-विस्तार : 2,707 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रातिक पहिल पहरामे रुखसाना चूल्हिक धुआँ हटेबाक लेल बाँसक खिड़की आधा खोललीह तँ बाहरसँ भीजल माटिक... | अन्तिम संकेत : पहिल धूपक पातर रेखा आश्रयक सीढ़ीपर पडल तँ कंचनक छोट भाय अपन कागदक नाव सुखेबाक...

110 • गोदाम खुलल [पाठ-विस्तार : 2,715 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक उजासमे गोदामक दोसर कक्ष खोलबाक लेल देवव्रत अपन चाभीक गुच्छामे सँ पीतलसँ कारी भेल छोट... | अन्तिम संकेत : घाट दिससँ नावक लकड़ीपर रस्सी रगड़बाक मन्द ध्वनि अबैत छल। दिनभरि गोदामक भीतर रहल देवव्रत...

111 • नावक क्षमता [पाठ-विस्तार : 2,875 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक माटिमे गाड़ल खूँटाक चारू कात रस्सीक महीन रेशा फैलल छल। हीरा सहनी खूँटाक फाँस खोलि... | अन्तिम संकेत : रातिक पहरादार नावसभक रस्सी एक बेर फेर छुलनि। घाटपर खाली सहायता-नाव अपन निर्धारित ठाम बान्हल...

112 • ईशानक हाथ [पाठ-विस्तार : 2,920 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नावक तल्लामे अटकल भीजल माटि सूखिते गाढ भूरा पपड़ी बनि गेल छल। श्याम मल्लिक पातर बाँससँ... | अन्तिम संकेत : ईशान रातिमे पट्टी खोलि घाव देखलनि, फेर चिकित्सकीय सलाह अनुसार सफाई आ देखभाल कएलनि। पुस्तकक...

113 • अश्वत्थामाक राति [पाठ-विस्तार : 2,737 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : टूटल रथक धुरीसँ एक पातर काँटा बहराइ रहल छल। अश्वत्थामा ओकरा अँगुरीसँ खींचि अलग कएलनि, फेर... | अन्तिम संकेत : भोरक पहिल उजासमे शिविर दिससँ धुआँ उठैत रहल। जे लोक ओतय बचल छलाह, ओ सभ...

114 • दवाइ आ बचल श्वास [पाठ-विस्तार : 2,552 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रातुक अन्तिम पहरामे अस्पतालक पुरान पाँखक दुआरक नीचाँ रखल भीजल बोरा उर्मिला उठौलीह तँ ओकरा भीतरसँ... | अन्तिम

संकेत : आकाशमे मेघ आओर घन भेल तँ तारा देहरीक घेरा देखए फेर अएलीह। पल्ला अस्थायी रूपैँ...

115 • तस्वीरक अनुमति [पाठ-विस्तार : 2,764 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अस्पतालक पुरान पाँखक बाहरी देहरीपर लाल रस्सीक गाँठ रातिभरि भीजल रहला सँ कसि गेल छल। भोरमे... | अन्तिम संकेत : भोरक निरीक्षणक सूची अदिति कार्यालयमे छोड़ि गेल छलीह। गोदामक सुरक्षित सामग्रीक पहरा चालू छल, रोगी-गाड़ी...

116 • पुरान पाँख [पाठ-विस्तार : 2,917 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पहिल पहरामे गोमती बेलदार अस्पतालक पुरान पाँखक बाहरी देहरीपर राखल लाल रस्सीक गाँठ देखलीह। रातिमे... | अन्तिम संकेत : फाटकपर पहराक नव दल अएल। गोमती पुरान रस्सीक परे नव ठोस अवरोध देखौलीह; लिखित निषेध...

117 • नैराक चुनाव [पाठ-विस्तार : 2,771 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रातिक पहिल पहरामे नैरा अस्पतालक सूचना-मेजपर राखल तीनटा कागदकेँ एक-दोसराक कात सरकौलीह। पहिल पन्नापर लाल स्याहीसँ... | अन्तिम संकेत : आँगनमे उठल हलुक पवन भीजल देवालसँ लगि कऽ ठंढा भऽ जाइत छल। दूर बाहाक पानीक...

118 • उर्मिलाक थाकल हाथ [पाठ-विस्तार : 2,974 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : उर्मिला भीजल चादरक किनार अपन बाँया हाथसँ सीधा करैत छलीह, मुदा अँगुरी पहिने जकाँ मुड़ि नहि... | अन्तिम संकेत : उर्मिला फेर एक बेर कपडा-पंजीक मुड़ल कोन देखलीह। ओ पन्ना बाहर पठेबाक लेल नहि माँगलीह;...

119 • देरिक दूरी [पाठ-विस्तार : 2,706 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नैरा रजिस्टरक खाली पाँतिक नीचाँ एकटा पातर रेखा खींचलीह। रेखाक ऊपर घिरल रोगिणीक नाम छल, किन्तु... | अन्तिम संकेत : जखन रातिक अन्तिम पहरमे पहरदारक पालि बदलल तँ आश्रयक बरामदामे सुरक्षित पहुँचल लोकसभ अपन-अपन नामक...

120 • भोरक पहिने [पाठ-विस्तार : 2,911 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भीजल रजिस्टरक खाली पाँतिक नीचाँ नैरा अपन अँगूठा रखलीह। पृष्ठक किनार रातिभर पानिसँ फुलि गेल छल,... | अन्तिम संकेत : रात्रिक अन्हार हलुक पड़बाक पहिल संकेत पूबक नभमे नहि, बल्कि ओहि बत्ती पर देखाइत छल...

पर्व 11 • स्त्री | युद्धकाण्ड | अध्याय 121-132

121 • नामक पुष्टि [पाठ-विस्तार : 2,711 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बाहरी मेजपर राखल पीतलाक घंटीक तलीमे रातिक पानि जमल छल। भोरक पहिल उजासमे रमा ओकरा उठा... | अन्तिम संकेत : सरिता नैराक नामवला सूचनाक सत्यापित प्रति कबीरकें देलीह। ओ ओकरा पढ़ि कागद मोड़लनि नहि। बहुत...

122 • अन्तिम देह [पाठ-विस्तार : 2,929 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : शवगृहक बरामदामे सफेद कपड़ाक थान परसू दिनसँ आधा खुलल पड़ल छल। शशिभूषण महापात्र ओकर किनार सोझ... | अन्तिम संकेत : रमा अपन मेजपर रातिक नव पंजी खोललीह। तीन नामक आगाँ सत्यापनक कागद छल, चौठमक आगाँ...

123 • गान्धारीक प्रश्न [पाठ-विस्तार : 2,885 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : कुरुक्षेत्रक युद्ध समाप्त भेलाक बादक ओहि भोरमे गान्धारी अपन आँचरक कोरमे पड़ल दू टुटल सीवन उँगरीसँ... | अन्तिम संकेत : सन्ध्याक लाली मैदानपर पड़बाक पहिने गान्धारी अपन सेविकाकें कहलनि जे पटुकाक किनारमे टुटल दू सीवन...

124 • मन्दोदरीक भीतर [पाठ-विस्तार : 2,959 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : लङ्काक राजगृहक भीतर, पाछाँक अन्नकोठरीमे राखल काँसक मापक पात्र आइ फेर उलटि पड़ल छल। ओकर मुँहपर... | अन्तिम संकेत : बाहरसँ मालिनी पुकारलीह जे पहरेदारसभ नव लिखित निर्देश पढ़ि सुनाओलनि अछि, मुदा एक स्त्रीक नाम...

125 • कुन्तीक स्वीकृति [पाठ-विस्तार : 2,746 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : गङ्गाक घाटपर कुन्ती पितरक अर्घ्य लेल भरल काँसक लोटा उठबए गेलीह तँ ओकर मुँहक कात सँ... | अन्तिम संकेत : सन्ध्याक अन्तिम उजासमे गङ्गाक पानि गहिर रंगक भऽ गेल। कुन्ती अपन लोटा अबेर धरि हाथमे...

126 • भातक मात्रा [पाठ-विस्तार : 2,749 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सरिता चाउरक मापवला पीतलाक कटोरी उठौलीह। दून पएरक बीच चूल्हाक आगि एखन ठीकसँ नहि पकड़ने छल;... | अन्तिम संकेत : भोरक कल्पना करैत सरिता देखलीह जे तेसर कटोरी फेर उठत। उठत की नहि, से ओ...

127 • बचलक दोष [पाठ-विस्तार : 2,843 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अनिरुद्धक पट्टीक बाहरी किनारमे सूखल खूनक पातर भूर रेखा छल। ओ बायाँ हाथसँ कुर्ताक बटन लगाबय... | अन्तिम संकेत : अगिला भोर कबीर दवाइक खिड़कीक आगाँ नहि, घरक बासनक कात ठाढ़ छलाह। सुभद्राक लेल दलिया...

128 • चम्पाक उपचार [पाठ-विस्तार : 2,987 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : परामर्श-कक्षक टेबुलपर राखल काँचक गिलासक किनार पर पानिक एकटा छोट बूँद अटकल छल। चम्पा अँगुरीसँ ओकरा... | अन्तिम संकेत : बिछौनापर पड़लाक बाद चम्पा कलाईक पीड़ा देखैत घड़ीक सूई गनलीह। परामर्शक अगिला तिथि कागदमे छल;...

129 • रुहानीक सूची [पाठ-विस्तार : 2,777 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रुखसानाक हाथसँ चाउरक मापक कटोरी खसि पड़ल तँ किछु दाना भीजल ओसारपर छिटकि गेल। ओ झुकि... | अन्तिम संकेत : रुहानी सबसँ अन्तमे रसोइक पास राखल दाना फेर कटोरीमे भरलीह। रुखसाना सभ थारी गनि चुकल...

130 • द्रौपदीक बचल दिन [पाठ-विस्तार : 2,994 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पहिल उजासमे राजगृहक रसोइसँ चाउर धोएबाक आवाज आबि रहल छल। काँसक परातमे मुट्ठी भरि चाउर... | अन्तिम

संकेत : सुतबाक पहिने द्रौपदी फेर चूल्हाक ठाम गेलीह । रातिक बचल अंगार पर एक छोट बासनमे भात...

131 • सीताक अग्नि [पाठ-विस्तार : 2,779 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : लङ्काक अशोक-वाटिकामे सीता माटिक एक छोट कटोरामे पानि भरि रहल छलीह । कटोराक एक कात चिरा पड़ल... |
अन्तिम संकेत : साँझ धरि लङ्काक बाट पर धुआँ कम भेल । सीता प्रस्थानसँ पहिने अशोक-वाटिका फेर देखए गेलीह ।...

132 • नम्बरक बाद [पाठ-विस्तार : 2,904 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : २०३९क वर्षाक पश्चात् अस्पतालक अस्थायी कार्यालयमे मेजक एक पयर नीचाँ ईंटक टुकड़ा अँटाओल गेल छल । भीजल... |
अन्तिम संकेत : रमा मृत्युक कुल सत्यापित संख्या पर अनुमोदनक मुहर लगा देलीह । दोसर पंजीक माथपर कोनो अन्तिम...

पर्व 12 • शान्ति | उत्तरकाण्ड | अध्याय 133-144

133 • शासन के लेत [पाठ-विस्तार : 2,169 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : २०४०क आरम्भक ओहि बिहान अस्थायी कार्यालयक बरामदामे रमा तीनटा कुर्सी उल्टा कऽ राखने छलीह । पिछिला साँझ... |
अन्तिम संकेत : एतबामे नगर प्रतिनिधि चुपचाप खाली कार्यालयमे घुरि अएल । ओ अपन नामक आगाँ लिखल असहमति पढलक...

134 • युधिष्ठिरक अरुचि [पाठ-विस्तार : 2,303 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : कुरुक्षेत्रक युद्ध समाप्त भेलाक बादक हस्तिनापुरमे, राजसभाक पछिला कक्षमे एकटा मुकुट कपड़ासँ झाँपल राखल छल । ओहि... |
अन्तिम संकेत : विदुर दीपकक लौ छोट कऽ देलनि । “हुनकर शय्यापर प्रश्न लऽ जाउ,” ओ कहला, “उत्तरक संग...”

135 • भीष्मक शय्या [पाठ-विस्तार : 2,399 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : युद्ध समाप्त भेलाक बादक कुरुक्षेत्रमे भोरक हवा शरक पाँखिसँ टकरा कऽ सुइँ-सुइँ करैत छल । भीष्मक शय्याक... | अन्तिम

संकेत : नगरदुआरपर पहुँचि युधिष्ठिर पुरान पंजीक नकल विदुरकें देलनि आ कहलनि जे पहिल सार्वजनिक सुनवाईमे सभसँ...

136 • पहिल बयान [पाठ-विस्तार : 2,349 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : २०४०क पहिल जाइमे सामुदायिक कार्यालयक टीनक छतपर ओसक बूँद जमा भऽ रहल छल। सरिता मेजपर राखल... | अन्तिम संकेत : सरिता कार्यालयक दुआरपर पहुँचलि तँ अदिति पाछाँसँ बजौलीह। “काल्हि पुरान मापक प्रतिवेदनक मूल प्रति निरीक्षणमे...

137 • पुरान प्रतिवेदन [पाठ-विस्तार : 2,299 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अदिति पुरान मापक पट्टीक धूल फूँकि हटेबाक बदला कपडाक कोना भिजा कऽ पोछलीह। पीतल पर उकेरल... | अन्तिम संकेत : गोमती आखिरी पन्ना खोललीह। ओतय चारि खाली खाना छल—दुर्घटनाक भौतिक क्रम, कर्तव्यक उपेक्षा, अवैध लाभक...

138 • दोषक अलग खाना [पाठ-विस्तार : 2,245 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे गोमती बेलदार कार्यालयक पुरान मेजपर चारिटा खाली फाइल खोललीह। काल्हि साँझ अदितिक वापस लेल प्रतिवेदन... | अन्तिम संकेत : रातिक पहिल दीप जरिते कबीर कक्षक दरबज्जा आधा बन्द कएलनि। मेजपर चारू फाइल अलग छल,...

139 • तर्कक पुनरागमन [पाठ-विस्तार : 2,223 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक उजासमे उदयनक अध्ययनगृहक दहिना देवालसँ चूनक महीन धूरि झरि रहल छल। राति भरि बरखा भेलासँ... | अन्तिम संकेत : कक्षमे मोमबत्तीक लौ हिलल आ चारि फाइलक छाया देवालपर एक क्षण लेल एक्के धब्बा बनि...

140 • कर्म आ कारण [पाठ-विस्तार : 2,480 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पानिमे समिति-कक्षक बरामदाक छतसँ एक-एक बूँद टपकि रहल छल। गोमती बेलदार खिड़कीक नीचाँ चारि कारण-फाइल... | अन्तिम संकेत : दरबज्जा बन्द करबाक समय रमा कहलीह, “आब कतहु लिखित उत्तर आएत, कतहु सहायता पहुँचलाक रसीद...

141 • मदद आ मुकदमा [पाठ-विस्तार : 2,267 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सबेरे समिति-कक्षक सीढ़ीपर लोहेक एक छोट सन्दूक राखल छल। ओकर ढक्कनपर पुरान रंगसँ 'चिकित्सा-सहायता' लिखल रहए;... | अन्तिम संकेत : रमा दरबज्जा बन्द करबाक पहिने देवव्रतसँ पूछलीह, “अहाँक संस्थासँ दवाइक जे बण्डल निकसल, ओकर मूल...

142 • दवाइक स्रोत [पाठ-विस्तार : 2,433 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अस्पतालक अस्थायी औषधि-कक्षमे भोरक पहिल उजास सँ पहिने तीनटा पेटी खोलल गेल छल। पहिल पेटीपर अस्पतालक... | अन्तिम संकेत : सड़कपर अँधार उतरैत छल। विभाक गाड़ी सत्यापित औषधि लऽ सुरक्षित बाटे निकलल, रहीमक चारि बोरा...

143 • आश्रयक नियम [पाठ-विस्तार : 2,244 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : आश्रयक फाटकपर टाँगल पीतल रङक ताला भोरमे दू बेर घुमल, मुदा तेसर बेर चाभी आधा बाटे... | अन्तिम संकेत : भोरक तैयारीमे जुबैदा ओ खाली कोठरीक फर्श झाड़ि छोट-छोट ईटक टुकड़ा किनार राखलीह। बाहर सुरक्षित...

144 • कामक जिज्ञासा [पाठ-विस्तार : 2,396 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : फागुनक भोरमे आश्रयक पछिला कोठरीक दरबज्जा खोलिते जुबैदाक पएरमे खड़ियाक आधा टुकड़ा गड़ि गेल। राति बच्चीसबहक... | अन्तिम संकेत : आश्रयक भोरवाली बच्ची अपन कापी जुबैदाकेँ देखौलक। पहिल पन्नापर काल्हक प्रश्न छल—‘हम पढ़ि सकैत छी?’...

पर्व 13 • अनुशासन | उत्तरकाण्ड | अध्याय 145–156

145 • राशनक पाँति [पाठ-विस्तार : 2,228 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : २०४०क फागुनक भोरमे राशन-वितरणक मेजपर राखल धानक बोरीक मुँहसँ दू मुट्ठी चाउर फर्शपर खसि पड़ल। रुखसाना... | अन्तिम संकेत : भोरमे जे दाना फर्शपर खसल छल, ओकर साफ बचल हिस्सा सही तौलमे सम्मिलित भऽ गेल।...

146 • फकीराक पास [पाठ-विस्तार : 2,291 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रेलचौकक टिकट-खिड़कीमे लोहेक जाली लग एकटा पीयर पर्ची काँपि रहल छल। फकीरा ओकरा हथेलीसँ सम्हारि कऽ... | अन्तिम संकेत : पाठशालाक ओसारमे पद्मा अगिला दिनक कक्षाक लेल चटाइ साटि रहल छलीह। संकेत एकटा छोट चलन्त...

147 • संकेतक कक्षा [पाठ-विस्तार : 2,450 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पहिल उजासमे संकेत बाँसक पतली पट्टीपर सूत कसि रहल छल। ओकर सामने तीनटा कपडाक टुकड़ा... | अन्तिम संकेत : ओसारमे आखिरी बेर झिलमिल घुरि अएलीह। “काल्हि परीक्षा अछि?” ओ पुछलक। पद्मा कहलीह, “काल्हि अहाँ...”

148 • पद्माक फीस [पाठ-विस्तार : 2,346 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक घाम पाठशालाक ओसार धरि पहुँचबासँ पहिने पद्मा टेबुलपर तीनटा बही पसारि देलीह। पहिल बहीमे बच्चासभक... | अन्तिम संकेत : सबक बाद पद्मा मेजपर लौटलीह। पहिल बहीमे नसीमाक बेटी सहित प्रवेश-क्रम स्पष्ट छल; दोसरमे सरस्वतीक...

149 • जानकीक खण्डन [पाठ-विस्तार : 2,319 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विद्यालयक पुरान सूचना-पटक शीशामे दरार नहि छल, मुदा भीतरक कागदक कोना बरखाक नमीसँ पीयर पडि गेल... | अन्तिम संकेत : रेलपुल दिस चलैत जानकीक फोनमे फेर ओही पुरान काटल वीडियो अएल। अपरिचित नम्बर, नब व्यंग्यात्मक...

150 • चेहरा आ प्रमाण [पाठ-विस्तार : 2,256 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : जानकीक फोनपर राति आयल काटल वीडियो भोर धरि तीन बेर फरक-फरक नामसँ घुरि चुकल छल। विद्यालयक... | अन्तिम संकेत : दुआर बन्द करैत मीरा पूछलीह, “काल्हि पहिल पाठमे की पढ़ाएब?” पद्मा कहलीह, “बच्चासभकेँ स्वयं चुनबाक...”

151 • शम्बूकक पाठ [पाठ-विस्तार : 2,409 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विद्यालयक फट्टापर ओहि दिन मीरा दू पाँति लिखलीह —‘के पढ़ि सकैत अछि?’ आ ‘के फैसला करैत अछि?’... | अन्तिम संकेत : मालती नलसँ फेर पानि भरबाक लेल बाहिर निकललीह। केशरी खाली नावक पटरीक रसीद झोरामे रखलनि।...

152 • माटिक बकाया [पाठ-विस्तार : 2,502 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक ओस माटिक अधपाक घैलपर मोती जकाँ चमकि रहल छल। शकुन्तला पंडित टूटल किनारवला घैल उलटि... | अन्तिम संकेत : देर रातिमे शकुन्तला पर्चीसभक तीन गट्टर बनौलीह—माटिक प्रवेश आ खोहक सुरक्षा, अलग-अलग बासनक शेष देय,...

153 • नदीक माप [पाठ-विस्तार : 2,250 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हीरा सहनी भोरक पहिल उजासमे तिलवाहक किनारपर बाँसक लग्गी राखि ओकर माथक लाल डोरी खोलैत छलाह।... | अन्तिम संकेत : हीरा घर घुरैत बाँसक पुरान रंगपट्टी फाड़ि नहि देलनि। ओ एक कात नव नाप लिखल...

154 • सहमतिक दस्तावेज [पाठ-विस्तार : 2,411 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बरकी पोखरिक पक्का घाटपर भोरमे रेणु गोंदी भीजल रस्सीक गाँठ खोलि रहल छलीह। आधा बाँस हटि... | अन्तिम संकेत : रमणी जाल समेटि पहिल प्रति अपने झोरामे रखलीह। रेणु घैला भरि घरक बाट धेलनि। रुहानी...

155 • हिंसाक गवाही [पाठ-विस्तार : 2,223 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : घाटक खुलल ऊपरी सीढ़ीपर काल्हि जे गीत उठल छल, ओकर भीजल स्वर एखनहुँ बरकी पोखरिक कातक... | अन्तिम संकेत : आँगनमे रातिक हावा चलल। पुरुष खिड़की लग बैसि कपक तलीमे बचल पानि देखैत छलाह। ओ...

156 • नियमक अपवाद [पाठ-विस्तार : 2,402 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : रुखसानाक आँगनमे राँइगनक बोझा उतारैत एक लड़का काँखमे दबाओल नील कागद भीजा देलक। भोरक सिमसिम बरखा... |

अन्तिम संकेत : राति रसोइ बन्द होएबाक बाद रुखसाना खिड़कीक नीच राखल रिक्त पेटी उठौलीह। भीतर एकटा सादा...

पर्व 14 • अश्वमेध | उत्तरकाण्ड | अध्याय 157-168

157 • छूटल घोडाक बाट [पाठ-विस्तार : 2,229 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : युद्ध समाप्त भेलाक किछु समय बाद हस्तिनापुरक राजअस्तबलमे एक उज्जर घोडाक पीठपर कारीगर सुनहला किनारवला वस्त्र... | अन्तिम संकेत : आधुनिक आश्रयक मेजपर ओहि राति रमा गामक दू नकल अलग आवरणमे राखलीह—एक प्रवेशक सहमति, दोसर...

158 • अर्जुनक पहिचान [पाठ-विस्तार : 2,273 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : मणिपुरक राजद्वारपर पीतलसँ मढ़ल एक घण्टा हवा लागिते हलुक बजि उठल। ओकर नीचाँ घोडाक टापक निशान... | अन्तिम संकेत : २०४०क आश्रयमे रातिक अन्तिम पारी बदलि रहल छल। रुहानी अगिला शिविरक लेल बन्द निजी लिफाफासभ...

159 • चलैत अभिलेख [पाठ-विस्तार : 2,348 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : २०४०क चैतक पहिल भोरमे सरिता जीर्ण बसक छतपर बन्हल सन्दूकक डोरी स्वयं कसि रहल छलीह। रातुक... | अन्तिम संकेत : बहुत राति सरिता घर लौटलीह तँ नैराक खाली कुर्सी एखनहुँ दुआर लग छल। ओ ओहि...

160 • सरिताक योगदान [पाठ-विस्तार : 2,385 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरमे सरिता चारि रङ्क धागासँ कागदक चारि गट्टर बान्हि रहल छलीह। पहिल गट्टरमे हाथसँ उतारल दार्शनिक... | अन्तिम संकेत : रातिक अन्तमे सरिता चारि गट्टर बन्द कएलीह। लाल धागावला पन्नाक सार्वजनिक नकल विद्यालय जाएत; घरक...

161 • मैथिलीक अपना नाम [पाठ-विस्तार : 2,223 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक उजास पुरान छापाखानाक काँचपर तिरछा पडि रहल छल। मैथिली एकटा मोट कागदी लिफाफा खोललीह आ... | अन्तिम

संकेत : रातिक हवा ओहि कापीक पन्ना उलटि देलक, जाहिपर मैथिली पहिल बेर अपन स्वतंत्र प्रश्न लिखने...

162 • प्रमाताक दावा [पाठ-विस्तार : 2,183 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : ताड़पत्रक ऊपर राति भरि पड़ल धूलि उदयनक एक शिष्य मोरपाँखसँ झाड़ि रहल छल। दहिना कोनमे स्याहीक... | अन्तिम संकेत : अन्तमे मैथिली भूमिकाक आरम्भमे एक पन्ना अलग खसकौलीह। ओकर ऊपर 'प्रमाता' लिखल रहैक। ओ कहलीह,...

163 • पुरान पुस्तक नव भूमिका [पाठ-विस्तार : 2,276 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हरिमोहन छापाखानाक खिड़कीमे रातिभरि सुखायल प्रूफ टाँगने छलाह। भोरक पातर घाम कागदक एक कात पकड़लक, दोसर... | अन्तिम संकेत : अगिला भोर हरिमोहन पुस्तकालयक बण्डल बाँधए लगलाह तँ उर्मिलाक परिवारक पुरान कपड़ा-मजदूरीक दावा-वला अलग पर्ची...

164 • उर्मिलाक देय [पाठ-विस्तार : 2,390 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक उजास छापाखानाक टीनपर पड़ि रहल छल, जखन सरिता उर्मिलाक बकाया-वला लिफाफा उठौलीह। हरिमोहन काल्हि ओकरा... | अन्तिम संकेत : उर्मिलाक बहिन उठबाक पहिने अपन थैली खोललीह। मृत्युक प्रमाणपत्र, बैंकक आंशिक जमा-पुष्टि, शेष मजदूरीक दावा...

165 • वाक्यक तात्पर्य [पाठ-विस्तार : 2,260 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : पन्ना भोरमे विद्यालयक बरामदापर दू पन्ना पसारि बैसलीह। पहिल पन्ना ओहि छपल सन्देशक छल, जे काल्हि... | अन्तिम संकेत : साँझ पड़ला पर नसीम अपन मापबही बन्द कएलनि, कमला कड़ाक जमा-पत्र लौटा कऽ ताला लगौलीह,...

166 • बुनकरक बाजार [पाठ-विस्तार : 2,374 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भादवक भोरमे सुकठीक खटालक काँच पाटीपर ओस नहि, माछक टोकरीसँ झरैत पानि जमल छल। विनोद केवर्त... | अन्तिम

संकेत : पार्वती नव साझेदारीक कागद मोड़ि अपन कपड़ामे रखलीह, पवित्रा अपन अलग रसीदक अंक फेर मिलौलीह,...

167 • बिना सम्राटक नाप [पाठ-विस्तार : 2,218 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भादवक अन्तिम सप्ताहमे विदेहपुरक पंचायत-घरक बरामदापर दूटा नक्शा अलग-अलग काठक पट्टापर तानल छल। पहिल नक्शापर हरियर... | अन्तिम संकेत : रमा दरबाजा बन्द होमयसँ पहिने कर्मचारीकेँ रोकलीह। “अहाँक दफ्तरमे नक्शा आवि गेल,” ओ कहलीह, “मुदा...”

168 • फेर लौटत प्रति [पाठ-विस्तार : 2,399 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : अगहनक भोरमे विदेहपुरक पंचायत-घरक बरामदापर रमा कर्ण एकटा नव काठक बाकस खोललीह। भीतर लम्बा कागद मोड़ल... | अन्तिम संकेत : पंचायत-घरक बत्ती निभेवासँ पहिने रमा अगिला बैठकीक पहिल पन्ना लिखलीह—प्रति पाओनिहारक वास्तविक उपयोग, असमर्थ व्यक्ति...

पर्व 15 • आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड | अध्याय 169–180

169 • धृतराष्ट्रक हाथ [पाठ-विस्तार : 2,013 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : बहुत पुरान हस्तिनापुरक राजगृहमे भोरक पहिल आहटसँग धृतराष्ट्रक अँगुरी पीतलक लोटाक गरा पर फिसलि गेल। लोटा... | अन्तिम संकेत : साँझ रमा पंचायत-घरमे अगिला वार्षिक जाँचक पहिल नोट लिखलीह—सुधरल प्रति ककरा भेटल, नव छपाइक लाभ...

170 • गान्धारीक प्रस्थान [पाठ-विस्तार : 2,239 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन हस्तिनापुरमे भोरक पहिल उजास धरतीपर खसल नहि छल, जखन गान्धारी अपन छोट कपड़ाक गठरीक गाँठ... | अन्तिम संकेत : राजगृहसँ बाहिर गान्धारीक यात्रा आ २०४०क ई बसयात्रा एकहि घटनेक दू प्रमाण नहि छल। एकटा...

171 • कुन्तीक शेष वचन [पाठ-विस्तार : 2,347 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हस्तिनापुरक राजप्रासादमे कुन्ती पीतलका थारीक किनारपर उँगुरी फिरौलनि। भोरक भोजन बहुत पहिने उठि चुकल छल, मुदा... |
अन्तिम संकेत : वनक ओहि पहिल पड़ावमे कुन्ती रातिक समय गान्धारीसँ कहलीह, “हम जे नहि कहि सकलहुँ, तकर...

172 • ईशानक कमरा [पाठ-विस्तार : 2,172 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे पुस्तकालयक पछिला कोठरीक ताला घुमबैत ईशानक हाथ एक बेर अटकि गेल। चाभीक दाँत... |
अन्तिम संकेत : मैथिलीक उत्तर-पत्र मेजक कात सुरक्षित छल। अगिला सप्ताहक सार्वजनिक पाठपर सहमति सम्भव छल, विवाहक पुरान...

173 • मैथिलीक दूरी [पाठ-विस्तार : 2,118 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे भोरक पहिल उजास खिड़कीक जालीसँ भीतर पड़ल तँ मैथिली अपन मेजपर राखल दूटा... | अन्तिम संकेत : भोरमे चम्पा दुआरपर अएलीह। ओ अस्थायी आश्रयक कामसँ घुरैत अपन माइक दवाई-पर्चा हाथमे लेने छलीह।...

174 • माइक औषधि [पाठ-विस्तार : 2,105 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे भोरक रौद एखन आश्रयक ओसारधरि नहि पहुँचल छल। चम्पा माइक औषधिक पर्चा पलटि-पलटि... | अन्तिम संकेत : अमरेश बाहर साइकिलक संग ठाढ़ छल। ओ दुनू पैदल पोखरिक बाट पकड़लनि। एहि बेर फोटो...

175 • कबीरक चिट्ठी [पाठ-विस्तार : 2,279 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे भोरक धूप आवि रहल छल, मुदा कबीरक कोठरीक भीतर एखनहुँ रातिक गन्ध छल।... | अन्तिम संकेत : सन्दूक बन्द कऽ बरामदामे गेलाह। सरिता एखनहुँ जागल छलीह; मेजपर काल्हिक विद्यालयक चाभी आ आधा...

176 • सरिताक भोर [पाठ-विस्तार : 2,394 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे भोर होएबासँ पहिने सरिता चूल्हीक पाछाँ राखल पीतलकोसँ पानि निकालि कड़ाहीमे देलीह। हुनकर... |

अन्तिम संकेत : अगिला भोर पहिने खिड़कीक पल्ला खड़कबाक आवाज भेल। सरिताक देह फेर उठबाक समय पहिचानलक; घुटना...

177 • वृद्धक सहमति [पाठ-विस्तार : 2,206 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे रविक भोर चम्पा माइक लाठीक निचला खरक टुकड़ा दबा कऽ देखैत छलीह। पिछिला... | अन्तिम संकेत : अगिला भोर विदेहपुरमे सावित्री दीया खिड़की लग रखलनि। चम्पा पुछलीह जे एखन पयरक पीड़ा कतेक...

178 • विदुरक मार्ग [पाठ-विस्तार : 2,279 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन वनाश्रममे भोर होइतहि विदुर अपन पुरान चमड़ाक पादुका उतारि ओसारक ईटपर रखलनि। रातिक ओस पड़लासँ... | अन्तिम संकेत : आगाँक भोरमे सरिता चाभी लऽ विद्यालय पहुँचलीह तखन ओ देखलीह जे पुरान पीतलाक ताला मेजपर...

179 • निजी क्षमा [पाठ-विस्तार : 2,134 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन वनाश्रममे बिहानक पहिल काज अनाजक माप छल। संजय बाँसक मापक झाड़ि जौक डेगची लग रखलनि।... | अन्तिम संकेत : सन २०४०क विदेहपुरमे अगिला भोर सरिता विद्यालयक सूचनापटपर तीन नव कागद टाँगलीह—दुरुस्त कएल बेदखली-सूचना, गठबन्धनक...

180 • आश्रयक बाहर [पाठ-विस्तार : 2,299 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे आश्रयक बाहर बिहानसँ पहिने एकटा चटाई उधारल गेल। बाँसक अर्धचन्द्राकार पसली हवा लागिते... | अन्तिम संकेत : रुहानी दुआरक पुरान चाभी लगामे राखि नव पट्टी टाँगलीह—‘सहायता लेल भीतर अबैत लोक, बाहर रहैत...

पर्व 16 • मौसल | उत्तरकाण्ड | अध्याय 181–192

181 • यादवक उत्सव [पाठ-विस्तार : 2,034 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे उत्सवक मैदानपर पहिल हथौड़ी लगिते बाँसक खूँटाक लग राखल पीतलक छोट चक्र लुढ़कि... | अन्तिम

संकेत : उत्सवक पहिल राति पूरा भेला पर सुमित्रा अपन रसीदक दीपकक उजासमे एक बेर फेर पढलीह ।...

182 • मादक दिन [पाठ-विस्तार : 2,287 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४०क विदेहपुरमे उत्सवक मैदानक पाछाँ पीतलक प्याला उलटि गेल आ ओकर किनारसँ पानि माटिमे पसरए... | अन्तिम संकेत : चम्पा अस्पतालक बाहरी फाटकसँ घुरैत दीपक लेल सार्वजनिक शुभकामनाक भीड़ नहि बनौलीह । ओ एक बेर...

183 • स्मारकक ठेका [पाठ-विस्तार : 2,295 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४१क विदेहपुरमे फागुनक भोर छल । घाटक सीढ़ीपर जमल काइ घसैत रामसखी अपन हँसुआक पाछाँ काठक... | अन्तिम संकेत : सरिता विद्यालयक दुआर बन्द कऽ घर पहुँचल तँ अन्हारमे नैराक खाली गिलास देखलीह । आज ओ...

184 • रुहानीक चुनाव [पाठ-विस्तार : 2,254 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४१क विदेहपुरमे घाट-आदर पर्वक चारि दिन बाद आश्रयक ओसारमे रखल पीतरङ्गक मतपेटीक एक कोन उखड़ि... | अन्तिम संकेत : राति शैलजक कम्पनीसँ एक नव लिफाफा पहुँचल । ऊपर 'दानक संशोधित शर्त' लिखल छल । झरना ओकरा...

185 • दानक शर्त [पाठ-विस्तार : 2,054 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४१क विदेहपुरमे बिहानक पहिल घण्टी बजल तँ झरना आश्रयक ओसारमे दूटा लिफाफा अलग-अलग रखलीह । एक... | अन्तिम संकेत : राति आश्रयक बाहरी दुआरपर सूरजक खाली बोतल चाननमे चमकि रहल छल । अमीना बचल भातक डिब्बा...

186 • ताराक भूल [पाठ-विस्तार : 2,049 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन २०४१क विदेहपुरमे भोरे तारा मल्लिक अपन दफ्तरक पुरान अलमारीक ताला खोललीह तँ भीतरसँ सड़ल कागदक... | अन्तिम संकेत : राति बाहाक कात उत्सवक ध्वजाक कपड़ा पानिसँ भीजल नील भऽ गेल छल । तारा मल्लिक घरक...

187 • रसोइक घाटा [पाठ-विस्तार : 2,108 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन् २०४१क विदेहपुरमे भोरक चारि बजे रुखसाना माटिक चूल्हिक राखि कुरेदलीह तँ काल्हिक अधजरल लकड़ीक भीतर... |
अन्तिम संकेत : साँझक हवा आबि गेल तँ गुरमीतक छोट सन्देश आयल —‘भोजन बाँटल गेल; सभ कामगारक समय दर्ज;...

188 • औजारक बाजार [पाठ-विस्तार : 2,282 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : भोरक पहिल हथौड़ी पड़िते हरिनारायण शर्माक निहाइ पर रखल पातर लोहामे दूटा स्पष्ट खाँज बनल। भट्टीक... | अन्तिम संकेत : प्राचीन द्वारकाक समुद्रक कात, एहि आधुनिक कालधारासँ पृथक, बलराम एक दिन राजकुलक उत्सवक बाँचल धातुक...

189 • बलरामक दूराइ [पाठ-विस्तार : 2,098 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन द्वारकाक समुद्रक किनार भोरमे एकटा धातुक थारी उलटल पड़ल छल। ओकर भीतरी भागमे काल्हिक भोजक... | अन्तिम संकेत : बलराम बुझि रहल छलाह जे दूर जाएबासँ हुनकर पुरान काजक परिणाम मिटत नहि। कोनो पुत्र,...

190 • कृष्णक अन्त [पाठ-विस्तार : 2,353 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन द्वारकाक समुद्रतटपर भोरक पहिल उजासमे एकटा फाटल पाल बालूमे अटकल छल। कृष्ण ओकर डोरि खोलबाक... | अन्तिम संकेत : राति भेलापर सरिता घर पहुँचलीह। नैराक खाली गिलास खिड़कीक कात छल। ओ गिलास हाथमे लऽ...

191 • सबटा टूटल नहि [पाठ-विस्तार : 2,043 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सन् २०४१क चैतक भोरमे गोमती बेलदार पोखरिक कात गाड़ल बाँसक खूँटा निकालि फेर एक बित्ता पाछाँ... | अन्तिम संकेत : अगिला भोरमे अभिलेखघरक दुआरपर एक नव सूचना टाँगल देखाइत छल —डिजिटल प्रतिक ‘अधिकृत केन्द्रीय स्वामी’ चुनबाक...

192 • नव मालिकक डर [पाठ-विस्तार : 2,331 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : तारा मल्लिक अभिलेखघरक दुआरपर टाँगल नव निविदाक कागद उतारलीह नहि। ओ ओकर नीचाँ अपन कापी रखि... | अन्तिम

संकेत : अगिला भोर लिखित आपत्ति दऽ घुरबाक बाटमे तारा संकेतसँ कहलीह, “तीन प्रति बनलाक बादो तीनू...

पर्व 17 • महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड | अध्याय 193-204

193 • यात्राक घोषणा [पाठ-विस्तार : 2,123 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हस्तिनापुरक राजसभामे, महाभारतक प्राचीन कालमे, परीक्षितक मस्तकपर मुकुट राखल गेल तखन युधिष्ठिरक हाथ काँपल नहि, मुदा... | अन्तिम संकेत : नगर पहुँचलापर तारा अभिलेखघरक सामने पेटी खाली कएलीह। एखन किछु सार्वजनिक प्रति बाँचल छल, मुदा...

194 • द्रौपदीक बाट [पाठ-विस्तार : 2,331 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन महाप्रस्थानक उत्तराभिमुख बाटपर द्रौपदी अपन वस्त्रक फाटल कोना सँ एकटा काँट निकाललीह। महीन धागा काँटमे... | अन्तिम संकेत : युधिष्ठिर आगाँ चलैत रहलाह, आ कुरुर हुनकर पाछाँ बढल। भाईसभ अपन-अपन समय लऽ उठलाह। भीम...

195 • भाइसभक दूरी [पाठ-विस्तार : 2,332 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : प्राचीन महाप्रस्थानक हिमवती बाटपर सहदेवक पएरक नीचाँ छोट पाथर चरमरायल। द्रौपदीकेँ पाछाँ छोड़ि आएल पाँचू भाइ... | अन्तिम संकेत : साँझक धुँधलका मे जावेद परदाकेँ लपेटलनि। कागदक बन्दरक एक हाथ बाहर निकलल छल; ओ भीतर...

196 • फकीराक स्टेशन [पाठ-विस्तार : 2,376 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुर, २०४२। नव स्टेशनक माल-दुआर लग फकीरा अपन छड़ीक नोकसँ फर्शक एकटा उठल पट्टी छूलनि। पहिने... | अन्तिम संकेत : फकीरा अपन छड़ी उठा ठाढ़ भेलाह। ओ सरिताकेँ अपन कागद देखएबाक आग्रह नहि कएलनि; सरितो...

197 • पहिल कोठरी [पाठ-विस्तार : 2,224 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुर, २०४२। सरिता दास चाभीक गुच्छासँ सबसँ पातर चाभी अलग कएलीह। आश्रयक पुरान रसोइक पहिल कोठरीक... |

अन्तिम संकेत : साँझक उजासमे दरबज्जाक ताला छोट चमकल। सरिता चाभी अपन कपडाक झोरामे रखलीह, मुदा सामग्रीक प्राप्ति...

198 • मृतकक फोन [पाठ-विस्तार : 2,246 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुर, २०४२। कबीर मेजपर पुरान सूती रुमाल पसारलनि आ ओकर बीचमे नैराक फोन रखलनि। काँचक एक... | अन्तिम संकेत : पेटिक चाभी अलग सुरक्षित रहल, ओकर प्राप्ति आश्रयक बहीमे। बाहरी खिड़की लग कोनो पतंग पंख...

199 • बिना नामक कथा [पाठ-विस्तार : 2,282 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुर, २०४२। अभिलेख-कक्षक मेजपर एकटा लिफाफा राखल छल। ओकर मुँह गोंदसँ बन्द नहि, सूतक पातर धागासँ... | अन्तिम संकेत : व्यक्ति विदा होएबाक समय लिफाफाक खाली धागा फेर माँगलक। सरिता आश्चर्यसँ पूछलीह, “एहि सूतकै की...

200 • शब्दक अन्तिम जाँच [पाठ-विस्तार : 2,477 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुर, २०४२। पद्मा कागदक चारि पातर पट्टी काटि मेजपर रखलीह। पहिलपर लिखलनि—‘प्रत्यक्ष’; दोसरपर—‘श्रुत’; तेसरपर—‘अनुमान’; चौठपर—‘कल्पना’। रातिक... | अन्तिम संकेत : आशाक डिब्बाक खर-पट्टी, तुलसीक फाटकपर टाँगल हड़तालक कपडा, नसीमाक सिएल जित्द आ श्यामक बाँसक गाँठ—सभ...

201 • सीमातीर्थक विदाइ [पाठ-विस्तार : 2,288 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सीमातीर्थ, २०४२। मधु केवट नावक पुरान पटरा खोलि ओकर नीचाँ अटकल बालू झाड़ि रहल छलीह। पटरा... | अन्तिम संकेत : सीमातीर्थक घरमे पीतलक ताला फेर सन्दूकपर लागल। कर्जक अन्तिम दावा बन्द नहि भेल छल, मुदा...

202 • कबीरक वापसी [पाठ-विस्तार : 2,418 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुर, २०४२। कबीर घरक पुरान अलमारीक नीचला खाना सँ लाल किनारवला रुमाल निकाललनि। कपडाक मोड़मे अटकल...

| अन्तिम संकेत : माय दरबज्जा खोलि कहलीह, “बजारसँ नुन अनबह? काल्हि बिसरि गेलहुँ।” कबीर थैला उठौलनि। रुमाल जेबमे...

203 • साथक जीव [पाठ-विस्तार : 2,206 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हिमालयक उत्तर दिशाक निर्जन बाटपर युधिष्ठिरक पानिपात्र खाली होमए लगल। ओ पात्र उलटि देखलनि; तल्लामे एक... |
अन्तिम संकेत : अन्तिम यात्राक दल नगरक पाठशाला दिस घुरबाक तिथि सोचि रहल छल। विनुक रकमक पुष्टि, मीराक...

204 • पर्वत नहि दरबज्जा [पाठ-विस्तार : 2,351 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुरक खुलल पाठशालाक दरबज्जा भोरमे फेर अटकि गेल। किवाड़क निचुलका भाग बरखाक पुरान पानिसँ फुला गेल... |
अन्तिम संकेत : राति उतरि गेलापर पाठशालाक किवाड़ आधा खुलल रहल, ताकि भीतरक रङक गन्ध बाहरे निकलि सकय।...

पर्व 18 • स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड | अध्याय 205-216

205 • स्वर्गक सूची [पाठ-विस्तार : 2,242 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : स्मारकक पीतलाक पातर पट्टीमे पहिल कील ठोकवाक समय हथौड़ी चूकि गेल। ठन-ठनक बदला लकड़ीक फलकपर एकटा... |
अन्तिम संकेत : नव समितिक बच्ची खर्चक खाता बन्द करैत सरितासँ पुछलक, “जँ काल्हि नव प्रमाण भेटत तँ?”...

206 • उत्तरा आ परीक्षित [पाठ-विस्तार : 2,368 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : खुलल पाठशालाक चौखटपर टाँगल नव कागद रातिक ओससँ मुडि गेल छल। ओकर माथपर बच्चीक हाथसँ लिखल... |
अन्तिम संकेत : किशोर, जे कथापाठमे प्रतिशोधक प्रश्न पुछने छल, तस्तीक पाछाँ नव पन्ना लगा रहल छल। ओ...

207 • जनमेजयक प्रश्न [पाठ-विस्तार : 2,386 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुरक खुलल पाठशालाक मेजपर राखल छोट ध्वनि-यन्त्रसँ अचानक एक स्त्रीक हँसी बजि उठल। कियो ओकर बटन... |

अन्तिम संकेत : पाठशालाक दुआर बन्द करबाक समय ओ किशोरी तख्तीपर काल्हिक प्रश्नक नीचाँ छोटा पाँति जोड़ि देलक—‘जकर...

208 • उग्रश्रवाक श्रोता [पाठ-विस्तार : 2,304 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : चेतन भटक पुरान पोथीक दू पन्ना टेबुलपर पसारल छल। एकटा पन्नाक किनारमे घी-जकाँ पियर दाग, दोसरपर... | अन्तिम संकेत : तारा काल्हिक पाठक लेल खाली आसनसभ गनैत छलीह। अगिला कथा रामक राजदरबारमे लव आ कुशक...

209 • लव कुशक पाठ [पाठ-विस्तार : 2,353 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : फूलमती पमरियाक अँगुरीमे गीतक कापीक कोना अटक गेल छल। ओ कागदक एक पाँति पढ़लीह, फेर नाखुनसँ... | अन्तिम संकेत : दिनक अन्तमे वाल्मीकिक आश्रमक लव आ कुशक खेलक स्मृति गीतक भीतर अपन अलग ठामपर रहि...

210 • भामतीक चारिम सूत्र [पाठ-विस्तार : 2,274 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : विदेहपुरक खुलल पाठशालामे भोरक हवा सँ एकटा पन्नाक कोना बेर-बेर उठैत छल। मृणाल ओकरा दबेबाक लेल... | अन्तिम संकेत : पाठशालाक दुआर बन्द होएबाक पहिने मृणाल चारू कागद फेर गनलीह—पाठ, व्याख्या, आपत्ति, आजुक प्रश्न। ‘तत्तु...

211 • उदयनक शेष तर्क [पाठ-विस्तार : 2,217 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : हमीदा मिरियासीन अपन गीतक बही खोललीह तँ ओकर बीचसँ एकटा पातर कागद फर्शपर खसि पड़ल। कागदपर... | अन्तिम संकेत : हमीदा घर दिस विदा भेलीह तँ बहीक लाल पर्ची फेर बाहर निकालि देखलीह। अपमानकारी उपयोग...

212 • गङ्गेशक कक्षा [पाठ-विस्तार : 2,459 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : पुरान काठक तख्तीपर चूनक धूलि एखनहुँ लगल छल। विदेहपुरक खुलल पाठशालामे भोरहि सँ एक बालिका ओकरा... | अन्तिम संकेत : सरिता जखन विदा होए लगलीह तँ एक मुद्रित दार्शनिक पोथीक प्रस्तावित मुखपृष्ठ देखलीह। माथपर सम्पादकक...

213 • मैथिलीक अपना वाणी [पाठ-विस्तार : 2,290 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : नव पोथीक मुखपृष्ठक नीचाँ सरिता अपन अँगुरी राखि देलीह। स्याही एखन पूरा सुखायल नहि छल; ओ... | अन्तिम संकेत : रातिमे मैथिली छपल पहिल पन्ना खोललीह। हुनकर अपना नामक संग हुनकर दोषक स्वीकृति छपल छल;...

214 • नैराक खाली जगह [पाठ-विस्तार : 2,377 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सरिता पुरान पीतल थारीक कातसँ चिपकल चाउरक एक दाना नोंचि हटा देलीह। थारी भोजनक लेल नहि,... | अन्तिम संकेत : राति सरिता घर घुरलीह। नैराक कापी अपन सन्दूकमे बन्द छल; कबीरक अनपठाओल पत्र हुनकर अपने...

215 • वितरित अभिलेख [पाठ-विस्तार : 2,297 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : गोमती बेलदार पोखरिक कात राखल काठक पटरीपर उज्जर खड्डियासँ एक छोट रेखा खींचलीह। रेखा नापबाक छल,... | अन्तिम संकेत : रातिक पहिल अन्हारमे रमा अलमारीक चाभी पाठशालाक एक युवककें देबाक बदला तीन अलग प्राप्ति-पर्ची पर...

216 • कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [पाठ-विस्तार : 2,299 शब्द]

आरम्भिक दृश्य : सरिता चूल्हाक मुँहमे दूटा सूखल काठी सरकौलीह। आगि एक बेर लाल भेल, फेर राखक नीचाँ लुका... | अन्तिम संकेत : सरिता बचल भात ढँकि देलीह। देगची धरिक धातु गरम छल, तँ ओ पुरान कपड़ाक टुकड़ा...

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७४

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक 'कुरुक्षेत्रम्
अन्तर्मनक' महा-उपन्यासक २१६ अध्यायक
विस्तृत नैरेटोलॉजिकल समालोचना अछि।
अठारह महाभारत-पर्व आ सात रामायण-काण्डक
दोहरी संरचना, भामती, न्यायकुसुमाञ्जलि,
तत्त्वचिन्तामणि आ १५७ समुदाय-वृत्तक
आलोकमे कथा-समय, दृष्टि, आवाज, साक्ष्य,
श्रम, जल आ शोकक कलात्मक परीक्षण अछि।
सम्पादकीय समीक्षा: आशीष अनचिन्हार

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह